मेरा राजस्थान

वर्ष-१८, अंक- ०२, मुम्बई, अप्रैल २०२३ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ५६ मूल्य -१००.०० रूपए प्रति

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

३० मार्च
राजस्थान स्थापना दिवस

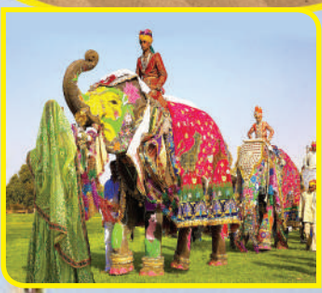

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर मेरा राजस्थान के पाठकों को हार्दिक शुभकामनायें

KLJ GROUP

Total Solution in
Plasticizers & Polymer Compounds

PETROCHEMICALS & POLYMER TRADING | REAL ESTATE DEVELOPMENT

Corporate Office: KLJ House, 8A, Shivaji Marg, Najafgarh Road, New Delhi-110 015
Bharat Tel.: +91 11 41427427/28/29, Email: delhi@kljindia.com

Remove India Name From the Constitution India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

http:// www.merarajasthan.co.in

भारत को 'भारत' ही बोला जाए अभियान

JAIDEEP METALLICS
& Alloys Pvt. Ltd.

- Sizes : 8mm to 32mm
- Grades : Fe 500, Fe 500D, Fe 550, Fe 550D, 600 & CRS
- CRS for Corrosion Resistance
- Approvals : ISI (IS 1786), HSE (Thermex)
- High Strength QST bars
- Better elongation for earthquake resistance
- Better ductility for easy bendability

106/107/108, 1st Floor, Neha Ind. Estate, Behind CCI Ltd., Off Dattapada Road, Borivali (E), Mumbai - 400 066.
Phone : +91 22 4203 2000 Fax: +91 22 4203 2020
E-mail : ajay@moirantmt.com | marketing@moirantmt.com

शिक्षा की देवी अहिल्या नगरी इन्दौर से बुलावा आया है

चलें इंदौर **चलें इंदौर** **चलें इंदौर**

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

जय भारत! **जय भारत!** **जय भारत!**

राष्ट्रभाव भरा आमंत्रण

जय भारत!

हम सभी भारतीय किसी न किसी रूप में राष्ट्र की सेवा जरूर करते हैं क्योंकि हम सभी को राष्ट्र 'भारत' ने कुछ तो कुछ यानी सब कुछ दिया भी है, इसलिए हम सभी 'भारत माता की जय' का उद्घोष भी करते हैं।

विश्वस्तरीय संस्थान भारत सरकार द्वारा पंजीकृत 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' भी भारत और भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने हेतु कटिबद्ध है, इसी श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए भारत का एक राज्य मध्य प्रदेश की आर्थिक राजधानी शिक्षा की देवी अहिल्या नगरी इंदौर में PRINCIPAL CONCLAVE का आयोजन

1 अप्रैल 2023 वार शनिवार समय अपराह्न 3:00 बजे

स्कूल ऑफ कंप्यूटर साइंस, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर,मध्य प्रदेश, भारत

के प्रांगण में किया गया है, सभागार में इंदौर के शासकीय/अशासकीय महाविद्यालय, प्राचार्य/ संचालक गणों की उपस्थिति रहेगी, जिनसे हमें मार्गदर्शन मिलेगा कि हमारे देश का नाम केवल 'भारत' रहे और भारतीय संस्कृति से युवा ओतप्रोत रहे।

आयोजित प्राचार्य कॉन्क्लेव में भारत के कई क्षेत्रों से गणमान्य भारतीयों की उपस्थिति के साथ प्रमुख अतिथि स्वरूप देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर की कुलपति **डॉ. रेणु जैन** का मार्गदर्शन भी हम सबको कार्यक्रम में मिलेगा।

निवेदन यह है कि आपके संस्थान से चंद मनोनीत सदस्यों की उपस्थिति मिलेगी तो भविष्य में 'भारत व भारतीय संस्कृति बढ़ावा' अभियान सशक्त बनेगा, ऐसा हमें विश्वास है। जय भारत!

निवेदक

राष्ट्रीय अध्यक्ष
विजय कुमार जैन, मुंबई
मो. 9322307908

राष्ट्रीय महामंत्री
शोभा सादानी, कोलकाता
मो. 8910628944

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष
डॉ. गोविंद माहेश्वरी, कोटा
मो. 9414183919

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
निशा लड्ढा, कोलकाता
मो. 9830224300

प्रो. राजीव दिक्षित, इंदौर
मो. 9827346398

हसमुख जैन गांधी, इंदौर
मो. 9302103513

डॉ. संगीता विनायका, इंदौर
मो. 9827248979

राधेश्याम शर्मा, इंदौर
मो. 9303264032

डॉ अनुपम जैन, इंदौर
मो. 9589883822

शंकरलाल शर्मा पलोड, इंदौर
मो. 9826040947

उन्नित झांझरी, इंदौर
मो. 8989676737

राष्ट्रीय कार्यालय : बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400059
फोन : 022-28509999, ईमेल : mainbharathunfoundation@gmail.com,
वेबसाइट : www.mainbharathun.co.in

◆ कोलकाता कार्यालय ◆
ऑफिस नं. 77, सदासुख कटरा, दूसरा तल्ला,
201/बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, भारत-700007 फोन : 033-48039531

◆ दिल्ली कार्यालय ◆
U-74, शॉप नं. 17, तिरूपती बिल्डींग, गणेश कचोरी के पास, विकास मार्ग, शकरपुर,
लक्ष्मी नगर मेट्रो स्टेशन गेट नं. 2 के पास, दिल्ली, भारत-110092 फोन: 011-41556214

अप्रैल २०२३ के अंक की झलकियाँ

१२ ३० मार्च १९४९ का सूर्योदय लेकर...

१६ राजस्थानी संस्कृति री खास ओळख करावती पागड़ी

२४ हनुमान जयंती

२० ग्रामीण लोक कलाओं से परिचित...

२२ महावीर जन्म कल्याणक पर्व

और भी बहुत कुछ....

'मेरा राजस्थान' मई २०२३ री विशेषतावां

राजसमंद में स्थित मोलेला

राजस्थान के राजसमंद ज़िले में उदयपुर से क़रीब ५० कि.मी. दूर स्थित है एक गांव है 'मोलेला'। पहली नज़र में गांव में ऐसी कोई खास बात नज़र नहीं आती है लेकिन ग़ौर से देखने पर पता चलता है कि ये गांव कोई मामूली गांव नहीं है और ये देश में टेराकोट की परंपरा का गढ़ रहा है।

'मोलेला' में टेराकोटे का काम पारंपरिक रुप से कुम्हार समुदाय करता है जिनके अमूमन नाम प्रजापत या प्रजापति होते हैं। कुम्हार समुदाय का विश्वास है कि ये कला उनके पुरखों को भगवान देवनारायण ने सिखाई थी जो नैत्रहीन थे। माना जाता है कि भगवान देवनारायण ने, इनके पुरखे के सपने में आकर उन्हें ये कला सिखाई थी। और भी बहुत कुछ है 'मोलेला' में पढें 'मेरा राजस्थान' के अगले अंक में...

AGARWAL

Oak

With Great Homes, Comes Great Health!

2 BHK

CALL

900 400 2018

3 BHK

AGARWAL GROUP OF COMPANIES

Where you matter

50 YEARS PROJECT+

"Agarwal Oak" has been registered by Homewell Realty LLP ("the Promoter") via MahaRERA registration no. P51800027705, the details of which are available on the website https://maharera.maharashtra.gov.in under registered projects.

वर्ष-१८, अंक २, अप्रैल २०२३

१२ अंक वार्षिक १११११/-

सम्पादक : बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए
का आव्हान करने वाला भारत माँ का लाडला

उपसम्पादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)

'मेरा राजस्थान' के संरक्षक
स्व. रामनारायण घ. सराफ, मुम्बई

सम्पर्क करें...
सम्पादकीय कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राईवेट लिमिटेड
की शानदार प्रस्तुति

मेरा राजस्थान
राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

बी- २१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व,
मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - ४०० ०५९.
दूरध्वनि - ०२२-२८५० ९९९९

भ्रमणध्वनिः 9322307908

अणुडाकः mailgaylordgroup@gmail.com
बिजयजैन@मैंभारतहूँ.भारत
अन्तरताना : http//: www.merarajasthan.co.in
http//:www.bijayjain.com

https://www.facebook.com/merarajasthanpatrika/
https://twitter.com/mera_rajasthan
https://www.instagram.com/merarajasthan01/

कृपया विज्ञापन बिल की राशि का भुगतान
नीचे दिये गए बैंकों में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

सम्पादकीय ....

(३० मार्च) राजस्थान स्थापना दिवस पर विशेष त्यौहारों की झप्पी लगी है राजस्थानी परिवारों में

अभी-अभी हमने ढप बजाते 'होली' का रंगारंग त्यौहार मनाया। ईसर बाई की पूजा करते 'गणगौर' का पावन पर्व मनाया। 'राजस्थान स्थापना दिवस' भी पर्व के रूप में मनाने का सौभाग्य राजस्थानी परिवारों ने पाया, इस पर्व पर दुनिया को बताया कि हम राजस्थानी पर्व के साथ कर्मठता का त्यौहार भी पूरे वर्ष मनाते हैं, कार्य करते रहते हैं, स्वयं के साथ अपनी पूजनीय माटी व देश भारत की शौर्यता का बखान करना भी नहीं भूलते, चारों दिशाओं को बताते हैं।

हम राजस्थानियों में है वो बल कि फिज़ाओं का भी रुख बदलने का अरमान रखते हैं। बहुत ही जल्द हम 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व मनाएंगे, हनुमान जयंति व परशुराम जयंति पर्व भी तो हमारे ही है क्योंकि हनुमान जी या परशुरामजी हमारे पूजनीय जननायक जो रहे हैं, उनके बताए राह पर तो आज भी हम चलने का प्रयास करते रहते हैं।

आज चारों दिशाओं में रहने वाले राजस्थानी परिवारों के कई-कई व्यापारी योद्धाओं ने समाज व राष्ट्र के सेवाओं के परचम गाडे हैं, शिक्षालय हो या औषधालय, मंदिर हो या कोई भी हो दर्शन स्थल हर दिशा में हम सभी राजस्थानी भाईयों ने या यह कहें बहनों ने भी अपनी सोच व कार्य के परचम लहराये हैं, तभी तो हम गर्व से कहते हैं कि हम उस माटी के पूत हैं जहाँ महाराणा प्रताप जैसे-शूरवीरों ने जन्म लिया तो मिराबाई की भक्ति के गीत आज भी गाये जाते हैं। शक्ति हो या भक्ति 'राजस्थान' की माटी के सपूतों की मिसाल विश्व के अन्य देशों में कम ही देखने को मिलती है।

मेरे प्रिय राजस्थानी भाई-बहनों से मैं निवेदन करता हूँ कि जिस प्रकार राजस्थानी वीर-वीरांगनाओं ने अपनी शक्ति-भक्ति राजस्थान की माटी को शौर्यता का नाम दिया, उसी प्रकार आज भारत माँ भी कहती है ऐ वीर माटी के सपूत! जिस प्रकार कूरजां विदेशों से आकर हमारी माटी में चहचहाती है उसी प्रकार हमारे प्यारे पक्षी जैसे कबूतर या तोता विदेशों में जाकर कहे कि हम भारतवासी हैं, भारत माँ के सूपत हैं, भारत माँ की जय बोलते हैं, 'भारत' नाम अति प्राचीनतम है, हम तो भारत को 'भारत' ही बोलेगें, अंग्रेजों के द्वारा थोपा गया नाम INDIA को भारत भूमि से विलुप्त करवा कर रहेगें तो ही हम गुलामी की मानसिकता से दूर हो सकेगें और माँ भारती को पूर्णतया स्वतंत्रता दिला पायेंगे तभी तो विश्व को माँ भारती कह सकेगी 'मैं भारत हूँ'।

१ अप्रैल २०२३ को हम भारत का ही एक राज्य मध्यप्रदेश की आर्थिक राजधानी शिक्षा की देवी अहिल्या नगरी इंदौर में Principal Conclave का आयोजन कर रहे हैं, मानस यह है कि उपस्थित प्राचार्यों से निवेदन कर सकूं कि युवा पिढी यानी अपने छात्रों को बताएं कि अपने भारत में क्या है 'भारत' नाम में ही कितना जोश भरा है जो कि INDIA नाम में नहीं, हम INDIA बोले ही क्यों? भारत को 'भारत' ही बोला जाए अभियान की सफलता में यह बढ़ता कदम सफलता जरूर दिलाएगा ऐसा मुझे विश्वास है, एक दिन माँ भारती विश्व को बता सकेगी 'मैं भारत हूँ'।

जय-जय राजस्थान, जय-जय राजस्थानी!

जय भारत!
जय भारतीय संस्कृति!

पूर्ण राष्ट्र की परिभाषा
भाव-भूमि और भाषा

आपका अपना
- बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत कहा जाए का
आव्हान करने वाला एक भारतीय
मो.९३२२३०७९०८

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर सभी
राजस्थान वासियों को हार्दिक शुभकामनायें

Dilip Kumar Manoj Kumar Lunia
(Taranagar)
Mob. : 9831074626

RANAKPUR PILE PVT.LTD.

Siddharth Lunia
Mob. : 9331294325

STARCITY PROJECTS

Civil Contractor & Engineers

A Trusted Name for Making Your Dream Home

P 35, Suite No.304, India Exchange Place,
Kolkata, West Bengal, Bharat-700001

Res. : 6th Floor, 26 Sanatan Mistry Lane, (Oriyapara),
Howrah, West Bengal, Bharat - 711106

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

12 SUCCESSFUL YEARS

VEG. JAIN

South AFRICA 12N | 13D

Summer '23

Rs. 2,50,000

Per Person | Incl. Air Fare, Visa, 5% GST & TCS

Luxurious Hotel Stay

01 Night PRETORIA
The Maslow Time Square
5 Star Hotel

02 Night SUN CITY
The Palace Of The Lost City
5 Star Hotel

04 Night MOSSEL BAY
Diaz Hotel & Resort
4 Star Hotel

02 Night AQUILA
The Aquila Game Reserve
4 Star Hotel

03 Night CAPE TOWN
Hotel Double Tree By Hilton
4 Star Hotel

100% Veg. & Jain

All Veg. & Jain meals made by our own Rajasthani Chef

Warm Water & all other arrangements will be done for your Rituals

Finance Available

SanKash
A REASON TO GO!

ZERO
COST EMI
INTEREST
DOWN PAYMENT

Travel Now Pay Later

Fixed Departure Dates **2023**

Mar	: 18
Apr	: 01,15,17,29
May	: 01,11,15,27,29
Jun	: 10,12,24
Jul	: 08,22

TEJAS SHAH
9930993825 7977628030

POORVA HOLIDAYS
THE NEW CHOICE OF TRAVEL

Sales Team : Jeet Kanani : 98772 28819 ✦ Ajinkya Deo : 96534 90528

Shop No.23, 29 & 36, Yudhistir Bldg, Opp. N.L.Garden, Dahisar (E), Mumbai - 400068 022-40031840, 7021884895

दक्षिण अफ्रीका पर्यटन की

रिकॉर्ड तोड़ बुकिंग

की सफलता के बाद

गुजराती, कच्छी तथा राजस्थानी जैन समाज का लोकप्रिय और प्रतिष्ठीत पर्यटन संगठन

POORVA HOLIDAYS

THE NEW CHOICE OF TRAVEL

प्रस्तुत करता है

The Most Premium USA

Tour With & Without Orlando

4 Option Of Package

- 21N I 22D : Full USA With Orlando
- 18N I 19D : Full USA Without Orlando
- Only West Coast
- Only East Coast

Fixed Departure Dates

- Without Orlando
  May: 05, June: 16, July: 27
- With Orlando
  May: 26, July: 06

Stay I Place I Hotel

- 3N I San Francisco
  The Westin San Francisco Airport
- 1N I Lake Tahoe
  Hard Rock Hotel & Casino Lake Tahoe
- 1N I Mammoth Lakes
  Mammoth Mountain Inn
- 3N I Las Vegas
  Paris - Las Vegas
- 3N I Los Angeles (सिर्फ हमारे साथ)
  Sheraton Gateway Los Angeles Hotel
- 2N I Niagara Falls
  Holiday Inn Niagara Fall
- 1N I Harrisburg
  Crowne Plaza Harrisburg Hershey
- 1N I Washington DC
  Sheraton Reston
- 3N I New York
  Millennium Times Square

पूर्वा हॉलिडेज की प्रमुख विशेषताएँ

15 सालों के अनुभवी पर्यटन प्रबन्धकों के साथ
वरिष्ठ नागरिकों के लिए विशेष सुविधाएँ
Without Orlando का विकल्प देने वाला
भारत का एक मात्र पर्यटन संगठन

अमेरिका मे भी शुद्ध शाकाहारी व जैन भोजन की
व्यवस्था हमारे राजस्थानी महाराज के द्वारा
15 सालों के अनुभवी पर्यटन प्रबन्धकों का मार्गदर्शन

संपूर्ण पर्यटन में गर्म पानी तथा अन्य उपवास की व्यवस्था
तिथि के दिनों में की जायेगी

Founder TEJAS SHAH ✆ 9930993825 ✆ 7977628030

Shop No. 23, 29 & 36, Yudhistir Bldg, Opp. N.L.Garden, Dahisar (E), Mumbai - 400068 ✆ 022-40031840, 7021884895

12 SUCCESSFUL YEARS

VEG. JAIN

Spiti valley

9N | 10D
Rs.99,999
Per Person

11N | 12D
Rs.1,24,999
Per Person
With Chandratal Lake & Manali

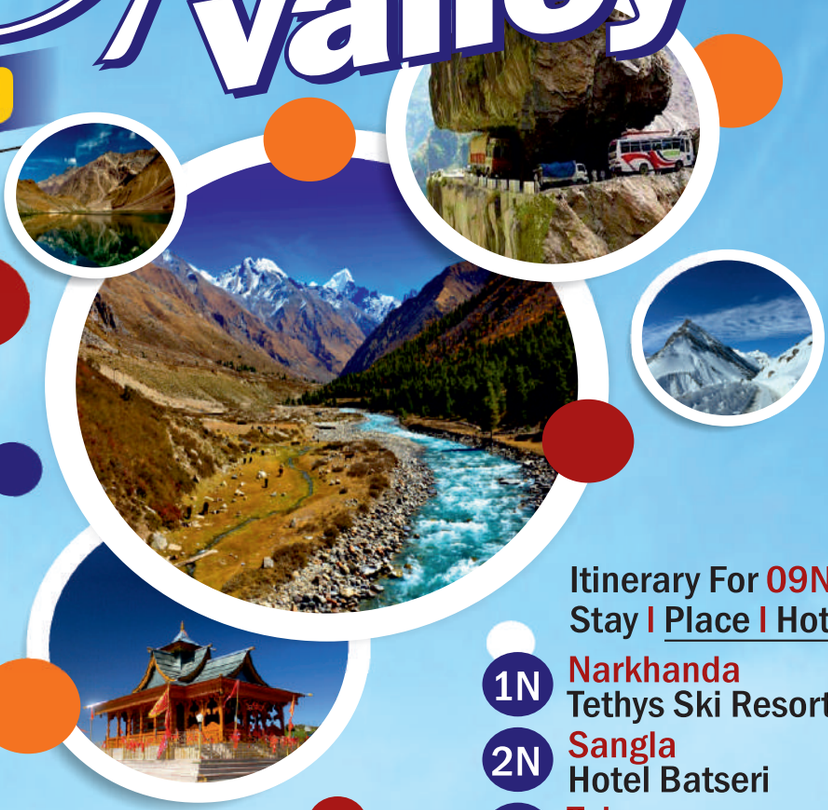

2023 Fixed Departure Date

Apr : 29
May : 10,21
Jun : 01,12,25

Warm Water & all other arrangements will be done for your Rituals

We serve all 100% Veg. & Jain Meals made by our own Rajasthani Chef

Travel Now.. Pay Later

SanKash A REASON TO GO!

Itinerary For 09N | 10D
Stay | Place | Hotel

- 1N Narkhanda — Tethys Ski Resort
- 2N Sangla — Hotel Batseri
- 1N Tabo — Hotel Maitreya Regency
- 2N Kaza — Hotel Grand Dewachen
- 1N Kalpa — Hotel Kalpa
- 2N Theog — Hotel De Exotica Crest

The prestigious Tour Company for Gujarati, Kutchi & Rajasthani Jain Tourists

POORVA HOLIDAYS

THE NEW CHOICE OF TRAVEL

Founder TEJAS SHAH ✆ 9930993825 ✆ 7977628030

Sales Team : Jeet Kanani ✆ 98772 28819 • Ajinkya Deo ✆ 96534 90528 • Kekin Heniya ✆ 95942 00634

Shop No. 23, 29 & 36, Yudhistir Bldg, Opp. N.L.Garden, Dahisar (E), Mumbai - 400068 ✆ 022-40031840, 7021884895

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर मेरा राजस्थान के पाठकों को हार्दिक शुभकामनायें

DISCIPLINE CHARACTER EDUCATION

SESOMU SCHOOL

An English Medium CBSE Co-Educational Day-Cum Residential Senior Secondary School with Science & Commerce Streams

N-H- 11, Sri Dungargarh -331803, Dist. Bikaner, Rajasthan Tel.: 01565-223025, 224330 Mob. 9413361144, 9462891822

Website: www.sesomu.org; e-mail: sesomuappo@gmail.com

Separate Hostel Boys & Girls

Educational Tour

Games and Sports

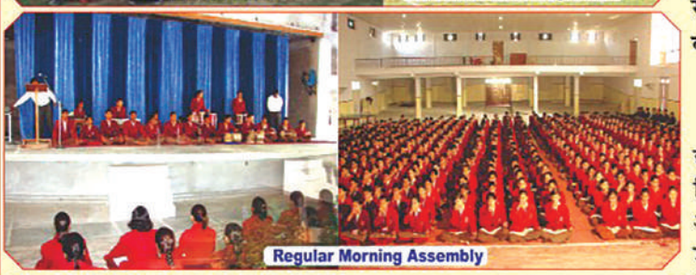

Regular Morning Assembly

Swimming Pool

Digital Interactive Classes

"बच्चों के सुदृढ़ भविष्य के लिए – सेसोमूं।"

बच्चों के गुणों, आदतों एवं स्वभाव का विकास जैसा हॉस्टल में रहकर हो सकता है, वैसा एक औसत परिवार में होना संभव नहीं है। हॉस्टल में विभिन्न प्रकार के अनुशासन जैसे समय-नियोजन, खान-पान अनुशासन, व्यावहारिक अनुशासन आदि का बच्चे में समावेश होता है। हॉस्टल में नियमित खेल-कूद व व्यायाम, साफ-सफाई के प्रति जागरुकता, सहपाठियों के साथ मिलकर रहने-पढ़ने की आदत, एक-दूसरे के प्रति सहयोग की भावना, अपना काम स्वयं करने की आदत, अपनी वस्तुओं की साज-संभाल, समानता का भाव तथा ऐसे ही अनेक गुण विकसित होते हैं। बच्चों में आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता एवं रचनात्मक दृष्टिकोण का विकास होता है। इन गुणों के साथ-साथ बच्चे में भावी जीवन की कठिनाइयों एवं समस्यओं का सामना करने की क्षमता विकसित होती है। हर बच्चा अपने मां-बाप का प्यारा होता है। लाड़-प्यार को बच्चे के सर्वांगीण विकास में बाधा न बनने दें। बच्चे के भविष्य के प्रति जागरूक बनें। बच्चों में उपरोक्त गुणों का समावेश व सुदृढ़ व्यक्तित्व विकास तथा सांस्कृतिक परिवेश हेतु सेसोमूं में समुचित वातावरण प्रदान किया जाता है।

मुख्य आकर्षण

छात्रावासों में एयर कुल्ड डोरमेट्री एवं कमरे, विभिन्न खेलों के मैदान, विशाल ऑडिटोरियाम, इंडोर स्वीमिंग पूल, डिजीटल क्लास रूम, अटल टिकरिंग लैब (रोबोटिक लेब), सभी विषयों की प्रयोगशालाएं, डांस व म्यूजिक रूम, पुस्तकालय, डेयरी एवं फार्म हाउस, शाकाहारी मैस आदि सुविधाओं से युक्त।

Atal Tinkering Lab

३० मार्च १९४९ का सूर्योदय लेकर आया एक नया सवेरा

राजस्थान यानि कि राजपूतों का स्थान, देश के विकास में राजस्थान और राजस्थानियों का अमूल्य योगदान रहा है। चाहे वह उद्योग धन्धे के क्षेत्र में हो या साहित्य व सांस्कृतिक विकास के क्षेत्र में। जाहिर तौर पर राजस्थान की कुछ खूबियाँ है, अपनी इन्हीं खूबियों के कारण ही हवेलियों का यह प्रदेश पुरे दुनिया में आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

(३० मार्च) राजस्थान दिवस के उपलक्ष्य में राजस्थान की इन्ही खूबियों पर एक बार फिर से प्रकाश डालने की कोशिश में 'मेरा राजस्थान' पत्रिका परिवार द्वारा प्रस्तुत राजस्थान परम्पराओं का संक्षिप्त विवरण प्रबुद्ध पाठकों के हाथों में प्रस्तुत:

नई किरण

३० मार्च १९४९ का सूर्योदय लेकर आया एक नया सवेरा, जब भारत के मानचित्र पर राजस्थान राज्य का उदय हुआ। भारत की स्वतंत्रता के बाद देशी राज्यों के विलय और उनकी व्यवस्था करने की समस्या समाधान चाहती थी। ५ जुलाई १९४७ को सरदार वल्लभ भाई पटेल ने रियासती विभाग का कार्यभार संभाला। राजाओं के प्रति उनकी सदाशयता मित्रभाव तथा सम्मानजनक व्यवहार ने राजाओं को प्रभावित किया। सरदार पटेल ने अपने विश्वस्त साथियों के सहयोग व परामर्श से सर्वप्रथम छोटे राज्यों की ओर ध्यान दिया, उन्होंने अलवर, भरतपुर, धौलपुर व करौली राज्यों को मिलाकर 'मत्स्य संघ' के नाम से पहला राज्य गठित किया, जिसका उद्घाटन १८ मार्च १९४८ को केंद्रीय खान मंत्री एन.वी. गाडगिल ने किया। महाराजा धौलपुर उदयभान सिंह राजप्रमुख तथा अलवर के शोभाराम प्रधानमंत्री बनाए गए। एकीकरण के दूसरे चरण में २५ मार्च १९४८ को कोटा में दूसरे संघ का निर्माण हुआ। उदयपुर महाराणा ने भी संघ में शामिल होने पर सहमति दे दी। १८ अप्रैल १९४८ को उदयपुर में संयुक्त राजस्थान संघ का उद्घाटन भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरु ने किया, इस संघ में उदयपुर के साथ कोटा, बूंदी, झालावाड़, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, शाहपुरा व टोंक मिलाए गए, इस संघ के राजप्रमुख मेवाड़ के महाराणा भोपालसिंह तथा प्रधानमंत्री माणिक्य लाल वर्मा बनाए गए। १९ जुलाई १९४८ को लावा चीफ-शिप जयपुर राज्य में तथा कुशलगढ़ चीफ-शिप बांसवाड़ा राज्य का अंग होने से राजस्थान में विलीन कर दिया गया, इस समय तक तीन बड़ी रियासतों-जयपुर, जोधपुर व बीकानेर के अलावा लगभग सभी राज्य एकता की डोर में बांध लिये गए थे। जून १९४८ में इन सभी रियासतों को कांग्रेस ने संगठित होकर राजस्थान प्रदेश कांग्रेस का गठन किया, जिसके प्रथम अध्यक्ष गोकुलभाई भट्ट निर्वाचित हुए। १९४८ में जयपुर में हुए अ. भा. कांग्रेस के अधिवेशन में सरदार पटेल ने जयपुर, जोधपुर व बीकानेर के नेताओं तथा अन्य नेताओं से वृहद राजस्थान के निर्माण के संबंध में वार्ता कर उन्हें विश्वास में लिया। राजाओं से भी अलग-अलग स्तर पर वार्ता कर, उन्हें तैयार किया गया। केंद्र शासित जैसलमेर को भी राजस्थान में विलय का निर्णय कर लिया गया। उदयपुर के संघ में शामिल हो जाने से जयपुर, जोधपुर और बीकानेर के विलय का मार्ग प्रशस्त हो गया। इन रियासतों के विलय के साथ उदयपुर के महाराणा को उनके सम्मान के अनुकूल महाराज प्रमुख तथा जयपुर महाराजा को राजप्रमुख तथा कोटा महाराज को उप राजप्रमुख बनाया गया। राजाओं के प्रिवीयर्स भी राज्य की आय के अनुरुप निश्चित किए गए। राजाओं के साथ उनकी निजी संपत्ति के निर्धारण के साथ संधि की गई। ३० मार्च १९४९ (नव संवत्सर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा २००६) को रेवती नक्षत्र, इन्द्र योग में प्रात: १० बज कर ४० मिनट पर भारत के उप प्रधानमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने जयपुर के राजप्रसाद के ऐतिहासिक दरबारे-आम में वृहद राजस्थान का उद्घाटन किया तथा राजप्रमुख पद के लिए महाराजा जयपुर सवाई मानसिंह को शपथ दिलाई। राजप्रमुख ने कोटा के महाराव को उप राजप्रमुख पद तथा पं. हीरालाल शास्त्री को प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलाई।

उद्यमशीलता

कुरजा ए म्हारा भंवर मिला दीजे रे..

हर बार सर्दियां लगते ही प्रवासी पक्षी 'कुरजा' जब प्रदेश के धोरों पर आती हैं तो विरह वेदना झेल रही स्त्री यही गीत गाती है। परदेश कमाने गए इन पूतों ने आज अपनी मेहनत और उद्यमशीलता से देश-दुनिया में यह साबित किया है कि प्रकृति जहां दिल खोल कर जहॉ बसती हो, वहां के वाशिंदों को भी उद्यमशीलता और मेहनत संपन्न बना सकती है, इसीलिए चुरु से उठे एक शख्स में लक्ष्मी ने निवास कर लिया। मारवाड़ी मित्तल ने दुनियाँ के अमीरों में जगह बनाई, जबकि दूसरी तरफ जमनालाल बजाज को गांधी जी अपना पांचवां बेटा मानते थे। आज 'बजाज' दुपहिया वाहन बनाने वाली **शेष पृष्ठ १३ पर...**

पृष्ठ १२ से... कंपनियों में दुनिया में अव्वल है। बिड़ला, बांगड़, डालमिया, मोदी, जैन वगैरह कुछ ऐसे नाम है जो दुनिया में किसी परिचय के मोहताज नहीं। मारवाड़ी उद्योगपतियों को लेकर अगर आप सोचते हैं कि वे गुवाहाटी, चेन्नई, बैंगलोर, हैदराबाद, नेपाल या महाराष्ट्र तक देश की चारों दिशाओं में फैले हैं तो आपको गलतफहमी है। केन्या, दक्षिण अफ्रीका, दुबई, अमेरिका, सिंगापुर और यूरोप का रुख कीजिए। 'मारवाड़ी' व्यवसायी आपको दुनिया के हर कोने में मिलेंगे और हर जगह उन्होंने अपनी उद्यमशीलता से दौलत तो कमाई ही है अपनी मृदुभाषिता और व्यवहार से दोस्त भी कमाए हैं। 'सेबी' के पूर्व अध्यक्ष के अनुसार देश का लगभग एक तिहाई पैसा इन मारवाड़ी उद्यमियों की जेब में है और वह दिन दूर नहीं जब दुनिया की दौलत का बड़ा हिस्सा इन्हीं की जेब में होगा तब राजस्थान को 'धनीस्तान' के खिताब से सम्मानित किया जायेगा।

रत्न, ज्वैलरी व हस्तशिल्प

हां सा म्हारी रुणक-झुणक पायल बाजे सा...

'घूमर' की इन मशहूर पंक्तियों में औरतों की प्यारी पायल की आवाज समाहित रहती है तो फिर इस पायल को गढ़ने वाले कारीगरों को कैसे भूलाया जा सकता है। सुन्दर गहने गढ़ने में प्रदेश के जौहरियों का कोई सानी नहीं है, अकेले जयपुर से जहां पिछले बरस १२०० करोड़ रुपयों से भी ज्यादा के गहने निर्यात हुए तो जोधपुर से इतनी ही कीमत का हस्तनिर्मित फर्नीचर विदेश भी गया।

राजस्थान कारीगरों के काम को पूरी दुनिया इज्जत से देखती है, गहने या फर्नीचर ही राजस्थान के कारीगरों को अंतर्राष्ट्रीय मानचित्र पर नहीं लाते बल्कि यहां की ब्लू पॉटरी, लोक चित्रकला, बंधेज, साफों, जोधपुरी कोट, हस्तशिल्प, चांदी के काम,

दरियों-कालीनों, जूतियों, ब्लॉक प्रिंटिंग, कढ़ाई और मीनाकारी की भी दुनिया दीवानी है। 'दुनियाँ के आधे क्रिकेटर जोधपुरी मोजड़ी पहन चुके हैं।' 'बंधेज के विशाल मात्रा में ऑर्डर आते हैं जोधपुर के बंधेज कारीगरों द्वारा निर्मित अमेरिका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका, मध्यपूर्व और चीन तक राजस्थानी बंधेज जाते हैं, अब हमारे ज्यादातर विदेशी ग्राहक फर्नीचर को अपने पूरे मकान की डिजाइन के हिसाब से मंगाते हैं'। जोधपुर के लोहे के फर्नीचर, किशनगढ़ी चित्रों और जयपुरी गहनों के दीवाने दुनिया भर में मौजूद हैं।

दर्शनिय: केसरिया बालम आवो नी पधारो म्हारे देश...

बाहर से आने वाले सैलानियों के लिए 'भारत' आने का सबसे बड़ा आकर्षण 'राजस्थान' ही होता है, यही कारण है कि 'भारत' आने वाला हर तीसरा विदेशी पर्यटक प्रदेश का रुख जरुर करता है।

शेष पृष्ठ १४ पर...

सोने री धरती जठै चांदी रो आसमान
रंगरंगीलो रस भरियो म्हारो प्यारो राजस्थान।
राजस्थान दिवस पर हार्दिक बधाई

Sajan Kumar Dokania
Mob: 9324481239

Sajan Kumar Sunil Kumar

Jay Hind Building No. 1/A, 3 Floor,
Block No- 4, Bhuleshawar, Mumbai,
Maharashtra, Bharat- 400002 Ph: 22088692
Email: annapurnasarees2gmail.com

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर सभी राजस्थान वासियों को हार्दिक शुभकामनायें

Kailash Kejriwal

4th Floor, Sham Sadan,
Above Apna Sahakari Bank, Link Road,
Malad West, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400064

पृष्ठ १३ से... २००७ में देश में आने वाले विदेशी सैलानियों में से हरेक चौथा सैलानी राजस्थान आया, आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इंग्लैंड में बीते दिनों आयोजित विश्व पर्यटन मेले में ज्यादातर सैलानियों ने ताजमहल को राजस्थान में बताया। पर्यटन विभाग के सहायक निर्देशक बताते हैं कि आम हो या खास, हर तरह का सैलानी यहां के रंगों, शिल्प, स्थापत्य, महलों, हवेलियों, धोरों, झीलों और जानवरों को देखने जरुर आता है, यहां एक तरफ जहां लिज हर्ले ब्याह रचाती हैं तो दूसरी तरफ पुष्कर के घाट पर अमरीकी बाला कोलीना कालबेलिया नृत्य भी करती हैं।

'पैलेस ऑन व्हील्स' के महंगे टिकट एडवांस में बिकते हैं, वहीं लग्जरी ऑन व्हील्स भी यहाँ है'। पुष्कर समारोह, हाथी समारोह, मरु महोत्सव और

पैलेस ऑन व्हील्स

मारवाड़ समारोह अब दुनिया भर में मशहूर हो चुके हैं। विदेशी पर्यटक हमारे प्रदेश को देख कर चकित रह जाते हैं और यही वजह है कि लगभग ७० देशों के पर्यटक राजस्थान प्रदेश में आते हैं और इनकी तादाद हर साल बढ़ती ही जा रही है। व्यापक प्रचार और सरकारी संरक्षण के बावजूद, राजस्थान को अभी भी केरल जितने पर्यटकों की दरकार है, अगर सरकार केरल जैसा प्रचार व संरक्षण प्रदान करे तो स्थिति और बेहतर हो सकती है।

खनिज संपदा : दुबई के एक अमीर जब जोधपुर घूमने आए तो उन्हें पता चला कि उनके महल के बाहर लगा पत्थर राजस्थान से आया है। राष्ट्रपति भवन हो या संसद, राजस्थानी पत्थर के बिना उनकी दीवारें कहाँ बनती हैं। दुनियाँ भर में मशहूर ताजमहल राजस्थानी मकराने के संगमरमर से बना है। तांबा, जस्ता, लाइमस्टोन, सैंटस्टोन, कैमिकल्स वगैरह प्रदेश के सीने से निकल कर दुनिया भर में जाते हैं। स्कॉटलैंड की तेलखोजी कंपनी कैयर्न एनर्जी ने जैसे ही बाड़मेर में तेल खोजा, लंदन स्टॉक एक्सचेंज में उसके शेयर्स के वारे-न्यारे हो गए। राजस्थान को खनिजों का अजायब घर कहा जाता है। जैसलमेर का लाईमस्टोन दुनिया भर में निर्यात होता है। राजस्थान से केमिकल्स भी ज्यादातर निर्यात होते हैं। कैयर्न एनर्जी की तेल खोज के बाद, राजस्थान खनिज संपदा के अंतर्राष्ट्रीय मानचित्र पर नजर आने लगा है। कैयर्न के बाद वेनेजुएला की कम्पनी भी जैसलमेर में गैस की खुदाई में सहयोग कर रही है और प्रदेश के नए कुओं पर दुनिया भर की बड़ी तेल कम्पनियों की नजर गड़ी हुई है।

मालाणी नस्ल के घोड़े

पशुधन

गायां ने चरावती गोरबंद गूंथियो...

कैयर्न एनर्जी की तेल खोज

ऊंट के लिए अभी भी ऊन के टुकड़े, कौड़ियां, शीशे और धागे इकट्ठा कर, मरुस्थल की औरतें गोरबंद गूंथ ही लेती हैं, 'गोरबंद' यानी ऊंटों का गहना। ऊंट यानी मरुस्थल का गहना। चांदनी रात में थार के धोरों में कैमल सवारी की इच्छा दुनिया भर के सैलानी रखते हैं। हालांकि ऊंट के रेवड़ और उनकी तादाद दिन ब दिन घटती जा रही है, मगर ऊंट ही प्रदेश के सच्चे राजदूत हैं और दुनिया भर में प्रदेश की पहचान भी। पशुधन के लिहाज से उत्तरप्रदेश के बाद राजस्थान देश में दूसरे स्थान पर है क्योंकि प्रदेश में साढ़े पांच करोड़ से भी ज्यादा मवेशी इस वक्त मौजूद हैं। राजस्थानी गायों के दूध में कोलेस्ट्रॉल कम होता है। राजस्थानी भेड़ों की ऊन से बने पट्टू-शॉल-दुशाले दुनिया भर में मशहूर हैं। मालाणी नस्ल के घोड़ों की स्वामी भक्ति और क्षमता दुनिया भर में मशहूर है। 'मारवाड़ी घोड़े को अगर प्यार मिल जाए तो वह हवा के भरोसे भी जी लेगा' अपनी अनूठी ताकत के कारण आज अमेरिका और यूरोप में मारवाड़ी या मालाणी नस्ल के घोड़ों के दीवाने बढ़ते जा रहे हैं।

हर साल पुष्कर, नागौर, झालरापाटन और दिलवाड़ा के पशुमेलों में राज्य के स्पंदन और पशुओं से इस प्रदेश के अनूठे जुड़ाव को महसूस करने वाले लाखों विदेशी पर्यटक आते हैं, विदेशियों में हाथी समारोह और पुष्कर समारोह के लोकप्रिय होने के कारण ही पशुओं से इन पर्यटक मेलों का सीधा जुड़ाव है।

राजस्थान विशेष

⇨ उद्योगपतियों की सूची में आज भी शिखर पर राजस्थानी ही हैं। बात लक्ष्मीनिवास मित्तल की हो या फिर बजाज, बिड़ला, बांगड़, मोदी, जैन की, हर जगह राजस्थानियों ने अपनी श्रेष्ठता के झंडे गाढ़े हैं।

⇨ राजस्थान विदेशी सैलानियों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र है, यहाँ पर्यटन नित-नई ऊचाईयों को छू रहा है, यहां की स्थापत्य कला की बात हो या फिर संस्कृति, महल, हवेलियों की, हर कोई एक बार यहां आकर दुबारा आने की इच्छा रखता है।

⇨ फिल्म टाइटैनिक की हीरोइन कैट विस्लेट हों या फिर हॉलीवुड की धड़कन एंजेलिना जोली जैसी विश्वविख्यात सेलेब्रिटीज, अगर राजस्थान से गहने खरीदते हैं तो बाकि लोगों को राजस्थान की ज्वैलरी कितनी आकर्षित करती होगी।

⇨ मारवाड़ी घोड़ों की बात हो या फिर नागौर के तंदुरुस्त और विश्वविख्यात बैलों की, पशुधन में राजस्थान का कभी कोई शानी नहीं रहा तभी तो यहां के पशु मेलों का आकर्षण विदेशियों को भी मरुधरा तक खींच लाता है। ऊंट तो राजस्थान की विशेष पहचान रहा है। **- मे.रा.**

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर सभी राजस्थान वासियों को हार्दिक शुभकामनायें

Surendra Gadia
Mob. :9322224958

Dwarkadas Omprakash
SURENDRAKUMAR AJAYKUMAR & Co.

DEALING IN ALL KINDS OF FABRIC & APPARELS

Jaihind Bldg , 1/A, 3Rd Floor, R No 1A, Bhuleshwar,
Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400 002
Off. 022-66336712 /40055373
Email:- dwarkadas.omprakash@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

सोने री धरती जठै चांदी रो आसमान
रंगरंगीलो रस भरियो म्हारो प्यारो राजस्थान।
राजस्थान दिवस पर हार्दिक बधाई

Narendra Kasat
Mob. : 98201 44850

Ravikant Kasat
Mob. : 9920121210

Lokesh Kasat
Mob. : 9819759666

KASAT PLASTIC

IMPORTER & PROCESSOR
PALSTIC RAW MATERIALS

K-14, Ansa Industrial Estate, Saki-Vihar Road, Sakinaka,
Andheri East, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400072
Tel: 022-28471438/1510 e-mail : kasatplastic@gmail.com

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर सभी राजस्थान वासियों को
हार्दिक शुभकामनायें

Narayan Prasad Gattani
Mob: 9435051333

Dhanshree Tea Industries
Chungibari Tea Estate Teok

MOTHER INDIA
AN ISO ISO 9001:2015 CERTIFIED COMPANY

Purana Titabar, District Jorhat, Assam, Bharat-785632

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर सभी राजस्थान वासियों को हार्दिक शुभकामनायें

Kamal Kishore Asera
Mob. : 9840180240/9176156127

KUNAL FASHIONS

No.10, Bunder Street,
Rukhmani Ramaya Nivas, Ground Floor,
Chennai, Tamilnadu, Bharat-600001
Ph. : 044-42080240

राजस्थानी संस्कृति री खास ओळख करावती पागड़ी

मिनख जीवण री सरसता सारु अनुशासन ज्ञान, परमात्मा री कल्पना अर केई मरजादावां नै निरोगी अर सैयोगी भावना रौ आधार बणायौ। होळै-होळै मिनख आपरै जीवण रा हरेक क्षेत्र में तरक्की करी अर नगर-विकास रै साथै उणरै खाण-पाण, पहनावा आद ई सुधरता गया। रितुवां माथै आधारित धारमिक तिंवारां री पौराणिक मान्यतावां मुजब अपणायोड़ी सांस्कृतिक परंपरावां मिनख रै सामाजिक जीवण रै साथै विकसित हुवण लागी।

पैली सदी (ई.पू.) रा भित्तिचित्रां में पगाड़ियां रौ अंकन मिळै। अजंता अर अेलोरा री गुफावां में खुदियोड़ी मूर्तियां में पगाड़ियां रा सरुआती इतिहास खोज्यौ जाय सकै। शुंगकालीन प्रस्तर मूर्तियां अर कुशाण सूं गुप्त काल तांई रा चित्रां अर हस्तलिखित ग्रंथां में लगभग १३वीं सदी सूं आज तांई जागा-जागा पगड़ियां रौ चित्रण हुयौ है।

मिनिअेचर्स माय पगड़ियां री रंगीन प्रथा अकबरकालीन चित्रां सूं मालूम हुवै। इणसूं पैला रा चित्रां माय धोळी पगड़ियां घणी हुवती। पगड़ियां माय बदळाव आवण रौ खास कारण क्षेत्रीय अर उणरै राजावां रौ प्रभाव रैयौ है। भारतीय वेशभूषा नै अकबर जरुर अपणाई पण भारतीय पगड़ियां माथै मुगलाई सिणगार रौ प्रभाव ई देखियौ जा सकै। मुगलां रा खाण-पाण अर पहनावा रौ प्रभाव अठारा राजावां माथै पड़ियौ अर उणरा दरबारियां ई उणनै अपणाई। राजस्थान री पाग पगाड़ियां क्षेत्रीय प्रभाव अठा री सांस्कृतिक अर सामाजिक मान्यतावां रै कारण हावी रैयी। मारवाड़ में पाग, पागड़ी और पेचा आदि रौ प्रयोग परंपरागत प्रणाली सूं हुवतौ रैयी है।

साफा रौ प्रयोग महाराजा जसवंतसिंह द्वितीय रै समै में मारवाड़ में सरु हुयौ। महाराजा सरदारसिंह अर सर प्रताप साफा रा पेच परिस्कृत करियौ अर उणने सगळा राजस्थान री पिछाण रौ प्रतीक बणायौ। साफौ उच्च वरग में प्रचलित हुयौ जदके 'पोचियौ' या 'फेंटौ' गांवांई परिवेस अर दूजी जातियां री पगड़ी रै रुप में जाणीजण लागौ। राजस्थान में पगड़ी रौ स्थान सबसूं उपर है अर उणरौ महत्व ई घणौ आंकीजियौ है। आपांरी संस्कृति में माथै नै सर्वोत्तम मानीजो है, इण सारु उण पर धारण की जावण वाळी पगड़ी रौ महत्व कम क्यूंकर हुवतौ।

आपांणा कवियां तौ पगड़ी नै ई वीरां री अेकाअेक शोभा मानी है। उणां कायरां नै पगड़ी नीं धारण करण री सीख दीवी है क्यूंके वे पगड़ी रै मान री रक्षा करण जोग नीं है। इणी सारु बांकीदास व्यंग करतां थकां लिखियौ -

मावड़िया सोवै नहीं, मुख मूंछां सिर सूत
जुद्ध निवड़ियां मरियोड़ा सैनिकां री पिछांण
उणारी पागड़ियां रा पेच सूं हुवती

राजस्थान में कोई प्रकार रा रिवाज, परंपरावां अर मर्यादावां पगड़ियां सूं जुड़ियोड़ी है। इणनै कोई व्यक्ति विशेष नीं बणाई। आं अणलिखि परंपरावां नै समाज समै-समै माथै स्वीकार कियौ, अर उणनै आम स्वीकृति मिळती गयी। पगड़ी अठा री संस्कृति में रसी-बसी है। अठै सिगरी (सपरिवार) न्यूतौ देवणौ हुवै तौ उणनै पगड़ीबंध न्यौतौ कैवे, यानि घर में पगड़ी पैरण वाळा सगळा लोग आमंत्रित है।

मारवाड़ में अेक खास प्रकार रौ कर लागतौ। घर में जितरा पगड़ी बांधण वाळा हुवता, उणरै मुजब उणां नै राजकोष में अेक प्रकार रौ **शेष पृष्ठ १८ पर...**

बात पुरानी है। म्हैं समाचार अर कोई लेख रै स्तंभ ढूंढतो थकं अेक साफा अर टोपी रा निरमाता-व्यापारी सूं मिळियौ। वां व्यापार रै बारै में बात करतां थकां म्हनै अेक ब्लैक एंड व्हाइट फोटौ दिखावतां उण फोटौ री खासियत पूछी। फोटौ घणौ पुराणौ हौ अैड़ी लागतौ औ फोटौ आजादी सूं पैली रौ हौ। म्हैं जवाब दियौ, औ फोटौ इत्तौ पुराणौ जद के फोटौ खेंचणौ ही मोटी बात ही। वां कैयौ गौर सूं देखौ। म्हैं फोटौ री खासियत ढूंढण री निजर सूं फोटौ नै देख्यौ तौ फोटो में समूह रुप में बारै सूं पंद्रै लोग हा, चार पांच लोगां री गोद में टाबर ई हा, जिणां री माथै पर पगड़ी ही। म्हैं कैयौ इण फोटौ में छोटा-बड़ा टाबरां अठै तांई के गोद रा टाबरां रै ई साफौ बांध्योड़ौ है। उणां कैयौ हां आ इज खास बात है इण फोटौ में। अेक समै हौ जद संस्कृति अर समाज में सगळा साफा बांधता हा। कोई भी उघाड़ै माथै घर सूं बारै नीं जावतौ। जे कोई उघाड़ै माथै घर सूं बारै निकळ ई जावतो तौ देखण वाळा उणनै देख'र नागौ कैवता। पण आज कोई उघाड़ै माथै घूमै उणनै कोई नागौ नीं कैवै। वे संस्कृति-संस्कारां री बात करतां थकां बतायौ के लोग घर रै आगै बोरड़ी नीं लगावता क्यूंके उणमें अटक'र साफौ जमीं माथै पैरां में पड़ जावै। औ वो जमानौ हौ जद आखिरी याचना रै रुप में आपरी पगड़ी सांम्ही वाळै रै पांव में राखियां पछै उणनै माफ करणौ ई पड़तौ। इणी सारु पगड़ी अनमोल हुवती अर जिकी समाज रै जाति-वर्ग अर ओहदां रै मुजब रंग अर बणावट में धारण करीजती जिकी उणरी जाति अर पद री ओलख करावती। भारत रा लगैटगै सगळां प्रांतां में सगळा धरम रा लोग किणी न किणी रुप में साफो, पगड़ी अर टोपी जरुर धारण करै।

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर सभी
राजस्थान वासियों को हार्दिक शुभकामनायें

D.P. Agarwal

DURATEX
fashion unscripted

ISO 9001:2000 COMPANY

DURATEX SILK MILLS PVT. LTD.

EXCLUSIVE FANCY FABRICS

5A/122, Mittal Ind. Estate, Andheri Kurla Road, Andheri East, Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400059
Tel.: 91-22-28506895 / 5881 / 1576 Fax : 91-22-28505716
Website : duratexindia.com E-mail : info@duratexindia.com
Factory : L-74, K-28, C/4/3 Tarapur Industrial Area, M.I.D.C., Tarapur, Boisar, Bharat - 401501
Tel.: 02525-326636 / 325506 / 260081 / 326848
Tel: fax : 02525-272706

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर सभी राजस्थान वासियों को हार्दिक शुभकामनायें

Namami Shanker Daga
Civil Construction & Interior Decorators
A-32, Mansarovar Apartments, Plot-3,
Sec-5, Dwarka, New Delhi, Bharat-110075
Mob.: 9711406868
e-mail:- nsdaga1950@gmail.com

श्री गणेशाय नमः

सोने री धरती जठै चांदी रो आसमान
रंगरंगीलो रस भरियो म्हारो प्यारो राजस्थान।
राजस्थान दिवस पर हार्दिक बधाई

ईमानदारी ही सफलता की कुन्जी है
Chandgothia Estate Consultants
Shop -9, "Gardenia", Vasant Valley, Film City Road,
Malad East, Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400097
Ph: 022-40032870 / 35012014
e-mail: chandgothiaestate@gmail.com
YOGESH CHANDGOTHIA
Mob. 09820053630
MITESH CHANDGOTHIA
Mob. 09322218602
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

पृष्ठ १६ से... कृषिकर जमा करावणौ पड़तौ। इण कर री वजै सूं केई दफा गांवांई लोग आपरै बेटै ने मोट्यार हुयां ई पगड़ी बंधावता जिण समें उण कर सूं बचियौ जाय सकै।

पाग-पगड़ियां रौ भौगोलिक, ऐतिहासिक अर सांस्कृतिक दीठ सूं राजस्थान रौ खास स्थान है। अठा रौ सांस्कृतिक परिवेश आपरै निजी रुप में घणौ भव्य, निरालौ अर अनूठो है। पगड़ी रै बिना आदमी अधूरौ सो लागै। पगड़ी संपूर्णता रौ प्रतीक, बहादुरी रौ सोपान अर आपांरी रंगभीनी संस्कृति री ओळख है।

इतिहास रा ताना-बाना सूं इणरी परंपरावां प्रतिष्ठित हुई अर धरम रा करमकांडां, संदर्भा माय पगड़ी री आपरी न्यारी मान्यता अर मर्यादा रैयी है। सैकड़ां बरसां सूं जुड़ी आ परंपरा आज ई आपां रै आस-पास बचियोड़ी है। कवियां री लेखनी ई पगड़ियां री परंपरा नै कदैई विजोगण री दीठ सूं देखियौ तौ कदैई केसरिया बाना धारण करियोड़ा सूरमावां रै दृढ संकल्प में उणनै खास स्थान दियौ। सुरंगी पाग अर केसर भीगै वातावरण में उण विजोगण रै विरह नै और घणौ बधा दियौ -

पाग सुरंगी पीव री, सालू त्रिया सुरंग
केसर भीना कुमकुमै, पुसपां भरया पिलंग

पंचरंगी पाग रा संदर्भ में चन्द्रमुखी प्रिया सगळा समरपण रै साथै अेक रंग होवण नै तत्पर रौ न्यौतौ देवै अर उणनै औ ई जतावण री कोसीस करै के बरसात में भीगी पाग सूं टपकतै पाणी नै जद म्हैं देखूंली तौ म्हनै भरोसो हुवैला के थांनै म्हारा सूं सिरै बजारां वाणिया, मुख मूंछां फरकंद।

मारवाड़ में बातां कैवण रौ अेक न्यारी ढंग हुवै जिणमें बात कैवण वाळौ एक सबद- आपरां भावां नै यूं वक्त करै :

चन्द्रमुखी री चूंदड़ी, पिय की पंचरंग पाग
सेजड़ली नै सुण सखी, रह्यौ आज रंग लाग

मारवाड़ री भगत शिरोमणि मीरांबाई भगवान री कसूमल पाग अर उणरा केसरिया जामा बाबत यूं कैयौ है -

कसुमल पाग केसरिया जामा, ऊपर फूल हजारी
मुकट ऊपरे छाग बिराजे, कुंडल की छब न्यारी

प्रेम है -

आज धुराऊ धूंधलौ, मोटी छांटा मेह।
भींजी पाग पधारस्यौ, जद जाणूंली नेह।।

पगड़ी बाबत अेक लोक गीत इण भीत है-

ऐ झटपट बांधी पागड़ी रुणझूणियो ले
ऐ दौड़्या बागां जाय, जाजो मरवो ले

बांकीदास अेक अजीव व्यक्तित्व रौ बखाण हंसा रौ पुट देय'र इण सबदां में कियौ है-

कर कम चाले जीभ इत, सिर पागड़ सिरगंद। चितराम खेंच देवै। बात खतम हुवण साथै छोगा कैवण री रिवाज है जिणमें पगड़ी रौ उल्लेख मिळे-

केई नर सूता केई नर जागै
जागतड़ा री पागड़िया ढोल्यां रै पागै
सूतोड़ा री पागड़ियां जागतड़ा ले भागै
फोरा पतळा रौ दाव नीं लागै

मारवाड़ में रितुवां अर तिंवारां मुजब पाग-पगड़ियां रा रंगां रौ चयन हुवै। उदाहरण रुप में बसंत रितु में गुलाबी, गरमी रितु में फूल गुलाबी अर लहरिया, बरखा रितु में लाल चंदनिया। सावण-भादवा में बरखा री फुंआरां ज्यूं ई पाग नै भिजोवै, उणमें चंदण री सुगंध आवण लागै। आसोज अर काती री सरद रितु में गुल-अे-अनार री पाग बांधी जावै। मिगसर अर पौष, हेमंत रितु में भांत-भांत री पगड़ी जिणनै 'मौळिया' कैवै, बांधण ही परंपरा है। शिशिर रितु माघ अर फागण में आवे जिणमें फागुणिया अर होळी माथै केसरिया रंग बांधण रौ आम रिवाज है।

मेवाड़ रा राजपरिवार में रितुवां मुजब पगड़ी बांधण रौ रिवाज है। सावण भादवा में हरे रंग री, सरदी में कसुंभी अर गरमी में केसरिया रंग री पगड़ी पसंद की जावै। मेवाड़ रा महाराणा चेत सुद ३ सूं ६ तांई गणगौर उछब मनावै। उण समै महाराणा अर उणांरा १६ बतीसा उमराव गणगौर री तिंवार माथै कसुंबल, सुआपांखी, गुलाबी अर केसरिया रंग री पागां धारण करै। सावण सुद ३ मेवाड़ में छोटी तीज मनाईजै। उन दिन गुलाबी अर धोळी धारीवाळी लहरिया पाग बांगण रौ रिवाज है। भादवा वद ३ काजळी तीज रै रुप में मनाईजै। इण मौके धोळी अर काळी धारियां री बंधेज री पागां बांधीजै। उण माथै सोनै री छपाई रौ काम भी हुवै। आंसजी नवरात्रा रै पछै दसरांवा तिंवार माथै महाराणा सलमा-सितारा वाळी जुलूसी पाग धारण करै। बसंत पांचम माथै केसरिया अर पीळा रंग री पाग जणि माथै गुलाबी छांटा दियोड़ा हुवै, बांधण री परंपरा मेवाड़ में रैयी है। होळी माथै धोळी फागुणी पाग बांधण रौ रिवाज है।

मारवाड़ राजपरिवार में तिवारां माथै रंगा रौ चयन ही न्यारौ है। गणगौर, आखातीज अर दसरावा तिंवार माथै महाराजा अर दूजा सामंत केसरिया रंग रा साफा धारण करै। दीवाळी री रात काळी चूंदड़ी रौ साफौ, जिणमें सलमा-सितारा री पगड़ी रा दोनां किनारां माथे कलात्मक काम हुवै, बांधिया जावै। राखड़ी माथै चटकीलै रंग री मोठड़ा पाग बांधीजै। बसंत पांचम नै पीळै रंग रौ साफौ अर उण माथै गुलाबी छांटा लाग्यौड़ा हुवै। सरद पूनम नै फूल गुलाबी साफा बांधण रौ रिवाज जोधपुर राजपरिवार माय है। सावण में समंदर लहर, इन्द्रधनुषी साफा बांधण री रिवाज आज भी है। होळी रा तिंवार माथै धौळा साफा माथै राता लाडू भांत बंधेज वाळा साफा बांधीजै। जोधपुर राजपरिवार में ब्याव सूं पैला पीठी री रस्म रै मौके राता पल्लां वाळा काळा साफा बांधण रौ रिवाज है अर फेरां रै समै दूल्हे रौ साफौ केसरिया रंग री ई हुवै।

मेवाड़ रा महाराणा भूपालसिंहजी बाबत कैयौ जावै के वे आपरी पाग नै धारण करियां पछै उणनै 'धारण री पाग' री श्रेणी में राखता अर पछै उणनै आपरा मरजीदानां नै भेटस्वरुप दे देवता। महाराणा फतेहसिंहजी आपरा जंवाई जोधपुर रा महाराजा सरदारसिंहजी रा देवलोक हुयां पछै कदैई रंगीन पाग नीं बांधी। वे फगत धोळा रंग री पाग धारण करता, जिण माथै शोकसूचक काळी डोरी हुवती। मेवाड़ में पाग रौ जीवणौ हिस्सौ 'खग' ऊपर उठियोड़ौ तीखा आकार रौ हुवतौ, जिणसूं बांधण वाळा री वीरता रौ जीवणौ हिस्सो सिर माथै दबियोड़ौ निगै आवतौ जिकौ उणां री नम्रता रौ प्रतीक मानियौ जावतो।

मारवाड़ में कंवरपदा शोक रा रंग ज्यूं मलयागिरी, खाकी, आसमानी इत्याद बांधण री मनाही ही। अैड़ा अवसरां माथै सिंधरुपी रंग रौ साफौ बांधियौ जावतौ। राजस्थान रा शहरी परिवेस में पागड़ी परंपरा नै ब्याव, गमी तांई सीमित कर दियौ है, पण गांवां में पागड़ी रौ प्रचलन आज ई है अर वाण वाळा सैकड़ां बरसां तांई रैवैला। जे इण परंपरा की जड़ां गैरी नीं हुवती तौ और रिवाज कदैई उठ जावतौ। पागड़ी परंपरा आपांणै संस्कारां सूं जुड़ियोड़ी है अर इणरौ अंत आपांणा संस्कारां री समाप्ति माथै ई हुवैला।

एक गृहिणी अपने परिवार के लिए
क्या चुनेगी ?
NAKODA
Since 1978
सस्ता या सेहत ?
45 वर्षों से आपका अपना
विश्वसनीय ब्रांड - NAKODA
Since 1978
DAIRY TAAZA
Cow's Desi Ghee
MUSTARD OIL
Kacchi Ghani
SESAME OIL
Filtered
GROUNDNUT OIL
Refined
GROUNDNUT OIL
Refined
SUNFLOWER OIL
Refined
SOYABEAN OIL
Refined
RICE BRAN OIL
DAIRY SPECIAL
Desi Ghee
For Free Home Delivery
89288 82457 | 85915 62269
89285 86181 | 91377 56585
/nakodagheetel

ग्रामीण लोक कलाओं से परिचित कराती राजस्थान की कठपुतलियां

'राजस्थान कठपुतली की कला' संसार भर में प्रसिद्ध है, यहां की बनी छोटी, बड़ी 'कठपुतलियां' विदेशी पर्यटक बड़े चाव से अपने साथ ले जाते हैं, विदेशी मेहमानों और प्रतिनिधि मंडलों को जब भी हमारे देश की ग्रामीण लोक कलाओं से परिचित कराया जाता है, तब यहां की 'कठपुतलियां' अवश्य दिखाई जाती हैं। ग्रामीण लोककला के रूप में 'कठपुतलियों' का महत्व हमारे आम सामाजिक जीवन में बहुत अधिक रहा है। जयपुर में राजा-महाराजाओं के समय 'कठपुतली' बहुत बड़ा मनोरंजन एवं सामाजिक बुराईयों को सामने लाने वाला साधन था। 'कठपुतली' के माध्यम से ही किसी भी बात को जन-जीवन के सामने आसानी से रखा तथा समझाया जा सकता था। 'कठपुतली' के कलाकार अपने सधे हुए हाथों से महीन धागों के माध्यम से एक साथ कई किरदारों को निभाते हुए लोक कथाओं को दर्शकों के सामने इस सुन्दर ढंग से रखते थे कि कठपुतलियां सजीव लगने लगती थी, इस लोक कला में जहां बच्चों के लिये मनोरंजन होता था, वहीं बड़ों के लिये सीख भी उपलब्ध रहती थी।

कुछ वर्षों पूर्व गांवों तथा शहरों में 'कठपुतलियों' को बड़े चाव से देखा जाता था। गांव के रसूकदार लोग कठपुतली के खेलों की व्यवस्था रात के समय चौपाल पर किया करते थे। लालटेनों की मद्धिम रोशनी में चौपालों पर कठपुतली का खेल खुब जमता था। कठपुतली का खेल दिखाने वाले अपनी टोली बनाकर गांवों में पहुंचते थे, इनमें गाने बजाने वाले, नाचने वाले और मसखरे भी होते थे, जो स्थानीय भाषा एवं बोली के माध्यम से लोगों का मनोरंजन करते थे। इन ग्रामीणों से ही कठपुतली के कलाकारों को खाने-पहनने का सामान तथा नगद राशि मिल जाती थी, किंतु धीरे-धीरे गांव, गांव नहीं रह कर शहरों का प्रतिरूप हो गये और गांवों के घरों में रेडियो, टेलीविजन तथा फिल्म प्रदर्शन ने 'कठपुतली' के प्रति लगाव कम कर दिया।

'कठपुतली' के जरिए लोकरंजन करने वाला, लोक जागरण और लोक सुधार का संदेश देने वाला कलाकार एक अंधेरे भविष्य की ओर बढ़ रहा है। 'कठपुतली' कलाकारों की तरक्की के कारगर कदम उठाकर केन्द्र तथा राज्य सरकारें इनके जीवन को सही दिशा दे सकती है। राष्ट्रीयकृत और सहकारी बैंकों से लम्बी अवधि के ऋण उपलब्ध करवा कर उन्हें अपने कलात्मक कार्य को आगेवान के लिए प्रेरित किया जा सकता है। 'कठपुतली' कला को लोकप्रिय बनाने के लिए सरकार की ओर से एम्पोरियमों की भी व्यवस्था की जानी चाहिए, जहां ये लोग अपनी कलाकृतियां बेचकर यथा समय रकम प्राप्त कर सकें। लघु उद्योग निगम और दूसरे विभाग भी इस दिशा में समुचित कदम उठा सकते हैं। कठपुतलियां अरडू के पेड़ की लकड़ी से बनाई जाती हैं, औजारों के जरिये इस लकड़ी की कटाई तथा छिलाई की जाती है। आवश्यकतानुसार 'कठपुतली' का रूप देकर इसे रंगा जाता है और सुनहरे वस्त्र जैसे गोटे किनारी की चुनरी, घाघरा या दाढ़ी मूंछ लगाकर अन्य आवश्यक साज-सामान से सजाया जाता है।

कठपुतलियों को सजाने में तांबे का गोटा लगाया जाता है। नए-नए कपड़ों की कतरन, पक्का रंग, पूरगबूर और सुईं-डोरों तथा 'कठपुतली' के किरदार के अनुसार गहने भी पहनाये जाते हैं। 'कठपुतली' को मर्द आकार देते हैं, औरतें उनमें रंग भरती हैं, उनके कपड़े सीलकर तैयार करती हैं, उन्हें सजाकर गुड़ियों का रूप देती हैं, कठपुतलियां तैयार हो जाती हैं।

कठपुतली कला भारतीयता का आदर्श

भारत में कला की समृद्ध परंपरा रही है। समकालीन परिदृश्य में पीछे छूट रही 'कठपुतली' की परंपरा को एक बार फिर से जनमानस से जोड़ने का प्रयास अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किया जाना चाहिए। विदित हो कि कठपुतली कला की उत्पत्ति भारत में हुई, इसके तथ्यगत संकेत तमिल महाकाव्य 'सिलप्पादिकारम' में मिलते हैं। मुख्य धारा की अन्य कलाओं की तरह कठपुतली में भी अभिनय, नृत्य, रंगमंच और मंच से संवाद प्रस्तुति जैसी चीजें होती हैं। भारत के विभिन्न हिस्सों में कठपुतली को अलग-अलग नाम मिला है, जैसे राजस्थान में 'कठपुतली', ओडिशा में 'कुंधेई', कर्नाटक में 'गोम्बेयटट', तमिलनाडु में 'बोम्मालत्तम', केरल में 'पावाकूथु' और बिहार में 'यमपुरी नाच' और बंगाल में 'पुतुल नाच' कहा जाता है।

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर मेरा राजस्थान के पाठकों को हार्दिक शुभकामनायें

Sanjay Mantri Mob.:- 9890163369

Hotel Krishna Inn

Hotel Krishna Inn, Khadkeshwar, Aurangabad, Maharashtra, Bharat-431001
0240 - 2349340 +91 7755903321 krishnainnhotel@gmail.com
/krishnainnhotel www.hotelkrishnainn.com

सोने री धरती जठै चांदी रो आसमान
रंगरंगीलो रस भरियो म्हारो प्यारो राजस्थान।
राजस्थान दिवस पर हार्दिक बधाई

SRI BALAJI
PAPER AGENCIES
Authorised Dealer for : West Coast Paper Mills Ltd.
N-406, Brigade Plaza, Ananda Rao Circle, S.C. Road, Bengaluru - 560 009.
Tel. : 080-22257235, 41223363 E-mail : marketing@sbpa.in

SBPA PAPER
LINK PVT. LTD.,
Distributor for : Tamilnadu Newsprint and Papers Ltd., Ballarpur Industries Ltd.
N-406, Brigade Plaza, Ananda Rao Circle, S.C. Road, Bengaluru - 560 009.
Tel. : 080-22257235, 41223363 E-mail : marketing@sbpa.in

INDIGO IMPEX
Assured Quality - Ensured Quantity
A House of ECO friendly Disposables
483, Sompura Industrial Estate, Sompura 2nd Stage, Dabaspet,
Bengaluru Rural District-562 111. Mob. 95354 84950 email : indigoimpexx@gmail.com

BBC
PAPER INDIA
Manufacturer of : Paper Cup
483, Sompura Industrial Estate, Sompura 2nd Stage, Dabaspet,
Bengaluru Rural District-562 111. E-mail : bbcpaperlink@gmail.com

MADHUSUDAN BALDWA - PRAMOD BALDWA - ARVIND CHANDAK

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर
मेरा राजस्थान के पाठकों को हार्दिक शुभकामनायें

Prakash Baid
Managing Director
ANG TEA & AGRO PRODUCTS PVT. LTD.
V. M. ENTERPRISES
MICKY MARKETING
(Manufacturing of Black Tea & Plywood)
A.T. Road, Tinsukia, Assam, Bharat- 786125
Cell +91 94353-93920. 99542-62545 E-mail : angteaagroproduct@gmail.com

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर सभी
राजस्थान वासियों को हार्दिक शुभकामनायें

Raj Kumar Daga
Mob. :- 9311415700

Ka
KOLOR ACTIV

Hevlon Cosmetics

Khasra no 884, Rithala Village,
Near Maruti Service Centre, Delhi, Bharat-110089

चहुं ओर स्नेह श्रद्धा, सद्भाव की लहर, न कोई दिखावा,
ना कहीं आडंबर प्रकृति का अनोखा उपहार है 'राजस्थान'

Mahabir Prasad Singhania
Mob. : 9774012301/9863028065
Singhania Printing Press
Thana Road, Shillong,
Meghalaya, Bharat-793001
Ph: (0364) 2501751 Fax: (0364) 2222570
Email : printxpress04@gmail.com
Email: mpsinghnia1949@gmail.com

महावीर जन्म कल्याणक पर्व

तीर्थंकर महावीर स्वामी का जन्म, महावीर जयन्ती के नाम से भी प्रसिद्ध है। महावीर स्वामी का जन्म चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में हुआ था। ईस्वी कालगणना के अनुसार तत्कालीन सोमवार, दिनांक २७ मार्च, ५९८ ईसा पूर्व के माँगलिक प्रभात में वैशाली के गणनायक राजा सिद्धार्थ के घर महावीर स्वामी का जन्म हुआ।

महावीर स्वामी का तीर्थंकर के रुप में जन्म उनके पिछले अनेक जन्मों की सतत् साधना का परिणाम था। कहा जाता है कि एक समय महावीर का जीव पुरुरवा भील था। संयोगवश उसने सागरसेन नाम के मुनिराज के दर्शन किए। मुनिराज रास्ता भूल जाने के कारण उधर आ निकले थे। मुनिराज के धर्मोपदेश से उन्होंने धर्म धारण किया। महावीर के जीवन की वास्तविक साधना का मार्ग यहीं से प्रारम्भ होता है। बीच में उन्हें कौन-कौन से मार्गों से गुजरना पड़ा, जीवन में क्या-क्या बाधाएँ आईं और किस प्रकार भटकना पड़ा, यह एक लम्बी और दिलचस्प कहानी है, जो सन्मार्ग का अवलम्बन कर, जीवन के विकास की प्रेरणा देती है। महावीर स्वामी का जीवन हमें एक शान्त पथिक का जीवन लगता है जो कि संसार में भटकते-भटकते थक गया। भोगों को अनन्त बार भोग लिये, फिर भी तृप्ति नहीं हुई, अत: भोगों से मन हट गया, अब किसी चीज की चाह नहीं रही, परकीय संयोगों से बहुत कुछ छुटकारा मिल गया, अब जो कुछ भी रह गया उससे भी छुटकारा पाकर, महावीर मुक्ति की राह देखने लगे।

एक बार बालकों के साथ बहुत बड़े वटवृक्ष के ऊपर चढ़कर खेलते हुए वर्द्धमान के धैर्य की परीक्षा करने के लिए संगम नामक देव, भयंकर सर्प का रुप धारण कर उपस्थित हुए, सर्प को देखकर सभी बालक भाग गए, किन्तु वर्द्धमान इससे जरा भी विचलित नहीं हुए। वे निडर होकर वृक्ष से नीचे उतरे। संगमदेव उनके धैर्य और साहस को देखकर दंग रह गया, उसने अपना असली रुप धारण किया और महावीर स्तुति कर चला गया।

महान् पुरुषों का दर्शन ही संशयचित लोगों की शंकाओं का निवारण कर देता है। संजय और विजय नामक दो चारण ऋद्धिधारी देव थे जिन्हें तत्त्व के विषय में कुछ शंका थी। कुमार वर्द्धमान को देखते ही उनकी शंका दूर हो गई, उन दो ने प्रसन्नचित हो कुमार का सन्मति नाम रखा।

एक दिन ३० वर्ष का वह त्रिशलानन्दन कर्मों का बन्धन काटने के लिए तपस्या और आत्मचिन्तन में लीन रहने का विचार करने लगा। कुमार की विरक्ति का समाचार सुनकर माता-पिता को बहुत चिन्ता हुई। कलिंग के राजा जितशत्रु ने अपनी सुपुत्री यशोदा के साथ कुमार वर्द्धमान के विवाह का प्रस्ताव भेजा, उनके इस प्रस्ताव को सुनकर माता-पिता ने जो स्वप्न सजोए थे, आज वे स्वप्न उन्हें बिखरते हुए नजर आ रहे थे। वर्द्धमान को बहुत समझाया गया, अन्त में माता-पिता को मोक्षमार्ग की ही स्वीकृती देनी पड़ी। मुक्ति के राही को भोग जरा भी विचलित नहीं कर सके। तत्कालीन मंगशिर कृष्ण दशमी सोमवार, २९ दिसम्बर ५६९ ईसा पूर्व को मुनिदीक्षा लेकर वर्द्धमान स्वामी ने शालवृक्ष के नीचे, तपस्या आरम्भ कर दी, उनकी तप: साधना बड़ी कठिन थी।

महावीर की साधना मौन साधना थी, जब तक उन्हें पूर्ण ज्ञान की उपलब्धि नहीं हो गई तब तक उन्होंने किसी को उपदेश नहीं दिया। तत्कालीन वैशाख शुक्ल दशमी, २६ अप्रैल, ५५७ ईसा पूर्व का वह दिन चिरस्मरणीय रहेगा जब त्रम्बक नामक ग्राम में अपराह्न समय गौतम उनके प्रमुख शिष्य (गणधर) हुए,

उनकी धर्मसभा समवसरण कहलाई, इसमें मनुष्य, पशु-पक्षी आदि सभी प्राणी उपस्थित होकर धर्मोपदेश का लाभ लेते थे, लगभग ३० वर्ष तक उन्होंने सारे देश में भ्रमण कर लोकभाषा प्राकृत में सदुपदेश दिया और कल्याण का मार्ग बतलाया। संसार-समुद्र से पार होने के लिए उन्होंने तीर्थ की रचना की, अत: वे तीर्थंकर कहलाए।

आचार्य समन्तभद्र ने तीर्थ को ही सर्वोदय तीर्थ कहा है, व्यक्ति के हित के साथ-साथ महावीर के उपदेश में समष्टि के हित की बात भी निहित थी।

महावीर का उपदेश मानवमात्र के लिए ही सीमित नहीं था, बल्कि प्राणिमात्र के हित की भावना उनमें निहित थी। महावीर श्रमण परम्परा के उन महापुरूषों में से थे जिन्होंने यह उद्घोष किया था कि हर प्राणी एक समान है। मनुष्य और क्षुद्र कीट-पतंग में आत्मा के अस्तित्व की अपेक्षा कोई अन्तर नहीं, उस समय जबकि मनुष्य के बीच में दीवालें खड़ी हो रही थी, किसी वर्ण के व्यक्ति को ऊँचा और किसी को नीचा बतलाकर, एक वर्ग विशेष का स्वत्वाधिकार कायम किया जा रहा था, उस समय मानवमात्र का प्राणिमात्र के प्रति समत्वभाव का उद्घोष करना, बहुत बड़े साहस की बात थी, तत्कालीन अन्य परम्परा के लोगों द्वारा इसका घोर विरोध हुआ, अन्त में सत्य की विजय हुई। करोड़ों पशुओं और दीन-दु:खियों ने चैन की साँस ली। समाज में अहिंसा का महत्व पुर्नस्थापित हुआ। महावीर स्वामी ने नारा बुलन्द किया कि प्रत्येक आत्मा परमात्मा बन सकती है। कर्मों के कारण आत्मा का असली स्वरुप अभिव्यक्त नहीं हो पाता, कर्मों को नाशकर शुद्ध, बुद्ध और सुखरुप स्थिति को प्राप्त किया जा सकता है, तीस वर्ष तक तत्त्व का भली-भाँति प्रचार करते हुए महावीर अन्तिम समय मल्लों की राजधानी पावा पहुँचे, वहाँ के उपवन में तत्कालीन कार्तिक कृष्ण अमावस्या मंगलवार, १५ अक्टूबर, ५२७ ई.पू. को ७२ वर्ष की आयु में उन्होंने निर्वाण प्राप्त किया।

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर हार्दिक शुभकामनाएं

M R SHIPPING PVT LTD
Globally Connected

Rajkumar Baheti
Mob.: 9820450521
Madhuri Baheti

Service Offering All in one Root
Freight Forwarding and Multimodal Transportation
Warehousing & Project Logistics
Third Country logistics & Custom Clearance
Direct Part Delivery
CFS Management of Nhava Sheva

Ragistrered Member

Mumbai | Nagpur | Mundra | Kolkata | ICD TUMB
Delhi | Chennai | Gandhidham | Hazira | Ahmedabad

Whereabouts :
505, 5th Floor, Neptune Uptown,
N. S. Road, Opp Post Office,
Mulund West, Mumbai- 400080
Ph:- 022-2225659548
Email:- bahetirajkumar@mrshipping.in
Website:- www.mrshipping.in

!! Shree Hari !!
'राजस्थान स्थापना दिवस' पर सभी राजस्थान वासियों को हार्दिक शुभकामनायें

Raghav Didwania
Mob: 99670 04558
Khushi Didwania
Mob: 99872 22473

काज BUTTON

Shop No.7, Gardenia, Vasant Valley Complex,
Film City Road, Malad East,
Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400 097

@kaajbuttonstudio

By Appointment Only

Specialise in Men's Kurta and Bandi

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर सभी राजस्थान वासियों को हार्दिक शुभकामनायें

Devichand Chopra
Mob: 9820323694

Bachraj Developers

Shri Sitaram Sadan, D Block, 1st Floor, 276/286,
Princess Street, Opp. Parsi Dairy, Mumbai- 400002
Off: 22000239/249 Email: info@bachraj.com

६ अप्रैल हनुमान जयंती

नासै रोग हरै सब पीरा, जपत निरंतर हनुमत बीरा

हनुमान जी का इतिहास

देवराज इंद्र के लोक में एक अप्सरा कुंजीस्थली रहती थी, जब एक बार दुर्वासा ऋषि इंद्र की सभा में उपस्थित थे जब अप्सरा बार-बार अंदर बाहर आकर सभा में विघ्न उत्पन्न कर रही थी, जिससे दुर्वासा ऋषि क्रोधित हो गए और उन्होंने उस अप्सरा को बंदरिया हो जाने का श्राप दे दिया, इसके बाद अप्सरा ने ऋषि से

श्राप वापस लेने के लिए बहुत प्रार्थना की तब दुर्वासा ऋषि ने उन्हें इच्छा अनुसार रूप धारण करने का वरदान दिया, कुछ वर्षों बाद अप्सरा कुंजीस्थली ने वानर श्रेष्ठ ब्रज के यहां वानरी रूप में जन्म लिया और उनका नाम अंजनी रखा गया विवाह योग्य होने पर उनके पिता ने अपनी पुत्री अंजनी का विवाह महान पराक्रमी, शिरोमणि वानरराज केसरी से कर दिया, बहुत समय तक जब अंजनी मां को संतान नहीं हुई तब उन्होंने शिवजी को प्रसन्न करने के लिए कठिन तप किया फिर एक बार वानर राज केसरी प्रभास तीर्थ के निकट थे, तब उन्होंने देखा की वहां बहुत से साधु ध्यान लगाकर पूजा अर्चना कर रहे हैं, तभी एक विशाल हाथी आया और उसने वहां बैठे ऋषियों को मारना प्रारंभ कर दिया वहीं ऋषि भारद्वाज अपने आसन पर ध्यान लगाकर बैठे थे, हाथी उनकी ओर बढ़ रहा था तभी वानर राज केसरी ने बलपूर्वक हाथी के दांतों को पकड़कर उसे मार डाला, सभी ऋषियों ने प्रसन्न होकर राजा केसरी को वरदान मांगने को कहा, तब उन्होंने इच्छा अनुसार रूप धारण करने वाला पवन के समान तेज तथा रूद्र के समान पुत्र प्राप्त करने का वरदान मांगा था, इसके बाद सभी ऋषि उन्हें यह वरदान देकर वहां से चले गए।

हनुमान जी का जन्म

अंजनी माता पर्वत के शिखर पर खड़े होकर सूर्य की किरणों को निहार रही थी तभी तेज हवा के झोंके से उनका वस्त्र थोड़ा सा उड़ गया, जब उन्होंने चारों तरफ देखा तो सभी वृक्षों के पत्ते शांत थे, तब उन्होंने सोचा यह अवश्य कोई राक्षस होगा, तब क्रोधित होकर बोली दुष्ट छिपकर मुझ स्त्री का अपमान करने की चेष्टा करते हो, तभी अचानक वहां पवन देव प्रकट हो गए और बोले देवी मुझे क्षमा करें आपके पति को ऋषियों ने मेरे सामान पराक्रम पुत्र होने का वरदान दिया है।

ऋषियों के वचन और भगवान शिव की आज्ञा से मैंने आपको स्पर्श किया जिससे आप एक महान तेजस्वी पुत्र को जन्म देंगी, उन्होंने कहा भगवान शिव के अंश रूद्र मेरे स्पर्श से आपके गर्भ में प्रविष्ट हुए हैं और वही आपके पुत्र के रूप में जन्म लेंगे, इसके बाद शास्त्रों की गणना के अनुसार हनुमान जी का जन्म त्रेता युग में 'चैत्र पूर्णिमा मंगलवार' के दिन चित्रा नक्षत्र व मेष लग्न के आयोग में भारत देश के वर्तमान 'झारखंड' राज्य के गुमला जिले में हुआ था।

बजरंगबली क्यों कहा जाता है?

हनुमानजी भगवान शिव के ११वें रुद्र अवतार हैं, जो सबसे बलशाली और बुद्धिमान हैं। हनुमान जी का जन्म श्री राम और श्री राम भक्तों की सहायता करने के लिए हुआ, कलयुग में हनुमान जी उपस्थित रहकर श्री राम भक्तों की सहायता अवश्य करते हैं जो सच्चे मन, कर्म, और वचन से श्री राम जी का भक्त हैं स्वयं हनुमान जी की कृपा उस पर हमेशा बनी रहती है इस पृथ्वी पर जिन ७ ऋषियों को अमरत्व का वरदान प्राप्त है, उनमें हनुमानजी भी शामिल हैं। हनुमानजी के पराक्रम की अनेक कथाएं रामायण एवं अन्य ग्रंथों में प्रचलित है इनका शरीर वज्रा के समान होने के कारण इन्हें 'बजरंगबली' और पवन के समान वेग होने के कारण इन्हें 'मारुति' कहा गया है।

बचपन में मां अंजनी और पिता केसरी ने इनका नाम मारुति रखा था, लेकिन जब सूर्य को निगल लेने पर इंद्र ने मारुति पर वज्रा प्रहार किया तब मारुति की टोडी का रूप बिगड़ गया, जब से इनका नाम हनुमान पड़ गया, हनुमान का अर्थ होता है बिगड़ी हुई टोंडी। हनुमान जी के १०८ और नाम है और हर नाम का अलग-अलग अर्थ है, इनके १०८ नामों का जप करने से समस्त दुख रोगों का नाश हो जाता है, कहते हैं कि हनुमान जी आज भी अयोध्या में श्री रामनवमी पर्व पर सरयू नदी के किनारे साधु का वेश धारण कर ब्राह्मणों को भोजन कराने आते हैं।

हनुमान जी के पांच भाई

एक बार हनुमान जी ने श्रीराम की याद में अपने पूरे शरीर पर सिंदूर लगा लिया, क्योंकि उन्होंने १ दिन माता सीता को सिंदूर लगाते हुए देख लिया था, जब उन्होंने माता सीता से इसका कारण पूछा तो माता सीता ने कहा यह सिंदूर श्री राम के प्रति प्रेम और सम्मान का प्रतीक है, यह जानने के बाद हनुमान जी ने अपने पूरे शरीर पर सिंदूर लगा लिया, यह दर्शाने के लिए कि वह भी श्री राम से बहुत प्रेम करते हैं, इस घटना के बाद हनुमान जी का लाल रंग में उनका रूप बहुत ही प्रचलित हुआ।

महाभारत काल में भीम अपने बल के कारण जाने जाते थे वह भी हनुमान जी के भाई थे, हनुमान जी के पांच सगे भाई और भी थे और वह सभी विवाहित थे, इस बात का उल्लेख ब्रह्मांड पुराण में मिलता है पांचों भाइयों में बजरंगबली सबसे बड़े थे, हनुमान जी को शामिल करने के बाद वानर राज केसरी के ६ पुत्र थे, सभी में सबसे बड़े बजरंगबली थे, इनके बाद मतिमान, श्रुतिमान, केतुमान, गतिमान, धूतीमान थे इन सभी की संतानें भी थी, जिसके कारण इनका वंश कई वर्षों तक चला।

हनुमान जी की सत्य घटना

जब बाली को यह वरदान मिला कि जो भी उससे युद्ध करने उसके सामने आएगा तो उसकी आदि शक्ति बाली में चली जाएगी और बाली हर युद्ध में जीत जाएगा। सुग्रीव और बाली दोनों ब्रह्मा के औरस पुत्र थे। बाली पर ब्रह्मा जी की सदैव कृपा बनी रहती थी। बाली को अपनी शक्ति पर बहुत ही घमंड था, उसका घमंड और भी अधिक बढ़ गया, जब उसने तीनों लोकों के सबसे शक्तिशाली योद्धा रावण से युद्ध किया था। बाली ने रावण को अपनी पूंछ से बांधकर पूरी दुनिया में भ्रमण किया था, रावण जैसे योद्धा को हराकर बाली के घमंड की कोई सीमा नहीं रही, इसके बाद बाली अपने आपको संसार का सबसे बड़ा योद्धा समझने लगा था। १ दिन बाली अपने घमंड में हरे भरे पौधों को तिनके के शेष पृष्ठ २५ पर...

पृष्ठ २४ से... समान उखाड़ कर फेंक रहा था, बाली अपनी ताकत के नशे में पूरे जंगल को उजाड़ रहा था और वह बार-बार युद्ध करने की चेतावनी दे रहा था, उसी जंगल में हनुमान जी राम का जाप कर रहे थे, बाली की इस हरकत के कारण हनुमान जी की तपस्या में विघ्न उत्पन्न हो रहा था, हनुमान जी वाली के पास आए और उन्हें समझाने लगे। हनुमान जी ने बाली को राम नाम का जाप करने के लिए कहा और कहा कि राम का जाप करने से लोक और परलोक दोनों ही सुधर जाएंगे, पर बाली ने हनुमान जी को अपमानित किया और कहा कि मेरे से बड़ा इस दुनिया में कोई भी नहीं है। हनुमान जी ने कहा कि श्रीराम तीनों लोकों के स्वामी हैं, जब बाली ने रामजी के प्रति कटु वचन कहे तब हनुमान जी को बहुत ही क्रोध आया और हनुमान ने बाली को युद्ध हेतु ललकारा, बाली ने कहा कि कल हम नगर के बीचो-बीच युद्ध करेंगे, और हनुमान जी ने यह चेतावनी स्वीकार कर ली।

अगले दिन जब हनुमान जी युद्ध के लिए जा रहे थे तब उन्हें रास्ते में ब्रह्मा जी ने रोक लिया, हनुमान जी ने ब्रह्मा जी को प्रणाम किया इसके बाद ब्रह्मा जी ने हनुमानजी से निवेदन किया कि तुम मेरे पुत्र बाली से युद्ध करने के लिए मत जाओ, हनुमानजी ने कहा बाली ने मेरे आराध्य रामजी के बारे में बहुत ही कटु वचन बोले हैं, इसलिए मैं उसे क्षमा नहीं कर सकता। हनुमान जी ने कहा बाली ने मुझे युद्ध की चुनौती दी है, यदि मैं युद्ध करने के लिए नहीं गया, तो पूरा ब्रह्मांड मुझे कायर कहेगा। ब्रह्मा जी ने कहा आप अपने समस्त शक्तियों को अपने साथ लेकर ना जाएं, केवल दसवां भाग ही अपने साथ लेकर जाएं, बाकी शक्तियों को अपने आराध्य के चरणों में रख दें, युद्ध से आने के बाद उन्हें फिर से ग्रहण कर लेना, हनुमानजी ने ब्रह्माजी की बात को मान लिया।

जब हनुमान जी वहां पहुंचे तो बाली ने पूरे नगर को अखाड़े के रूप में बदल दिया था, वहां पर इन दो महान योद्धाओं का युद्ध देखने के लिए बहुत ही भीड़ लगी हुई थी, जब हनुमान जी ने अपना एक पैर अखाड़े में रखा तब उनकी आधी शक्ति बाली में चली गई, इसके बाद जैसे ही बाली के शरीर में शक्ति आई तो उनके शरीर में बदलाव आने लगे, बाली का शरीर बल के प्रभाव में फूलने लगा, शरीर फट कर शरीर से खून निकलने लगा। बाली को उस समय कुछ भी समझ नहीं आ रहा था, तभी ब्रह्मा जी बाली के पास प्रकट हुए और उन्होंने कहा कि पुत्र यदि तुम अपनी जान बचाना चाहते हो तो यहां से बहुत दूर चले जाओ, इसके बाद बाली दौड़ने लगा, १०० फीट तक दौड़ने के बाद वह थक कर गिर गया, जब उसे होश आया तब उसने अपने सामने ब्रह्मा जी को देखा और पूछा

कि यह सब क्या था? हनुमान से युद्ध करने से पहले मेरा शरीर फटने क्यों लगा तो ब्रह्माजी ने कहा पुत्र जब हनुमानजी तुम्हारे सामने आए, तब उनका आधा बल तुम्हारे में समा गया था, ब्रह्माजी ने बाली से पूछा उस समय तुम्हें कैसा लगा, तब बाली ने कहा मुझे ऐसा लगा जैसे सागर की लहरें मेरे अंदर समा रही हो, तब ब्रह्मा जी ने बाली को पूरी बात बताई और कहा कि मैंने हनुमानजी को दसवां हिस्सा अपने साथ लाने के लिए कहा था, तुम उनके दसवें हिस्से में से आधा भी नहीं संभाल पाए, यदि वह अपने साथ सारी शक्तियां लेकर आते, तो तुम्हारे शरीर का क्या होता, इतना सुनने के बाद बाली हैरान रह गया और पूछा कि पिताजी हनुमान के पास यदि इतनी शक्तियां है तो वह कहां प्रयोग करेंगे, तब ब्रह्माजी ने कहा कि हनुमानजी अपने पूरे बल का प्रयोग कहीं भी नहीं कर पाएंगे, क्योंकि उनके बल का दसवां भाग ही पूरी सृष्टि नहीं सहन कर पाती। बाली ने हनुमान जी को दंडवत प्रणाम किया और माफी मांगी, इसके बाद बाली ने आत्म ज्ञान से भरकर राम नाम का तप किया और राम नाम से ही मोक्ष का मार्ग प्राप्त किया।

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर सभी राजस्थान वासियों को हार्दिक शुभकामनायें

ASHOK L. CHANDAK
Mob: 9821327215
IRON & STEEL BROKER
Resi. B-1/ 1003 Lok Everest, J.S. Dosa Road, Cement Co., Mulund West, Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400 080

जय श्री पूनरासर बाबेरी

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर सभी
राजस्थान वासियों को हार्दिक शुभकामनायें

Manmohan Rathi
Mob: 9820054023/ 9167699111

MM RATHII STOCK PVT. LTD.
Dealing in:
Listed, Unlisted & Securities and Physical Shares
R. No. 1A, Cadinal Gracious Road, Cigarette Factory, Chakala, Andheri East, Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400069 Email: bablurathi@gmail.com

३० मार्च राजस्थान दिवस पर विशेष

जयपुर, जोधपुर, बीकानेर एवं जैसलमेर के संयुक्त राजस्थान में सम्मिलित होने के बाद ३० मार्च १९४९ ई. को राजस्थान राज्य का गठन हुआ, इसका उद्घाटन लौहपुरुष सरदार पटेल ने किया, जयपुर इसकी राजधानी बनी एवं प्रथम मुख्यमंत्री के रुप में स्वनामधन्य हीरालाल शास्त्री ने शपथ ग्रहण की। उदयपुर के महाराजा को प्रमुख एवं जयपुर के महाराज को राजप्रमुख बनाया गया, इसी दिवस को समस्त राजस्थानी पूरे उत्साह से 'राजस्थान दिवस' के रुप में मनाते हैं।

गौरतलब है कि हम जिसे 'राजस्थान' राज्य के नाम से जानते हैं, स्वाधीनता के समय 'राजस्थान' अनेक छोटी-छोटी रियासत एवं रजवाड़ों में बंटा हुआ था। यहाँ की प्रजा, जागीदार, राजा और अंग्रेजी सत्ता की तिहरी गुलामी में अपना जीवन काट रहे थे। स्वाधीनता के संघर्ष में यहाँ के लोग देश के अन्य भागों के साथ कदम से कदम मिलाकर चले। अंग्रेजी सत्ता की राजनैतिक कुटिल दृष्टि यदि सफल हो गई होती तो उसके परिणाम भयानक हो सकते थे।

लौहपुरुष सरदार पटेल अंग्रेजों के कुचक्र के प्रति पूर्ण रुप से सजग थे। १५ अगस्त १९४७ ई. को वास्तविक में सत्ता हस्तानान्तरण के पूर्व जम्मू-काश्मीर एवं हैदराबाद को छोड़कर वे सभी रियासतों एवं रजवाड़ों से 'विलय पत्र' पर हस्ताक्षर करा चुके थे एवं स्वाधीनता प्राप्ति के साथ ही उन्होंने इन सभी रियासतों का प्रशासनिक स्तर पर एकीकरण प्रारम्भ कर दिया था। राजस्थान का वर्तमान स्वरुप १९४८ ई. से १९५६ ई. तक लगातार चली सात प्रक्रियाओं का सुफल है। एकीकरण की प्रथम प्रक्रिया १९४८ से प्रारम्भ हुई जिसमें अलवर, भरतपुर, धौलपुर एवं करौली की रियासतें एकत्र हुईं, जिससे एक एकीकृत स्वरुप बना जो कालान्तर में बृहत्तर राजस्थान का अंग बना, इस एकीकृत राज्य का उद्घाटन तत्कालीन केंद्रीय खान और ऊर्जा मंत्री एन. वी. गाडगिल ने किया एवं इसके मुख्यमंत्री बने शोभाराम।

सरदार पटेल ने किया 'राजस्थान' का उद्घाटन 30 मार्च 1949 को हुआ था 'राजस्थान' राज्य का गठन

अन्य रियासतों के बीच भी एकीकरण की प्रक्रिया चल रही थी, जिसके परिणामस्वरुप २५ मार्च १९४८ को दूसरा एकीकृत स्वरुप सामने आया, जब दक्षिण-पूर्व की ९ रियासतों तथा बांसवाड़ा, बून्दी, डूंगरपुर, झालावाड़, किशनगढ़, कोटा, प्रतापगढ़, शाहपुरा एवं टौंक ने आपस में मिलकर अपने को 'राजस्थान यूनियन' नाम दिया जिसकी राजधानी 'कोटा' बनी। तीसरे चरण में १८ अप्रैल १९४८ को मेवाड़ के भी इसमें सम्मिलित हो जाने से इसका 'संयुक्त राजस्थान' नामकरण हुआ, जिसकी राजधानी उदयपुर बनी एवं माणिक्यलाल वर्मा इसके मुख्यमंत्री बने। तत्पश्चात 'मतस्य संघ' जो एकीकरण की प्रक्रिया का प्रथम पुष्प था, १५ मई १९४९ ई. को राजस्थान में शामिल हो गया, यह क्रम आगे भी चलता रहा एवं छठे क्रम के चरण में १ नवम्बर, १९५६ ई. को राज्य पुर्नगठन आयोग की सिफारिश पर आबू एवं अजमेर भी इसमें सम्मिलित कर दिए गए, इसी के साथ मध्य भारत के मंदसौर जिले की मानपुरा तहसील का सुहेल टप्पा ग्राम भी राजस्थान में शामिल कर दिया गया, जबकि झालावाड़ जिले का सिरोज उपजिला मध्यप्रदेश को दे दिया गया, इस प्रकार सात चरणों में 'राजस्थान' का स्वरुप बना।

With Best Compliments from
S.N. BAJAJ
Mob. : 93225 09225
Ankit BAJAJ
Mob. : 98203 27444
Merico Filament Ltd.
Mfgrs of : Exclusive Suiting, Shirting & Fancy Yarn
Shilpa Diamonds
Mfgrs of : Exclusive Designs of Diamond Colour Jewellery
Pineapple Fashions Pvt. Ltd.
S.G.S.C. Textiles Pvt. Ltd.
Bhiwandi Office : R. No.102, 1st Flr, H. No.73, Pandurang Ayre Smrti Bldg, Opp. Payal Talkies, Dhamankar Naka, Bhiwandi - 421 302. Tel. : 02522 - 225087 / 233549
Shilpa Diamond
Mob : 9820677100

BALAJI EMPIRE

2 & 3 BHK
RESIDENTIAL FLATS

With Best Compliments From
Navratan Omprakash Damani

Project by : DAMANI

Damani Ventures
Balaji Empire, Plot No.44, S.No. 279/1 To 3
Sentosa Home City Near Fellowship Mission School,
Silvassa Road, Vapi, Gujarat - 396 195

RERA Number: PR/GJ/VALSAD/PARDI/Offices/RAA10622/030922

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर सभी राजस्थान वासियों को हार्दिक शुभकामनायें

Krishna Kumar Kothari
Mob: 98925 25468

Ashok Kumar Sood
Mob: 98192 95060

Sunil Chander Sood
Mob: 98193 69600

B.S. & SONS

Manufacturers Of
House Cleaning Products
Brooms, Duster, Wiper, Scrubber

241/242, Gala Ind. Estate, Dumping Road,
Mulund West, Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400080
Tel: 022-25694239, 25641342 Email : bssons@rediffmail.com

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर
सभी राजस्थान वासियों को
हार्दिक शुभकामनायें

Vinod Jugaraj Lodha (Jain)
Mob.:- 9324615767

Sagar Cottton Mills
Mfg. of Dyed Rubia, Fancy & Cotton Cotton Fabrics
8, Malhar Rao Wadi, 1 Floor, Dadi Seth Agyari Lane,
Kalbadevi Road, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400002
Mob.:- 8928792049 | e-mail:- sagarcottonmills2007@gmail.com

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

Naresh J. Jain (Lodha)
Mob.:- 9820285701
Member Zonal Manager's Club for Agents
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA MDRT
Off.: Br.No. 88J, Madhav Nagar C.H.S., Bhavani Shankar Road,
Dadar West, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400028

Varshit Lodha
Propiter
Mob.:- 8879263828
7977218707

SWASTIK FAB TEX
Godown No.G-302,3Rd Floor,
Dharam Era, Ajur Mankoli Road,
Bhiwandi, Dist-Thane,
Maharashtra, Bharat-42102

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर
सभी राजस्थान वासियों को
हार्दिक शुभकामनायें

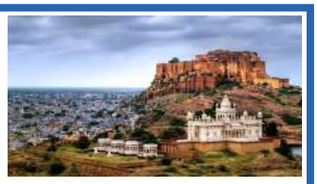

DINESH KANORIA
Chairman

KANORIA
CHEMBOND PRIVATE LIMITED

MANUFATURING AND EXPORTER OF POLYESTER RESIN, SATURATED, UNSATURATED, PURE PHENOLIC RESIN, ALKYL PHENOLIC RESIN

Office
906, Unique Tower, Gaiwadi Industrial Estate, Off S.V. Road, Goregaon West,
Mumbai, Maharashtra, Bharat 400062 Ph: +91 22 28776126
TelFax : +91 22 66963120 Email: resin@kanorias.com Web: www.kanorias.com

Factory
40/1/1, Alman Village Road, Off Wada Manor Road, Village Varle,
Wada, Dist. Thane, Maharashtra, Bharat - 421303

'अक्षय तृतीया' या आखा तीज वैशाख मास में शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को कहते हैं। पौराणिक ग्रंथों के अनुसार इस दिन जो भी शुभ कार्य किये जाते हैं, उनका अक्षय फल मिलता है, इसी कारण इसे 'अक्षय तृतीया' कहा जाता है, वैसे तो सभी बारह महीनों की शुक्ल पक्षीय तृतीया शुभ होती है, किंतु वैशाख माह की तिथि स्वयंसिद्ध मुहूर्तों में मानी गई है।

महत्वः 'अक्षय तृतीया' का सर्वसिद्ध मुहूर्त के रूप में भी विशेष महत्व है। मान्यता यह है कि इस दिन बिना कोई पंचांग देखे, कोई भी शुभ व मांगलिक कार्य जैसे विवाह, गृह-प्रवेश, वस्त्र-आभूषणों की खरीददारी या घर, भूखंड, वाहन आदि की खरीददारी से संबंधित कार्य किए जा सकते हैं। नवीन वस्त्र, आभूषण आदि धारण करने और नई संस्था, समाज आदि की स्थापना या उदघाटन का कार्य श्रेष्ठ माना जाता है। पुराणों में लिखा है कि इस दिन पितरों

को किया गया तर्पण तथा पिन्डदान अथवा किसी और प्रकार का दान, अक्षय फल प्रदान करता है, इस दिन गंगा स्नान करने से तथा भगवत पूजन से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, यहाँ तक की इस दिन किया गया जप, तप, हवन, स्वाध्याय और दान भी अक्षय हो जाता है, यह तिथि यदि सोमवार तथा रोहिणी नक्षत्र के दिन आए तो इस दिन किए गए दान, जप-तप का फल बहुत अधिक बढ़ जाता है, इसके अतिरिक्त यदि यह तृतीया मध्याह्न से पहले शुरू होकर प्रदोष काल तक रहे तो बहुत ही श्रेष्ठ मानी जाती है, यह भी माना जाता है कि आज के दिन मनुष्य अपने या स्वजनों द्वारा किए गए जाने-अनजाने अपराधों की सच्चे मन से ईश्वर से क्षमा प्रार्थना करे तो भगवान उसके अपराधों को क्षमा कर देते हैं और उसे सदगुण प्रदान करते हैं, अतः आज के दिन अपने दुर्गुणों को भगवान के चरणों में सदा के लिए अर्पित कर उनसे सदगुणों का वरदान माँगने की परंपरा भी है।

सनातन धर्म में महत्वः 'अक्षय तृतीया' के दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर समुद्र या गंगा स्नान करने के बाद भगवान विष्णु की शांत चित्त होकर विधि विधान से पूजा करने का प्रावधान है। नैवेद्य में जौ या गेहूँ का सत्तू, ककड़ी और चने की दाल अर्पित किया जाता है, तत्पश्चात फल, फूल, बरतन तथा वस्त्र आदि दान करके ब्राह्मणों को दक्षिणा दी जाती है। ब्राह्मण को भोजन करवाना कल्याणकारी समझा जाता है। मान्यता यह है कि इस दिन सत्तू अवश्य खाना चाहिए तथा नए वस्त्र और आभूषण पहनने चाहिए। गौ, भूमि, स्वर्ण पात्र इत्यादि का दान भी इस दिन किया जाता है। यह तिथि वसंत ऋतु के अंत और ग्रीष्म ऋतु का प्रारंभ का दिन भी है इसलिए 'अक्षय तृतीया' के दिन जल से भरे घड़े, कुल्हड़, सकोरे, पंखे, खड़ाऊँ, छाता, चावल, नमक, घी, खरबूजा, ककड़ी, चीनी, साग, इमली, सत्तू आदि गरमी में लाभकारी वस्तुओं का दान पुण्यकारी माना गया है, इस दान के पीछे यह लोक विश्वास है कि इस दिन जिन-जिन वस्तुओं का दान किया जाएगा, वे समस्त वस्तुएँ स्वर्ग या अगले जन्म में प्राप्त होगी, इस दिन लक्ष्मी नारायण की पूजा सफेद कमल अथवा सफेद गुलाब या पीले गुलाब से करना चाहिये।

'सर्वत्र शुक्ल पुष्पाणि प्रशस्तानि सदार्चने।
दानकाले च सर्वत्र मंत्र मेत मुदीरयेत।।

अर्थात सभी महीनों की तृतीया में सफेद पुष्प से किया गया पूजन प्रशंसनीय माना गया है। ऐसी भी मान्यता है कि 'अक्षय तृतीया' पर अपने अच्छे आचरण और सद्गुणों से दूसरों का आशीर्वाद लेना अक्षय रहता है। भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा विशेष फलदायी मानी गई है, इस दिन किया गया आचरण और सत्कर्म अक्षय रहता है।

भविष्य पुराण के अनुसार इस तिथि की युगादि तिथियों में गणना होती है, सतयुग और त्रेता युग का प्रारंभ इसी तिथि से हुआ है। भगवान विष्णु ने नर-नारायण, हयग्रीव और परशुराम जी का अवतरण भी इसी तिथि को हुआ था। ब्रह्माजी के पुत्र अक्षय कुमार का आविर्भाव भी इसी दिन हुआ था, इस दिन श्री बद्रीनाथ जी की प्रतिमा स्थापित कर पूजा की जाती है और श्री लक्ष्मी नारायण के दर्शन किए जाते हैं। प्रसिद्ध तीर्थ स्थल बद्रीनारायण के कपाट भी इसी तिथि से पुनः खुलते हैं। वृंदावन स्थित श्री बांके बिहारी जी मन्दिर में भी केवल इसी दिन श्री विग्रह के चरण दर्शन होते हैं, अन्यथा वे पूरे वर्ष वस्त्रों से ढके रहते हैं। यह तृतीया ४१ घटी २१ पल होती है तथा धर्म सिंधु एवं निर्णय सिंधु ग्रंथ के अनुसार अक्षय तृतीया ६ घटी से अधिक होनी चाहिए। पद्म पुराण के अनुसार इस तृतीया को अपराह्न व्यापिनी मानना चाहिए, इसी दिन महाभारत का युद्ध समाप्त हुआ था और द्वापर युग का समापन भी इसी दिन हुआ था, ऐसी मान्यता है कि इस दिन से प्रारम्भ किए गए कार्य अथवा इस दिन को किए गए दान का कभी भी क्षय नहीं होता।

मदनरत्न के अनुसारः

अस्यां तिथौ क्षयमुर्पति हुतं न दत्तं। तेनाक्षयेति कथिता मुनिभिस्तृतीया
उद्दिष्य दैवतपितृन्क्रियते मनुष्यैः। तत् च अक्षयं भवति भारत सर्वमेव

शेष पृष्ठ २९ पर...

महेश बैंक®
ESTD. 1978

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर सभी राजस्थान वासियों को हार्दिक शुभकामनायें

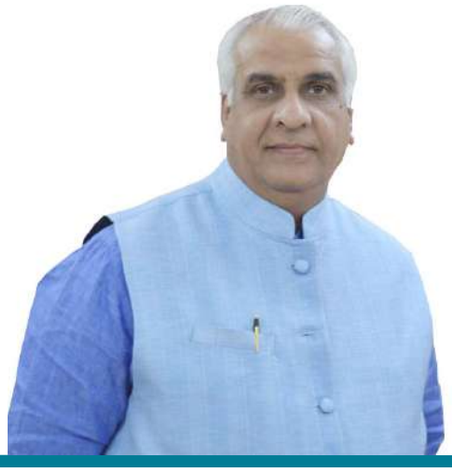

Ajeet Kumar Varma
Deputy General Manager
MAHESH BANK HYDERABAD
Mob.:- 98490 50742

House No. 4-4-43 / 46, Sultan Bazar,
Hyderabad, Telangana, Bharat-500 095

पृष्ठ २८ से... **प्रचलित कथाएँ**

'अक्षय तृतीया' की अनेक व्रत कथाएँ प्रचलित हैं, ऐसी ही एक कथा के अनुसार प्राचीन काल में एक धर्मदास नामक वैश्य था, उसको सदाचार, देव और ब्राह्मणों के प्रति काफी श्रद्धा थी, इस व्रत के महात्म्य को सुनने के पश्चात उसने इस पर्व के आने पर गंगा में स्नान करके विधिपूर्वक देवी-देवताओं की पूजा की। व्रत के दिन स्वर्ण, वस्त्र तथा दिव्य वस्तुएँ ब्राह्मणों को दान में दी। अनेक रोगों से ग्रस्त तथा वृद्ध होने के बावजूद भी उसने उपवास करके धर्म-कर्म और दान पुण्य किया, यही दूसरे जन्म में कुशावती का राजा बना। कहते हैं कि 'अक्षय तृतीया' के दिन किए गए दान व पूजन के कारण वह बहुत धनी प्रतापी बना, वह इतना धनी और प्रतापी राजा था कि त्रिदेव तक उसके दरबार में 'अक्षय तृतीया' के दिन ब्राह्मण का वेष धारण कर उसके महायज्ञ में शामिल होते थे। अपनी श्रद्धा और भक्ति का उसे कभी घमंड नहीं हुआ और महान वैभवशाली होने के बावजूद भी वह धर्म मार्ग से विचलित नहीं हुआ। माना जाता है कि यही राजा आगे चलकर राजा चंद्रगुप्त के रूप में पैदा हुआ।

स्कंद पुराण और भविष्य पुराण में उल्लेख है कि वैशाख शुक्ल पक्ष की तृतीया को रेणुका के गर्भ से भगवान विष्णु ने परशुराम रूप में जन्म लिया। कोंकण और चिप्लून के परशुराम मंदिरों में इस तिथि को परशुराम जयंती बड़ी धूमधाम से मनाई जाती है। दक्षिण भारत में परशुराम जयंती को विशेष महत्व दिया जाता है। परशुराम जयंती होने के कारण इस तिथि में भगवान परशुराम के आविर्भाव की कथा भी सुनी जाती है, इस दिन परशुराम जी की पूजा कर उन्हें अर्घ्य देने का बड़ा महात्म्य माना गया है। सौभाग्यवती स्त्रियाँ और क्वारी कन्याएँ इस दिन गौरी-पूजा कर मिठाई, फल और भीगे हुए चने बाँटती हैं, गौरी-पार्वती की पूजा

करके धातु या मिट्टी के कलश में जल, फल, फूल, तिल, अन्न आदि लेकर दान करती हैं। मान्यता है कि इसी दिन जन्म से ब्राह्मण और कर्म से क्षत्रिय भृगुवंशी परशुराम का जन्म हुआ था। एक कथा के अनुसार परशुराम की माता और विश्वामित्र की माता के पूजन के बाद प्रसाद देते समय ऋषि ने प्रसाद बदल कर दे दिया था, जिसके प्रभाव से परशुराम ब्राह्मण होते हुए भी क्षत्रिय स्वभाव के हुए और क्षत्रिय पुत्र होने के बाद भी विश्वामित्र ब्रह्मर्षि कहलाए। उल्लेख है कि सीता स्वयंवर के समय परशुराम जी अपना धनुष बाण श्री राम को समर्पित कर संन्यासी का जीवन बिताने अन्यत्र चले गए, अपने साथ एक फरसा रखते थे तभी उनका नाम परशुराम पड़ा।

शेष पृष्ठ ३० पर...

पृष्ठ २९ से... **जैन धर्म में अक्षय-तृतीया :**

'अक्षय तृतीया' जैन धर्मावलम्बियों का धार्मिक पर्व है, इस दिन जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव ने एक वर्ष की पूर्ण तपस्या करने के पश्चात इक्षु (शोरडी-गन्ने) रस से पारायण किया था। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ ने सत्य व अहिंसा का प्रचार करने एवं अपने कर्म बंधनों को तोड़ने के लिए संसार के भौतिक एवं पारिवारिक सुखों का त्याग कर जैन वैराग्य अंगीकार कर लिया था। सत्य और अहिंसा के प्रचार करते-करते आदिनाथ प्रभु हस्तिनापुर गजपुर पधारे जहाँ इनके पौत्र सोमयश का शासन था। प्रभु का आगमन सुनकर सम्पूर्ण नगर दर्शनार्थ उमड़ पड़ा। सोमप्रभु के पुत्र राजकुमार श्रेयांस कुमार ने प्रभु को देखकर उसने आदिनाथ को पहचान लिया और तत्काल शुद्ध आहार के रूप में प्रभु को गन्ने का रस दिया, जिससे आदिनाथ ने व्रत का पारायण किया। जैन धर्मावलंबियों का मानना है कि गन्ने के रस को इक्षुरस भी कहते हैं, इस कारण यह दिन इक्षु तृतीया एवं अक्षय तृतीया के नाम से विख्यात हो गया।

भगवान श्री आदिनाथ ने लगभग ४०० दिवस की तपस्या के पश्चात पारायण किया था। यह लंबी तपस्या एक वर्ष से अधिक समय की थी अत: जैन धर्म में इसे वर्षीतप से संबोधित किया जाता है। आज भी जैन धर्मावलंबी वर्षीतप की आराधना कर अपने को धन्य समझते हैं, यह तपस्या प्रति वर्ष कार्तिक के कृष्ण पक्ष की अष्टमी से आरम्भ होती है और दूसरे वर्ष वैशाख के शुक्लपक्ष की अक्षय तृतीया के दिन पारायण कर पूर्ण की जाती है।

तपस्या आरंभ करने से पूर्व इस बात का पूर्ण ध्यान रखा जाता है कि प्रति मास की चौदस को उपवास करना आवश्यक होता है। इस प्रकार का वर्षीतप करीबन १३ मास और दस दिन का हो जाता है। उपवास में केवल गर्म पानी का सेवन किया जाता है। भारत वर्ष में इस प्रकार की वर्षी तपश्चर्या करने वालों की संख्या हज़ारों तक पहुँच जाती है। यह तपस्या धार्मिक दृष्टिकोण से अन्यक्त ही महत्त्वपूर्ण है, वहीं आरोग्य जीवन बिताने के लिए भी उपयोगी है। संयम जीवनयापन करने के लिए इस प्रकार की धार्मिक क्रिया करने से मन को शान्त, विचारों में शुद्धता,

तीर्थंकर आदिनाथ को प्रथम आहार देते राजा श्रेयांस (चित्र- अजमेर जैन मन्दिर)

धार्मिक प्रवृत्रियों में रुचि और कर्मों को काटने में सहयोग मिलता है, इसी कारण इस अक्षय तृतीया का जैन धर्म में विशेष धार्मिक महत्व समझा जाता है। मन, वचन एवं श्रद्धा से वर्षीतप करने वाले को महान समझा जाता है।

संस्कृति में इस दिन से शादी-ब्याह करने की शुरुआत हो जाती है। बड़े-बुजुर्ग अपने पुत्र-पुत्रियों के लगन का मांगलिक कार्य आरंभ कर देते हैं। अनेक स्थानों पर छोटे बच्चे भी पूरी रीति-रिवाज के साथ अपने गुड्डा-गुड़िया का विवाह रचाते हैं, इस प्रकार गाँवों में बच्चे सामाजिक कार्य व्यवहारों को स्वयं सीखते व आत्मसात करते हैं। कई जगह तो परिवार के साथ-साथ पूरा का पूरा गाँव भी बच्चों के द्वारा रचे गए वैवाहिक कार्यक्रमों में सम्मिलित हो जाता है, इसलिए कहा जा सकता है कि 'अक्षय तृतीया' सामाजिक व सांस्कृतिक शिक्षा का अनूठा त्यौहार है। कृषक समुदाय में इस दिन एकत्रित होकर आने वाले वर्ष के आगमन, कृषि पैदावार आदि के शगुन देखते हैं। ऐसा विश्वास है कि इस दिन जो सगुन कृषकों को मिलते हैं, वे शत-प्रतिशत सत्य होते हैं। राजपूत समुदाय में आने वाला वर्ष सुखमय हो, इसलिए इस दिन शिकार पर जाने की परंपरा है।

विभिन्न प्रांतों में अक्षय तृतीया:

बुंदेलखंड में अक्षय तृतीया से प्रारंभ होकर पूर्णिमा तक बडी धूमधाम से उत्सव मनाया जाता है, जिसमें कुँवारी कन्याएँ अपने भाई, पिता तथा गाँव-घर और कुटुंब के लोगों को शगुन बाँटती हैं और गीत गाती हैं। अक्षय तृतीया को राजस्थान में वर्षा के लिए शगुन निकाला जाता है, वर्षा की कामना की जाती है, लड़कियाँ झुंड बनाकर घर-घर जाकर शगुन गीत गाती हैं और लड़के पतंग उड़ाते हैं। यहाँ इस दिन सात तरह के अन्नों से पूजा की जाती है। मालवा में नए घड़े के ऊपर खरबूज़ा और आम के पल्लव रख कर पूजा होती है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन कृषि कार्य का आरंभ किसानों को समृद्धि देता है।

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर
सभी राजस्थान वासियों को
हार्दिक शुभकामनायें

Darshan Kiranraj Talesra
Mob: 9773485102

OSWAL® Gifts & Crockery

Shop No. 5/6, Laxmi, Chhaya, Bhabhai Naka Corner, L.T. Road, Borivali West, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400092

Kiranraj Roopchandji Talesra
Mob: 9819722051

OSWAL® Steel Centre

Dealers in: Every Kinds of Kitchen & Canteen Equipment, Domestic Appliances & Prersentation Articles & Stainless Steel Wares

Shop No.18, Laxmi, Chhaya, Bhabhai Naka Corner, L.T. Road, Borivali West, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400092
Tel: 8657401408/ 28917333 E-mail: oswalsteel18@rediffmail.com

Mahesh Roopchandji Talesra
Mob: 9820695341

OSWAL Appliances

Dealers in: Every Kinds of Home Appliances

Shop No. 4, Laxmi, Chhaya, Bhabhai Naka Corner, L.T. Road, Borivali West, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400092
Email: oswalappliances4@gmail.com,
Website: www.oswalappliances.in, Ph: 28933966, 8104535442

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर सभी राजस्थान वासियों को हार्दिक शुभकामनायें

Rohitash Jangid
भ्रमणध्वनि: 9372223330

Sunil Jangid
भ्रमणध्वनि: 9833091237

Subhash Jangid
भ्रमणध्वनि: 9799750002

Apex™
SPORT SURFACES (I) PVT. LTD.

DIN ISO 9001 2015 CERTIFIED EN 14904 LABOSPORT

H.O.: 305 &306, A-Wing, Aditya Heritage, Behind Jina House, Om Nagar, Near J B Nagar, Andheri East, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400099, Ph: 9987967036
*****
Factory:Plot No 14 " Silver Soil Industrial Park" Anantpura Main Jaipur, Bikaner Highway Chomu, Jaipur, Rajasthan, Bharat - 303807, Ph: 9799750002
www.apexsportsurfaces.com

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर सभी राजस्थान वासियों को
हार्दिक शुभकामनायें

Kishan Jalan
Mob. 9434557062

Mayurakshi Sarani, Sainthia,
Birbhum, West Bengal, Bharat- 731234

अपार जन समुदाय के समक्ष श्री जेजेटी का विशेष दीक्षांत समारोह संपन्न

मुंबई: श्री जेजेटी यूनिवर्सिटी के इतिहास में पहली बार दो लाख से अधिक विशाल जन समुदाय के सामने विशेष 'दीक्षांत समारोह' नई मुंबई के सिडको प्रदर्शनी ग्राउंड में संपन्न हुआ, कार्यक्रम में महाराष्ट्र राज्य के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलाधिपति डॉ विनोद टिबड़ेवाला ने की, उन्होंने सभी उपस्थित अतिथि एवं विशाल जन समुदाय का स्वागत किया।

विशेष दीक्षांत समारोह में अलीबाग के प्रख्यात समाजसेवक सचिन दादा धर्माधिकारी को उनके सेवाकार्यों एवं सामाजिक उत्थान के लिए किए गए कार्यों के लिए उन्हें मानद डी.लिट. की डिग्री प्रदान की गई। विश्वविद्यालय द्वारा अभी तक मानद डी.लिट. की डिग्री देश के विभिन्न राज्यों के बीस से अधिक राज्यपालों को प्रदान की गई है, इसके अलावा सामाजिक उत्थान में किए गए असाधारण विशेष सेवा कार्यों को देखते हुए कुछ अन्य सेवा कर्मियों को भी यह मानद डिग्री प्रदान की गई है।

समारोह में पदमश्री अप्पासाहेब धर्माधिकारी, मंत्री मंगल प्रभात लोढ़ा, मंत्री कपिल पाटील, नई मुंबई के सी पी, नई मुंबई महानगरपालिका के कमिश्नर, सिडकों के कमिश्नर, सांसद पूनम महाजन एवं समाज के अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति विशेष अतिथि के रुप में उपस्थित थे।

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने विशाल जनसमुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि सचिन दादा धर्माधिकारी को डी.लिट. की डिग्री प्रदान करने से श्री जेजेटी विश्वविद्यालय की गरिमा में वृद्धि हुई है। संस्था के अध्यक्ष डा. विनोदजी ने बताया कि धर्माधिकारी परिवार अब श्री जेजेटी यूनिवर्सिटी का हिस्सा हो गया है। उपस्थित अपार जन समुदाय को नियंत्रित करने के लिए ट्रैफिक विभाग द्वारा विशेष नियंत्रण की व्यवस्था की गई थी, धर्माधिकारी अनुयायी परिवार के पांच हजार से भी अधिक स्वयंसेवकों की टीम ने यातायात के नियंत्रण व्यवस्था में मदद की। समारोह में रमाकांत टिबड़ेवाला, बाबूलाल ढंढारिया, उमा विनोद टिबड़ेवाला, विशाल टिबड़ेवाला, उमा विशाल टिबड़ेवाला, डॉ एम.जी. श्रीहट्टी, डॉ वी.एस. वलेचा, डॉ. दीनदयाल मुरारका, रामअवतार अग्रवाल, डॉ दीनानाथ केड़िया, कमल काबरा, मनमोहन बागड़ी, विशाल खेडेकर, डॉ अंजू सिंह, डॉ वनमाली चतुर्वेदी एवं अन्य ट्रस्टी गण, विभिन्न विभागों के डीन एवं काउंसिल सदस्य उपस्थित थे।

निर्मल गंगा चेतना मंच द्वारा गंगा आरती का आयोजन

कोलकाता: सनातन समाज के नववर्ष की शुरूआत पर निर्मल गंगा चेतना मंच के द्वारा संपूर्ण विधि-विधान व नृत्य नाटिका के साथ गंगा आरती का आयोजन भारत का एक राज्य प. बंगाल की राजधानी कोलकात्ता में स्थित भूतनाथ घाट पर किया गया। आरती के पहले शोभायात्रा का आयोजन किया गया था। भक्तगण को ऐसा लग रहा था कि वे बनारस के घाट पर हों। कार्यक्रम को सफल बनाने में निर्मल गंगा चेतना मंच के संस्थापक किशन किल्ला, अध्यक्ष कुसुम मोदी, महासचिव संदीप चौधरी, शंभू मोदी, उपाध्यक्ष संजय मंडल, श्याम अग्रवाल, संजय सिंगला, अनिता बूबना, नीतू टेकडीवाल, शशि अग्रवाल, अजीत गुप्ता, नीतू टिबरेवाल आदि रहे।

विशिष्ठ समाजसेवियों में बिजय गुर्जरवासिया, शंकरलाल कारीवाल, प्रदीप गुप्ता, पूर्णिमा कोठारी, ओम प्रकाश अग्रवाल, लक्ष्मी तिवारी की उपस्थिति रही। 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' संस्थान से कैमरा मैन रवि शर्मा व पत्रकार पिंकी मेडतिया ने सभी का साक्षात्कार किया और निवेदन किया कि अपने देश को भारत ही बोलें, इंडिया हम क्यों बोलें जो अंग्रेजों ने हम पर थोपा है, सभी ने 'जय भारत' कहकर एक दूसरे का अभिवादन भी किया।

वैश्य एकता दिवस पर देश की सर्वांगीण प्रगति का संकल्प

कोलकाता: अंतर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन की पश्चिम बंगाल शाखा के तत्वावधान में महासम्मेलन के संस्थापक व पूर्व सांसद स्व. रामदास अग्रवाल की स्मृति में हावड़ा मैदान में वैश्य एकता दिवस व हिन्दू नववर्ष विक्रम संवत २०८० को धूमधाम से मनाया गया।

इस अवसर पर महासम्मेलन की पश्चिम बंगाल के अध्यक्ष सुशील चौधरी, महासचिव प्रदीप लुहारीवाला, कोषाध्यक्ष अमित धनानिया, उपाध्यक्ष रामकिशोर लुहारीवाला, सहसचिव सतीश अग्रवाल सहित मुख्य अतिथि के रूप में नेपाल कंसुलेट के वाणिज्यिक महादूत ईश्वर राज पौड्याल, महासम्मेलन के पूर्व राज्य अध्यक्ष विजय गुजरवासिया सहित हावड़ा के अनेकों सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित थे। अतिथियों ने 'वीणापाणि' नामक स्थानीय आंगनवाड़ी के बच्चों को उपहार स्वरूप लेखन सामग्रियां बांटी, हावड़ा शाखा का गठन भी किया गया, जिसमें सुरेश अग्रवाल को अध्यक्ष, सुनील जायसवाल को सचिव एवं राजेश ककरानिया को कोषाध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया।

अपने संबोधन में नेपाल के कंसुलेट जनरल ने अंतर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन के कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि एकता और पारदर्शिता से ही सामाजिक बंधन मजबूत होता है।

पश्चिम बंगाल के अध्यक्ष सुशील चौधरी ने महासम्मेलन की राष्ट्रीय गतिविधियों का ब्यौरा देते हुए कहा कि वैश्य संघबद्ध हों तभी देश का आर्थिक विकास संभव है। महासम्मेलन पूरे देश ही नहीं विदेशों में भी वैश्य समाज के लोगों की मदद करता रहा है। संकट के समय प्राणीमात्र की मदद के लिए महासम्मेलन सदैव तत्पर रहता है। शिक्षा, चिकित्सा के क्षेत्र में वैश्य समाज के प्रतिभावान छात्रों को हरसंभव सहयोग देकर महासम्मेलन ने क्रांतिकारी कार्य किया है।

महासचिव प्रदीप लुहारीवाला ने युवाओं को आगे आने का आह्वान करते हुए कहा कि बदलते राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में वैश्य समाज को बहुत गंभीरता से अपनी भूमिका निर्धारित करनी होगी। पूर्व अध्यक्ष विजय गुजरवासिया ने कहा कि पश्चिम बंगाल में वैश्य समाज को बड़ी भूमिका निभानी होगी एवं इसे औद्योगिक रूप से समृद्ध करना होगा।

हावड़ा के प्रमुख उद्यमी और सामाजिक क्षेत्र के लोगों में प्रमुख रूप से राजकुमार जायसवाल, विकास जायसवाल, मुकेश सिंघानिया, मनोज जायसवाल, लक्खी जायसवाल, अशोक अग्रवाल, भोला वर्मा, अनिल जायसवाल, कमल बैद, अनिल सिंह, जय प्रकाश गुप्ता सहित राजेन्द्र प्रसाद सुरेका, रवि छापड़िया, सतीश अग्रवाल, कुशल अग्रवाल आदि की सक्रिय भागीदारी से आयोजन सफल रहा। **- मेरा**

दाधीच महिला समिति ने गणगौर पर्व महोत्सव के रूप में मनाया

कोलकाता: श्री दाधीच परिषद कोलकाता महिला समिति ने १७ मार्च २०२३ को गणगौर महोत्सव आयोजित किया गया। १०० से ज्यादा महिलाओं और बालिकाओं ने अति उत्साह से भाग लिया। प्रत्येक वर्ष की तरह ही इस वर्ष भी बड़े हर्ष और उल्लास के साथ दाधीच परिषद की महिला इकाई द्वारा गणगौर महोत्सव मनाया गया, कार्यक्रम में राजस्थानी गीत, नृत्य के साथ मां गवरजा का स्वागत किया गया और मधुर गीत 'खेलण दो गणगौर भंवर म्हाने पूजण दो दिन चार', की मधुर ध्वनि के साथ सभागार में प्रवेश कराया और सभी बहिनों ने मिलकर आरती की।

इस शुभ अवसर पर समाज की प्रतिष्ठित समाजसेवी कामिनी तिवाड़ी व श्रेया पांडे को अतिथि बतौर आमंत्रित किया गया था व सांस्कृतिक कार्यक्रम गणेश वंदना से शुरू किया गया। युवति व महिलाओं ने अपने सोलश्रृंगार के साथ नृत्य, गायन और ईसर गणगौर के साथ फूलों की झमाझम होली खेली। समाज की मेधावी बेटी अंशु शर्मा एल एल बी की पढाई में स्वर्ण पदक हासिल करने पर दाधीच परिषद महिला इकाई ने सम्मानित किया।

कार्यक्रम में सभी उपस्थित महानुभावों को पुरस्कार दिया गया। सभी को सिंजारा कराया गया। कार्यक्रम की सफलता महिला इकाई वर्षों से करती आ रही है। गणगौर महोत्सव को सफल बनाने में मुख्य भूमिका रेणु मिश्रा, संतोष व्यास, अल्का काकड़ा, मनीषा आसोपा, नीता आसोपा,रजनी व्यास, ज्योति शर्मा, प्रिया व्यास, नीति जाजोदिया, मंजु ओझा, अंजु शर्मा, सुमन शर्मा, संगीता व्यास, प्रेमलता मिश्रा, इशिता शर्मा आदि ने निभाई।

- आर.के. व्यास, कोलकाता

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर मेरा राजस्थान के पाठकों को हार्दिक शुभकामनायें

BHARAT GURJAR
Mob. :- 9224162009
Ex. Mun. Councillor
Ex. President-Bharatiya Janta Yuva Morcha Mumbai
Ex. Sec Mumbai BJP
7 Gazder Street, Chirabazar, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400002
email:- bharatvgurjar@gmail.com

सुदीप सुरेंद्र भट्टड
अध्यक्ष, सातारा जिल्हा माहेश्वरी सभा
Mob. 9923038380
२४०, भवानी पेठ, राजपथ, सातारा, महाराष्ट्र, भारत-४१५००२

किरणदेवी सराफ ट्रस्ट द्वारा चिकित्सिय उपकरणों का सहयोग

महावीरप्रसाद घ. सराफ ने किरणदेवी सराफ ट्रस्ट के माध्यम से ब्रह्मकुमारी संचालित बीएसईएस अस्पताल, अंधेरी पश्चिम को रोग निदान के लिए दो चिकित्सिय मशीनों (Lithotripter & Defibrillator) का सहयोग दिया गया। दोनो उपकरणों का उद्घाटन सराफ जी की पुत्रवधु श्रीमती नीरा अशोक सराफ ने ब्रह्मकुमारी योगिनी दीदी जी, प्रभाबेन, मोहनभाई और अस्पताल के डॉक्टर्स एवं स्टाफ की उपस्थिति में किया गया।

भारत को 'BHARAT' ही बोलेंगे

जय भारत! आपणों राजस्थान

Remove **INDIA** Name From The Constitution

डॉ. सुशील पोद्दार
पूर्व सचिव, पटना सिटी मारवाड़ी सम्मेलन
फतेहपुर सीकरी निवासी-पटना प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३३४१०७६१६

सुशीलजी 'राजस्थान स्थापना दिवस' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि हमारे राजस्थान के कहने ही क्या, भले ही हम भारत का एक राज्य बिहार की राजधानी 'पटना' में बसे हों पर आज भी हमें राजस्थानी मिट्टी की सुगंध का आभास होता है, जब भी मैं अपने पैतृक निवास स्थल जाता हूं तो एक अलग ही अनुभव प्राप्त होता है। राजस्थान की संस्कृति, कला, खानपान, रीति-रिवाज आज भी प्रवासी राजस्थानी किसी न किसी रूप में संजोए हुए है। 'पटना' में राजस्थानी समाज की कई संस्थाएं विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से राजस्थानी संस्कृति को जीवित रखे हुए हैं। हमारा यह प्रयास रहना चाहिए कि हमारी आने वाली पीढ़ी 'राजस्थान' के मूल तत्व से जुड़ी रहे, अपनी नींव को ना भूले, उन्हें विभिन्न कार्यक्रमों में जोड़ा जाए, जिससे वे भी अपनी संस्कृति कला व विशेषताओं से जुड़े रहे।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि 'भारत' नाम ही हमारी पहचान है और रहनी चाहिए, इससे बढ़िया और कोई बात नहीं हो सकती। सुशीलजी मूलतः राजस्थान के 'फतेहपुर सीकरी' के निवासी हैं। आपका परिवार लगभग १२५ वर्षों से बिहार की राजधानी पटना में बसा हुआ है। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। यहां आपने एम.एससी. बायोलॉजी, पीएचडी, बीएड एवं डिप्लोमा इन नेचुरोपैथी की शिक्षा प्राप्त की है। पिछले ३५ वर्षों से प्रोग्रेसिव ऑफ़ एजुकेशन नामक शैक्षणिक संस्था का संचालन कर रहे हैं, साथ ही आप कई धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं जैसे रोटरी (पूर्व अध्यक्ष), बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, पटना सिटी शाखा (पूर्व सचिव), श्री नारायणी भक्त मंडल,पटना सिटी (अध्यक्ष), श्री राणीसती दादी मंदिर पटना न्यास (ट्रस्टी) पद पर जुड़े हैं। जय भारत!

संजय प्रेमराज मंत्री
संयुक्त मंत्री, महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी सभा
औरंगाबाद निवासी
भ्रमणध्वनि: ९८९०१६३३६९

संजयजी 'राजस्थान स्थापना दिवस' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि राजस्थान राजाओं का स्थत रहा है, आज भी राजवाड़े परिवार व उनकी हवेलियां राजस्थान को और सुशोभित करती है, यह वीरों और वीरांगनाओं की भूमि है, जिनका आज भी इतिहास में नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। हम महाराष्ट्र के 'औरंगाबाद' में बसे होने के बावजूद अपनी पैतृक भूमि से जुड़े हैं और हर राजस्थानी प्रवासी किसी न किसी रूप में अपनी पैतृक भूमि से जुड़ा हुआ है, हर समाज की अपनी कुलदेवी राजस्थान में ही स्थापित है, जिसके दर्शन के लिए प्रत्येक राजस्थानी कभी न कभी या हर वर्ष राजस्थान अवश्य जाता है, राजस्थान की बोली संस्कृति रहन-सहन खान-पान बहुत ही निराला है, जो हर किसी को अपनी और आकर्षित कर लेता है, हमारा यह प्रयास रहना चाहिए कि युवा पीढ़ी या आने वाली पीढ़ी भी हम अपने पैतृक भूमि को राजस्थानी संस्कृति संस्कारों व रीति रिवाजों से जोड़ के रखें और यह बहुत जरूरी भी है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि यह बहुत ही अच्छा अभियान है, अपने देश का नाम से सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए इसके अलावा और कोई नाम हमारे देश की पहचान नहीं बन सकता।

संजयजी मूलतः राजस्थान के जोधपुर जिले में स्थित 'कलावस' के निवासी हैं, आपकी जन्मभूमि अमरावती व कर्मभूमि औरंगाबाद है। औरंगाबाद आप हैंडलूम और होटल व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही कई सामाजिक संस्था में भी सक्रिय हैं। सकल मारवाड़ी युवा मंच औरंगाबाद व औरंगाबाद जिला माहेश्वरी युवा संगठन के संस्थापक अध्यक्ष हैं। अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के कार्यकारिणी सदस्य, महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी सभा के संयुक्त मंत्री, महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी युवा संगठन के पूर्व अध्यक्ष, महेश अर्बन को ऑपरेटिव बैंक औरंगाबाद के पूर्व संचालक, माहेश्वरी युवा दर्पण के संस्थापक संपादक, औरंगाबाद जिला माहेश्वरी युवा संगठन के संचालक, भारत विकास परिषद व महेश सेवा निधि महाराष्ट्र के सदस्य के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। आपके उत्कृष्ट सामाजिक कार्यों के लिए आपको कई सम्मान प्राप्त हुए हैं, जिनमें अखिल भारतीय माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रदेश अध्यक्ष, जयकिशन शिक्षण संस्था द्वारा भगवानबाबा समाज भूषण पुरस्कार, सकल जैन समाज औरंगाबाद जैन गौरव पुरस्कार, महाराष्ट्र प्रदेश मारवाड़ी युवा मंच द्वारा सर्वश्रेष्ठ शाखा अध्यक्ष व आशीर्वाद बहुउद्देशीय संस्था औरंगाबाद द्वारा सेवा गौरव पुरस्कार आदि कई पुरस्कार आपको प्राप्त हुए हैं। जय भारत!

भरत गुर्जर
पूर्व अध्यक्ष मुंबई प्रदेश भाजपा युवा मोर्चा
पाली निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९२२४१६२००९

भरतजी 'राजस्थान स्थापना दिवस' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि आजादी के पश्चात ३१ राजपूती रियासतों का गठन कर एक राज्य 'राजस्थान' की स्थापना की गई, रियासत में जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर, जयपुर जैसे कई रियासतें शामिल थी। 'राजस्थान स्थापना दिवस' पर्व हम राजस्थानिओं के लिए गर्व का विषय होना चाहिए, इसका गौरवशाली इतिहास है, यह सनातन संस्कृति की पहचान है, इसका महत्व सिर्फ किसी कालखंड विशेष तक सीमित नहीं रहा, इसका पूरा इतिहास ही विशेष महत्वपूर्ण है, सिर्फ १ दिन 'राजस्थान स्थापना दिवस' मना कर राजस्थानी लोक नृत्य आदि का कार्यक्रम कर 'राजस्थान स्थापना दिवस' का कार्यक्रम समाप्त कर देना, ऐसा नहीं होना चाहिए। लोगों तक 'राजस्थान' दिवस की महत्ता क्या है, 'राजस्थान' का गौरव क्या है, चित्तौड़गढ़ का महत्व, जयपुर का महत्व है, जोधपुर का महत्व है, हर रियासत की अपनी पहचान और गौरव है, यह सारी बातें अन्य राज्य के लोगों तक भी जानी चाहिए, हम तो अपने इतिहास को नहीं बता पा रहे हैं, 'राजस्थान दिवस' में यह होना चाहिए कि अपने राजस्थान के गौरवशाली इतिहास, संस्कृति, लोक कला को बताएं, जिस तरह महाराष्ट्र में छत्रपति शिवाजी महाराज का महत्व सबसे बड़ा है, उसी तरह राजस्थान में महाराणा प्रताप का महत्व होना चाहिए। कोल्हापुर के महल में शिवाजी महाराज की वंशावली लगी हुई है, जहां यह उल्लेख मिलता है कि शिवाजी के वंशज भी राजस्थान के ही निवासी थे, ऐसी कई बातों को लोगों तक पहुंचाना चाहिए। अनेक बातें हैं हमारे राजस्थान की, जिसका प्रचार-प्रसार हमें ही करना होगा, तभी वास्तविक रूप से 'राजस्थान दिवस' मनाना सार्थक होगा।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम तो 'भारत' ही रहना चाहिए, क्योंकि पूर्व काल से ही हमारे देश का नाम 'भारत' ही रहा है, हर रूप में यह 'भारत' ही रहना चाहिए, इंडिया तो अंग्रेजों द्वारा थोपा गया नाम है, INDIA नाम यह हमारी पहचान नहीं बन सकता।

भरतजी मूलतः राजस्थान के पाली जिले में स्थित 'बाली' तहसील के निवासी हैं। आपका परिवार कई वर्षों से मुंबई में बसा हुआ है, आपका जन्म राजस्थान में और संपूर्ण शिक्षा मुंबई में संपन्न हुई है। यहां आप कपड़ों के डीलरशिप व अन्य व्यवसाय से जुड़े हैं। भाजपा में मुंबई के कालबादेवी क्षेत्र के नगर सेवक भी रहे हैं। पूर्व में भाजपा युवा मोर्चा मुंबई प्रदेश के भी अध्यक्ष व भाजपा मुंबई प्रदेश के पूर्व सचिव रहे हैं, सामाजिक कार्यों में भी यथासंभव अपनी भूमिका निभा रहे हैं। जय भारत!

चांद रतन चांडक
सी.ए. व समाजसेवी
बीकानेर निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९३३१०२७६२६

चांदरतनजी 'राजस्थान स्थापना दिवस' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि हमारे राजस्थान का कहना ही क्या, इसे वीरों की धरती, वीरांगनाओं की भूमि और भामाशाह का स्थल कहा जाता है। राजस्थान के कण-कण में शौर्य और बलिदान मौजूद है, इसीलिए राजस्थान माटी के सपूत देश के कोने-कोने में बसे होने के बावजूद व्यवसाय के साथ-साथ समाज सेवा व धर्म सेवा के प्रति भी हमेशा तत्पर रहते हैं। राजस्थान एक ऐतिहासिक नगरी है जहां की संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन, सभ्यता, हर चीज में भिन्नता है और यही भिन्नता राजस्थान को और भी निराला बना देता है। यहां के लोगों के बीच आपसी भाईचारा, सहकार्य की भावना सर चढ़कर बोलती है। राजस्थान का प्रत्येक स्थान पुरातन हवेलियों, गढ़, कोठियों से भरा हुआ है जो आज भी अपनी भव्यता और संपन्नता को दर्शाते हैं। राजस्थानी धार्मिकता से भरा हुआ है इसीलिए प्रवासी कहीं भी रहे, अपने देवी-देवताओं के दर्शन के लिए जरूर आता है, साथ ही अपनी पैतृक भूमि से जुड़ा रहता है। प्रवासी राजस्थानी जहां भी बसे हों, आज भी वे अपनी संस्कृति, संस्कार और रीति-रिवाजों को पूरी तन्मयता के साथ निभा रहे हैं, ऐसी कई विशेषताएं हैं हमारे 'राजस्थान' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, यही हमारे देश का प्राचीन और ऐतिहासिक नाम है जो हमारे लिए गर्व का अनुभव कराता है, अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

चांदरतनजी मूलतः राजस्थान स्थित बीकानेर के निवासी हैं। आपका जन्म और बी.काम (हानर्स) तक की शिक्षा सम्बलपुर, उड़ीसा में सम्पन्न हुयी है। १९७८ से आप 'कोलकाता' में बसे हैं, आपने सीए और सीएस की शिक्षा 'कोलकाता' से ही ग्रहण की है। वर्तमान में सीए का कार्य कर रहे हैं, साथ ही आप धर्म और अध्यात्म में विशेष रूचि रखते हैं, इसीलिए विभिन्न धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रमों में अपनी विशेष भूमिका निभाते हैं। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के केन्द्रिय चुनाव समिति के पिछले तीन सत्र से सदस्य हैं, इनके नेतृत्व में अ.भा.मा. महासभा के अतिरिक्त पूर्वांचल के विभिन्न प्रदेशों (कोलकात्ता, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, बिहार, झारखण्ड) का आपने सफलतापूर्वक निर्वाचन कराया है। परम् श्रद्धेय आदरणीय श्रीमज्जगद्गुरुद्वाराचार्य श्री मलूकपीठाधीश्वर डॉ. श्री राजेन्द्र दास देवाचार्य जी महाराज द्वारा स्थापित श्री जड़खोर गोधाम, जड़खोर, तहसील-डीग, जिला-भरतपुर, राजस्थान के न्यासी एवं मंत्री के रूप में गो सेवा का कार्य कर रहे है। जड़खोर गोधाम वृज चौरासी कोस के परिक्रमा मार्ग में स्थित है एवं यहां पर कसाईयों से छुड़ाये गये हजारों वेद लक्षणा देशी गो वंश सुख पूर्वक निवास कर रहे हैं, साथ ही अन्य कई सामाजिक संस्थाओं में भी आप सक्रिय हैं। साल्टलेक सत्संग समिति से भी जुड़े हैं। जय भारत!

विनोद लोढ़ा
युवा समाजसेवी व व्यवसाई
घाणेराव निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३२४६१५७६७

विनोदजी 'राजस्थान स्थापना दिवस' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि मुझे गर्व है कि मैंने इस धरती पर जन्म लिया। राजस्थान भारत के अन्य राज्यों की तुलना में विशेष है, इसकी संस्कृति न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी अपनी पहचान बनाए हुए है, यह शूरवीरों की धरती है। राजस्थान संतों, महापुरुषों व देवी-देवताओं की भूमि कही जाती है, यहां के कई मंदिर अपनी पौराणिक महत्व के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं, जिनसे लोगों की अगाध श्रद्धा और भक्ति जुड़ी हुई है। घाणेराव में स्थित ११ जिन मंदिर, मूछाला महावीर तीर्थ, राणकरपुर तीर्थ, परशुराम महादेव मंदिर जैसे कई तीर्थ स्थान स्थित है हमारे राजस्थान में। राजस्थान के लोग जहां भी बसे हैं वहां उन्होंने उद्योग व्यापार के साथ-साथ धर्म और समाज सेवा में भी अपना उच्च मुकाम हासिल किया है, इसीलिए भारत में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं होगा, जहां राजस्थान समाज के संस्थाएं नहीं होंगी। देश की आर्थिक स्थिति में राजस्थानियों की अहम भूमिका है। 'राजस्थान' की धरती और यहां का वातावरण हमेशा से ही मुझे आकर्षित करता रहा है, इसीलिए जब भी समय मिलता है मैं राजस्थान पहुंच जाता हूं, यहां के लोगों का अपनत्व और मिलनसार व्यक्तित्व हर लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। अपने राजस्थान की धरती का जितना बखान करुं उतना कम ही होगा।

आज का युवा वर्ग पहले की तुलना में अपने धर्म, समाज, संस्कृति के साथ मूल तत्व से अधिक जुड़ रहा है, उन्हें भी सामाजिक महत्व की जरूरत महसूस होने लगी है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, यही हमारे देश की वास्तविक पहचान है। प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव जी के प्रथम पुत्र भरत के नाम से इस भूखंड का नाम 'भारत' पड़ा। वर्तमान मोदी सरकार द्वारा भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है, अतः अपने देश का नाम केवल 'भारत' जल्द ही घोषित हो सकता है।

विनोदजी मूलतः राजस्थान के पाली जिले में स्थित 'घाणेराव' के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा 'घाणेराव' में ही संपन्न हुई है। बचपन में माता-पिता से मिले पारिवारिक संस्कार के कारण आप सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में सतत सक्रीय रहते है। १९७९ से आप मुंबई में बसे हुए हैं और कपड़ों के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही श्री ओसवाल श्रीसंघ घाणेराव पेढ़ी के सचिव, हिंदुस्तान चेंबर ऑफ कॉमर्स के सचिव, राजस्थान जैन सोशल ग्रुप बोरीवली के पी.आर. ओ. व श्री शांतिनाथ साधार्मिक वात्सल्य केंद्र के सलाहकार व अष्टपद तीर्थ राणी के ट्रस्टी के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। आपके छोटे भाई नरेशजी भी सामाजिक क्षेत्र में विशेष रूप से सक्रीय हैं। श्री मुछाला महावीर सोशल ग्रुप घाणेराव के भी पूर्व अध्यक्ष रहे हैं। श्री गौशाला पिंजरापोल घाणेराव से भी जुड़े है, जिसमें ५००-६०० गायें है। श्री लोढ़ा भाईपा संस्थान मुंबई से भी जुड़े हुए है। आप राजनीतिक क्षेत्र में महामहीम राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया व महाराष्ट्र केबिनेट मंत्री मंगल प्रभात लोढ़ा और सामाजिक क्षेत्र में गोड़वाड भामाशाह कनकराज लोढ़ा व मंजू मंगलप्रभात लोढ़ा से काफी प्रभावित हैं। माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी से भी बहुत प्रभावित है। जय भारत!

किशन जालान
सचिव अग्रवाल माहेश्वरी पंचायत भवन
झुंझुनूं निवासी-सैंथिया प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३४५५७०६२

किशन जी 'राजस्थान स्थापना दिवस' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि हमारा परिवार कई पीढ़ियों से पश्चिम बंगाल के 'सैंथिया' में बसा हुआ है, इसके बावजूद आज भी हम पूरी तरह से 'राजस्थान' से जुड़े हुए हैं। 'राजस्थान' में हमारे परिवार के सदस्य रहते हैं और जब भी कोई भी पारिवारिक कार्यक्रम होता है तो पूरा परिवार इकट्ठा होता है, उस समय का माहौल ही निराला होता है, वहां की मिट्टी की खुशबू, वहां का खानपान, वहां की संस्कृति, कला की बात ही निराली है, ऐसा राज्य शायद ही पूरे 'भारत' में कहीं हो। पर्यटन के लिए भारत ही नहीं विदेशों से भी यहां पर्यटक आते है और मेरा यह कहना है कि जो भी 'भारत' का निवासी है उसे एक बार तो अवश्य ही 'राजस्थान' घूमना चाहिए। वहां के महल, लोगों का आपसी व्यवहार, मंदिर, लोक नृत्य, लोक कला, खानपान हर किसी को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है, वहां की आबोहवा में एक अलग ही खुशबू है जो किसी को भी मदहोश कर सकती है। आज की युवा पीढ़ी को भी अपने पैतृक निवास स्थान और राजस्थान की भूमि से जुड़ना चाहिए, यह देखा जा रहा है कि युवा पीढ़ी विशेष रूप से सक्रिय हैं, खाटू श्याम जी के वे विशेष रूप से भक्त बनते जा रहे हैं। राजस्थानी प्रवासी जहां भी बसे हैं, वहां राजस्थानी संस्कृति, रीति-रिवाजों, पर्वों को बड़े धूमधाम से मनाते हैं, साथ ही सामाजिक क्षेत्रों में भी सतत अग्रसर रहते हैं, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'राजस्थान' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि इससे अच्छी और कोई बात हो ही नहीं सकती, अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत', प्राचीन काल से हमारे देश का नाम 'भारत' ही रहा है और यही रहना चाहिए चाहे भाषा कोई भी हो।

किशनजी मूलतः राजस्थान के झुंझुनू जिले में स्थित 'नुआ गांव' के निवासी हैं। आपका परिवार लगभग ६-७ पीढियों से पश्चिम बंगाल के 'सैंथिया' में बसा हुआ है। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। यहां आप होलसेल ग्रॉसरी के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक क्षेत्रों में भी सक्रिय रहते हैं, अग्रवाल माहेश्वरी पंचायत भवन व मेघदूत क्लब के सचिव हैं, यथासंभव अन्य सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। जय भारत!

शिक्षाविद् जगदीश प्रसाद मूंधड़ा

एक सफल व्यवसायी, प्रख्यात समाजसेवी तथा शिक्षाविद् सेसोमूं एज्यूकेशन सोसायटी के तत्वावधान में सेसोमूं स्कूल एवं सेसोमूं गर्ल्स कॉलेज के संस्थापक जगदीश प्रसाद मूंधड़ा अपने आप में एक संस्थान है। स्वर्गीय श्री शेरमल मूंधड़ा एवं श्रीमती सोनादेवी मूंधड़ा की आठवीं तथा अंतिम संतान जगदीश प्रसाद मूंधड़ा का जन्म ५ नवम्बर १९४२ को श्रीडूंगरगढ़ कस्बे में हुआ। आपने दार्जिलिंग से १९६५ में बीएससी एवं सूरत से १९६९ में बी.ई. (इलेक्ट्रिकल) की उपाधि प्राप्त की। तत्पश्चात् आपने सिलीगुड़ी में स्टेशनरी का व्यापार किया। आपका विवाह १९७० में सुजानगढ़ के स्व. श्री मोहनलाल भराडिया की सुपुत्री पद्मा से हुआ। बहुआयामी प्रतिभा के धनी जगदीश मूंधड़ा के मन में हमेशा ही लीक से हटकर कुछ करने की चाह थी। अपने परिवार तथा व्यवसाय छोड़कर आप अकेले की एक नए मुकाम की तरफ १९८० में अमेरिका चले गए। अपनी व्यवहार कुशलता तथा कड़ी मेहनत से आपने दो वर्ष में ही वहां अपने पांव जमा लिए। करीब १४ माह बाद १९८२ में आपकी धर्मपत्नी भी अपने दोनों बच्चों के साथ अमेरिका चली गई। दोनों ने मिलकर जवाहरात का व्यवसाय शुरू किया। अपने माता-पिता के आशीर्वाद और परमात्मा की कृपा से शीघ्र ही आपका व्यवसाय बढ़ता चला गया। विदेश में रहते हुए भी आपको माता-पिता तथा मातृभूमि का ख्याल बना रहा। आपके शब्दों में वहां जाकर जब व्यवसाय जम गया तो भी मन में मातृभूमि के ऋण से उऋण होने की चाहत बनी रही। मन में यह इच्छा हुई कि मुझे अपनी मातृभूमि के लिए कुछ करना चाहिए। यह भी ख्याल आया कि मैं आज सफल हो सका हूं तो सिर्फ शिक्षा के बल पर, विचार आया कि शिक्षा के क्षेत्र में मुझे कुछ करना चाहिए, ताकि यहां के बच्चे सभी अपने परिवार व देश की प्रगति में सहयोगी बन सकें। अपनी इसी शुभ सोच के साथ आपने १९९८ में अपनी जन्मभूमि 'श्रीडूंगरगढ़' में जमीन खरीदी। ४ जून १९९८ को श्री किशनाराम नाई, विधायक श्रीडूंगरगढ़ की अध्यक्षता में राजस्थान के तत्कालीन शिक्षा मंत्री माननीय ललित किशोर चतुर्वेदी के कर-कमलों से स्कूल का शिलान्यास किया गया, जिसका उद्घाटन वर्ष १९९९ में माननीय मंगलाराम गोदारा की अध्यक्षता में स्वर्गीय श्री भैरूदान बाहेती के कर-कमलों से हुआ। 'सेसोमूं' स्कूल अंग्रेजी माध्यम का सेंट्रल बोर्ड दिल्ली संबंधित आवासीय विद्यालय है, जिसमें भारत के कोने-कोने के विद्यार्थी सीनियर सैकेण्डरी तक की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। यहां वाणिज्य, विज्ञान तथा कला संकाय हैं। अनुशासन, चरित्र व शिक्षा इसके मूल स्तम्भ हैं। छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु जहां एक ओर बड़े-बड़े खेल के मैदान है वहीं दूसरी ओर कला का ज्ञान देने के लिए संगीत कक्ष, चित्रकला कक्ष भी है। विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति रूझान बढ़ाने हेतु प्रधानमंत्री द्वारा प्रतिपादित अटल टिंकरिंग लेब (ATL) क्षेत्र के एकमात्र विद्यालय सेसोमूं में स्थापित की गई है। यहां १२०० सीटों की क्षमता रखने वाला आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित मल्टी परपज ऑडिटोरियम है। अनुभुवी शिक्षकों द्वारा आधुनिक शिक्षण सामग्रियों जैसे कम्प्यूटर, प्रोजेक्टर, स्मार्ट क्लास तथा मॉडल द्वारा बच्चों को शिक्षा प्रदान की जाती है। सेसोमूं के विद्यार्थी आरएएस, एडीएमई (रेलवे), डॉक्टर, इंजीनियर, आर्मी, एयरफोर्स, पुलिस सेवा, सीए, सीएस,

व्याख्याता, आईटी, आयकर, बिक्री कर अधिकारी आदि बनकर सेसोमूं का मान बढ़ा रहे हैं। समाज में लड़कियों की उच्च शिक्षा के महत्व को ध्यान में रखते हुए २००९ में सेसोमूं शिक्षण संस्थान द्वारा गर्ल्स कॉलेज खोला गया, जहां बालिकाओं को पूर्णतया सुरक्षित वातावरण में शिक्षा प्रदान की जाती है। इस समय कॉलेज में बीए, बीकॉम तथा कम्प्यूटर वोकेशनल आदि कोर्स चलाए जा रहे हैं। भविष्य में और भी पाठ्यक्रम शुरू करने की योजना है। बच्चों में तैराकी जैसे अति महत्वपूर्ण जीवनरक्षण कौशल के विकास हेतु स्वीमिंग पूल भी है। विद्यार्थियों को शुद्ध दूध, सब्जियां और फल उपलब्ध करवाने के लिए डेयरी तथा फार्म हाऊस है। मैस में छात्रों तथा शिक्षकों को शाकाहारी, पौष्टिक आहार दिया जाता है। विद्यालय का एकमात्र उद्देश्य छात्रों को उच्चकोटि की चारीत्रिक व अनुशासनयुक्त शिक्षा प्रदान करना है। स्कूल खोलने के पीछे धन कमाने का कोई उद्देश्य नहीं रहा। 'शेरमल सोनादेवी चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा सन् २००० से हर वर्ष दो असक्त परिवारों के बच्चों को यहां नर्सरी से कक्षा १२वीं तक निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने हेतु प्रवेश दिया जाता है। ट्रस्ट द्वारा 'परपिचुअल चेंज' योजना चलाई जा रही है जिसमें कोई भी व्यक्ति अपने परिजनों की स्मृति में ३ लाख रुपये एक मुश्त जमा करवाकर किसी गरीब बच्चे के भविष्य निर्माण में सहायक बन सकते हैं, जिसकी ब्याज राशि से उस बच्चे की शिक्षा का खर्च उठाया जाता है, जब वह बच्चा १२ वीं की कक्षा पास कर लेता है तब उसकी जगह पुनः एक बच्चा नर्सरी कक्षा में भर्ती कर लिया जाता है तथा यह क्रम अनवरत चलता रहता है। ऐसे बच्चों की पढ़ाई, पुस्तकें, यूनिफॉर्म तथा बस आवागमन सब निःशुल्क होते हैं, इस समय विद्यालय में ट्रस्ट तथा अन्य दान-दाताओं के सहयोग से करीब ७० बच्चे निःशुल्क शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। ट्रस्ट द्वारा समय-समय पर अन्य समाजसेवा कार्य किए जाते है जैसे निःशुल्क चिकित्सा शिविर, रक्तदान शिविर, ऊंट एवं बैलगाड़ियों में रिफलेक्टर लगवाना, पेड़-पौधे लगवाना आदि है।

जगदीशजी 'राजस्थान स्थापना दिवस' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि मुझे गर्व है कि मैं 'राजस्थानी' हूं। 'राजस्थान' की स्थापना आजादी के पश्चात ३० मार्च १९४९ को हुई थी। हमारे राजस्थान में विशेषताएं ही विशेषताएं हैं। राजस्थानी समाज देश-दुनिया में चाहे जहां भी बसा हो, वह अपनी संस्कृति, खान-पान, तीज-त्योहार आदि से जुड़ा रहता है।

'भारत को 'भारत' ही बाला जाए' संदर्भ में आपका कहना कि बिल्कुल अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इंडिया नाम अंग्रेजों द्वारा थोपा गया है, जो हमारी जुबान पर इतना रच बस गया है, जिसे पूरी तरह से मिटाने में थोड़ा समय लगेगा। 'मेरा राजस्थान' पत्रिका का मैं नियमित पाठक हूँ यह एक उत्तम पत्रिका है, जो हमें राजस्थान के गांवों और राजस्थानी प्रवासियों से जोड़ती है।

मंजू बांगड़
राष्ट्रीय अध्यक्ष अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन
कानपुर निवासी
भ्रमणध्वनिः ९३३६११७९६८

मंजूजी 'राजस्थान स्थापना दिवस' की शुभकामनाएं देते हुए कहती हैं कि रजवाड़ा री शान, मेहमान रो मान, शाही खान-पान, त्योहारा री जान राजशाही की पहचान, रेत रा टीला, ऊंटा री सवारी, म्हारे राजस्थान पर मैं जाऊं वारी, म्हारे राजस्थान पर मैं जाऊं वारी।

राजस्थान केवल भारत का एक राज्य ही नहीं, पूरे 'भारत' की शान है, हर राजस्थानी का स्वाभिमान है।

'म्हारो रंग रंगीलो राजस्थान' यानी राजस्थानी मरुधरा अपनी विशेषताओं के लिए पहचानी जाती है। यहां का रहन-सहन, वेशभूषा, स्वादिष्ट भोजन, अतिथि सत्कार, मेले, नृत्य-संगीत सभी अपने आप में बेमिसाल है। राजस्थान का व्यक्ति चाहे भारत में रहे या विदेश में अपनी राजस्थानी संस्कृति को कभी नहीं भूलता।

बात करें राजस्थानी संस्कृति तो यह शक्ति और भक्ति का मिला-जुला रूप है, शौर्य व बलिदान की भूमि, भक्तों और संतों का प्रदेश है राजस्थान, जहां महाराणा प्रताप, पृथ्वीराज चौहान, अमर सिंह राठौर, राणा सांगा जैसे शूरवीर अवतरित हुए हैं, अनेक सूफी संत, दादू, पीपा, चरण दास, भक्ति मीरा भी अवतरित हुयी हैं, वीरांगनाओं का जौहर यानी पद्मावती का जौहर, पन्ना धाय का बलिदान इतिहास के पृष्ठों में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। राजस्थान के कण-कण में बसी है लोक कला। राजस्थानी मरुधरा अपनी विशेषताओं के लिए जानी जाती है, रंग बिरंगी संस्कृति, बंधेज कला, रंगेज कला, हस्तकला, सांगानेरी छपाई कला और उसके साथ-साथ सदाबहार लोकगीत एवं लोक नृत्यों का भी अभूतपूर्व संगम है, नृत्य चाहे कालबेलिया, घूमर हो या भंवयी, राजस्थानी त्यौहार तीज और गणगौर पर राजस्थानी मारवाड़ी भाषा में गीतों की पहचान, एक अलग स्थान बनाती है, यहां का प्रमुख नगर राजस्थान की राजधानी जयपुर, अपनी राजसी विरासत, बेहतरीन स्थापत्य बसावट व मनमोहक गुलाबी नगर के रूप में विश्व पर्यटन पर भी अलग पहचान बनाता है। चाहे आमेर फोर्ट हो, कुंभलगढ़ का दुर्ग, करणी माता का मंदिर हो, थार के मरुस्थल दर्शनीय स्थल हों, जो केवल 'भारत' में ही नहीं अपितु विदेशों में भी पर्यटन के लिए विश्व प्रसिद्ध है। 'राजस्थान स्थापना दिवस' बड़े ही उत्साह पूर्वक धूमधाम मनाया जाता है, तरह-तरह के रंगारंग कार्यक्रम होते हैं, जिसमें विशेष रूप से लोक-कलाकारों द्वारा प्रस्तुतियां, उसके साथ-साथ लाइट शो, जुलूस आदि का भी विशेष आकर्षण रहता है। 'राजस्थान' नाम ही अपने आप में एक पहचान है, एक ऐसी स्वर्णिम धरा जो केवल 'भारत' ही नहीं संपूर्ण विश्व में अपनी अलग विशेषता रखता है। आइए हम भी संकल्प करें कि राजस्थानी संस्कृति सभ्यता एवं भाषा को जीवित रखने हेतु यथासंभव प्रयास करेंगे, जय-जय राजस्थान!

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में यह कहना है कि यह सर्वविदित है कि युग पुरुषों का सपना 'भारत', विश्व गुरु है अपना 'भारत', वसुधैव कुटुंबकम की भावना पर आधारित हमारी भारतीय संस्कृति, मानव जीवन मूल्यों की प्राचीनतम परंपरा है, ऐसी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को जिसे हम राष्ट्रभाषा हिंदी की बिंदी के रूप में 'भारत' कहते हैं, भारत ही बोला जाए इंडिया तो कदापि नहीं, जब हम अमेरिका, नेपाल, पाकिस्तान, भूटान आदि देशों को उसी नाम से पुकारते हैं तो भारत को 'भारत' क्यों नहीं कहते, जी हां आज हमें स्वतंत्र हुए ७६वॉ वर्ष चल रहा है, भारत को हमारे बच्चे इंडिया कह रहे हैं इसके लिए हम सबको मिलकर बच्चों से ही पहल करवानी होगी, उनको बताना होगा कि भारत को 'भारत' की कहा जाए यह अभियान को सफल बनाना होगा, हमें चित्र नहीं चरित्र सुधारना होगा, भावना को स्थान देना होगा, भारत को अब तो इंडिया नहीं कहना चाहिए।

मंजू जी मूलतः राजस्थान स्थित 'डीडवाना' की निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा 'दिल्ली' में संपन्न हुई है। विवाह पश्चात आप कानपुर में बसी, यहां आप कई सामाजिक संस्थाओं में सक्रिय हैं। वर्तमान में अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर सेवारत हैं, साथ ही कई अन्य संस्थाओं में भी विशेष पद पर सक्रिय हैं। रोटरी क्लब कानपुर विनायकश्री की चार्टर अध्यक्ष हैं तथा महिलाओं की अंतर्राष्ट्रीय संस्था इनर व्हील डिस्ट्रिक्ट ३११ के सर्वोच्च पद पर डिस्ट्रिक्ट चेयरमैन के रूप में आसीन रह चुकी हैं। सरोजिनी नायडू द्वारा स्थापित ऑल इंडिया विमेंस कॉन्फ्रेंस कानपुर की सीनियर वर्किंग पैटर्न है, राजस्थान महिला समिति की अध्यक्ष रह चुकी हैं। जय भारत!

ममता मोदानी
संगठन मंत्री अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन
भिलवाड़ा निवासी
भ्रमणध्वनिः ९८२९२४५४११

ममताजी 'राजस्थान स्थापना दिवस' की शुभकामनाएं देते हुए कहती हैं कि राजस्थान को राजपूताना या वीरों की भूमि कहा जाता है, इसकी स्थापना दिवस पर हम कुछ समय निकाल कर कुछ कर पाते तो वास्तव में हम हमारी भूमि के लिए प्रति अपनी भावनाएं व्यक्त करते हैं, ऐसा मेरा मानना है। स्थापना दिवस मात्र एक दिन मना कर हम इतिश्री नहीं कर सकते, राजस्थान की जो गौरवपूर्ण गाथा है, जो इतिहास है उस विरासत को सहेजना चाहिए, आने वाली पीढ़ी को स्थानांतरित करना चाहिए, हर दिन, हर समय, हर पल जीवन में राजस्थान के वीरों और वीरांगनाओं के त्याग और समर्पण को अपने बच्चों को बताकर अपनी धरोहर को सहेज कर रखना चाहिए।

युवा पीढ़ी को 'राजस्थान स्थापना दिवस' के बारे में विभिन्न माध्यमों से हम बता सकते हैं, क्योंकि सिर्फ पढ़ने से बच्चे अमल में नहीं लाएंगे, उसको नहीं समझ पाएंगे, उन्हें पीपीटी के माध्यम से भी हमें बताना चाहिए।

बच्चे राजस्थान की यशोगाथा व इतिहास के बारे में जानकारी इकट्ठा करें और एक दूसरे से विचारों का आदान-प्रदान करें, इस तरह **शेष पृष्ठ ४० पर...**

पृष्ठ ३९ से... वे अपने राजस्थानी संस्कृति और विचारों से जुड़े रहेंगे।

राजस्थान की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि राजस्थान के बारे में जितना बताओ उतना कम ही होगा। वीरों की धरती राजस्थान, रंगीलो राजस्थान, वीरांगनाओं की धरती राजस्थान। ऐसा कहा जाता है कि यहां हर ७ कोष पर खानपान, रीति-रिवाज और बोली बदल जाती है। यहां की संस्कृति बहुत ही निराली, अनेकों विशेषताएं लिए हुए है। 'अतिथि देवो भव:' समाज सेवा, धर्म सेवा राजस्थानियों की विशेषता है। राजस्थान की लोक कला, पर्यटन बहुत ही अनोखी है, यहां आने वाला हर कोई यहां की प्रकृति में खो जाता है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'राजस्थान' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि इसका मैं पूर्ण समर्थन करती हूं, इंडिया बोलने पर ऐसा लगता है कि हम अपने देश की बात नहीं किसी और देश की बात कर रहे हैं। 'भारत' शब्द अपने आप में पूर्णत: अर्थपूर्ण है, यह नाम चक्रवर्ती सम्राट भरत के नाम से पड़ा है अत: अपने देश का नाम सिर्फ एक ही रहना चाहिए 'भारत'!

ममताजी मूलतः राजस्थान स्थित 'भीलवाड़ा' की निवासी हैं। आप कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़ी हुई हैं। सन २००४ से संगम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस भीलवाड़ा की निर्देशिका हैं। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की वर्तमान में संगठन मंत्री हैं, अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन की दो सत्र उपाध्यक्षा रही हैं, पश्चिमांचल की औद्योगिक समिति अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन की संयोजिका रही हैं, भीलवाड़ा जिला माहेश्वरी महिला संगठन की सदस्य रही हैं, इनरव्हील क्लब की भी पूर्व अध्यक्षा रही हैं, जिला यूनेस्को भीलवाड़ा की पूर्व उपाध्यक्षा रही हैं। पूर्व छात्रा परिषद अध्यक्ष, कमेटी सदस्य-लोक अदालत समझौता, विशेष आमंत्रित सदस्य श्री अखिल भारतीय महेश्वरी सेवा सदन के पद पर सेवारत हैं। आपके सामाजिक कार्यों हेतु आपको कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिसमें यूनेस्को द्वारा सेवा सम्मान पुरस्कार, हिमालय हिंदुस्तान द्वारा राष्ट्रीय सेवा सम्मान पुरस्कार, वुमन इंप्रेशन ऑफ भीलवाड़ा सम्मान, साहित्य मंडल नाथद्वारा समाज रत्न सम्मान, माहेश्वरी नारी शक्ति सम्मान जैसे कई सम्मान आपको प्राप्त हुए हैं। जय भारत!

अजीत कुमार वर्मा
डिप्टी जनरल मैनेजर महेश बैंक
मुंडवा निवासी-हैदराबाद प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८४९०५०७४२

अजीतजी 'राजस्थान स्थापना दिवस' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि हमारे राजस्थान की बात ही अनोखी है, वहां की वेशभूषा, रहन-सहन, मान मर्यादा के कहने की क्या, यह शूरवीरों की भूमि रही है। हमें गर्व है कि हम 'राजस्थानी' हैं, यहां के हर क्षेत्र में तीर्थ बसा हुआ है, पहले के मुकाबले आज का 'राजस्थान' बहुत ही विकसित हुआ है, इसीलिए आज भारत के हर क्षेत्र में बसने वाला राजस्थानी किसी न किसी रूप में 'राजस्थान' से जुड़ा है और वह जहां भी बसा है वहां अपने राजस्थानी संस्कृति, रीति-रिवाजों को बड़े उत्साह से निभा रहा है, हमारे यहां सभी राजस्थानी समुदाय मिलकर सभी पर्व बड़े हर्षोल्लास से मनाते हैं और धार्मिक व सामाजिक कार्य में बढ़-चढ़कर सहभागी होते हैं। राजस्थानियों के द्वारा गौशाला भी स्थापित की जाती है, जिसकी देखरेख का जिम्मा भी राजस्थानी समाज मिलकर उठाता है। हमारे समाज के युवा वर्ग भी राजस्थानी संस्कृति से जुड़े हैं, उनका भी अपने धर्म समाज से विशेष लगाव बढ़ता जा रहा है, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'राजस्थान' की...

अजीतजी मूलतः राजस्थान स्थित मुंडवा के निवासी हैं, आपका परिवार कई पीढ़ियों से 'हैदराबाद' में बसा हुआ है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'हैदराबाद' में ही संपन्न हुई है, आप हैदराबाद के महेश बैंक में डिप्टी जनरल मैनेजर के पद पर कार्यरत हैं, साथ ही स्वर्णकार समाज से पिछले १५ वर्षों से जुड़े हैं, अन्य कई सामाजिक संस्थाओं में भी सक्रिय हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि प्राचीन काल से अपने देश का नाम 'भारत' ही रहा है और भारत ही रहना चाहिए, इंडिया तो अंग्रेजों द्वारा थोपा गया नाम है। वैश्विक स्तर पर भारत को 'भारत' ही नाम करने का कार्य भारत सरकार द्वारा ही संभव हो सकता है। जय भारत!

राजरानी काबरा
पूर्व अध्यक्ष माहेश्वरी महिला मंडल कोलकाता
खण्डेला निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८३०९६९४९६

राजरानीजी 'राजस्थान स्थापना दिवस' की शुभकामनाएं देते हुए कहती हैं कि राजस्थान स्थित 'खंडेला' मेरी पैतृक भूमि है। कोलकाता में बसे होने के बावजूद हम राजस्थान से आज भी जुड़े हुए हैं। कोलकाता में राजस्थानी समाज की संख्या सबसे अधिक है, सभी के द्वारा राजस्थानी संस्कृति और पर्वों को आज ही पूरी निष्ठा के साथ निभाया जाता है। पर्यटन की दृष्टि से भी हमारा राजस्थान बहुत ही उत्तम है, इसे हवेलियों का राज्य कहा जाता है। आज भी यहां कई ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण हवेलियां हैं जिनका अपना गौरवशाली इतिहास रहा है। राजस्थानी जहां भी जाते हैं वहाँ पर राजस्थानी समाज द्वारा हर क्षेत्र में सामाजिक व धार्मिक संस्थाएं बनाते हैं, व्यवसाय के साथ-साथ सामाजिक क्षेत्रों में भी अपनी अहम भूमिका निभाते हैं, समाज सेवा के लिए सतत अग्रसर रहते हैं, वहीं के होकर रह जाते हैं फिर भी सभी अपनी पैतृक भूमि से किसी न किसी रूप से जुड़े रहते हैं। राजस्थान का प्राकृतिक वातावरण हवा, भोजन व पानी की सुगंध आज भी हमें वहां खींच ले जाती है, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'राजस्थान' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि यह बहुत ही अच्छा अभियान है इस अभियान के रचयिता **शेष पृष्ठ ४१ पर...**

पृष्ठ ४० से... 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के संस्थापक अध्यक्ष बिजय कुमार जैन द्वारा की गई पहल बहुत ही सराहनीय है, अभियान अवश्य सफल होगा, समय भले ही लगे, हम भारतवासी हैं अतः अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

राजरानीजी मूलतः राजस्थान स्थित 'खंडेला' की निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा उत्तरप्रदेश के 'इटावा' में संपन्न हुयी है। आपका विवाह शंभुदयाल काबरा के सुपुत्र सतिश जी से हुआ, तत्पश्चात आपका परिवार व्यवसाय हेतु कोलकाता में बस गया। पिछले कई वर्षों से आप 'कोलकाता' में बसी हुई हैं और सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर सहभागी होती हैं। पूर्व में माहेश्वरी महिला मंडल कोलकाता की उपाध्यक्ष रही हैं, वर्तमान में कार्यकारिणी सदस्य के रूप में सक्रिय हैं, लायंस क्लब से भी जुड़ी हैं। जय भारत!

दामोदर लखानी
पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन महाराष्ट्र प्रदेश
बीकानेर निवासी-मलकापुर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४२२३२४२२१

दामोदरजी 'राजस्थान स्थापना दिवस' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि आजादी के पहले राजस्थान राजपूताना प्रदेश के नाम से जाना जाता था, क्योंकि यह राजपूतों, शुरवीरों की भूमि, वीरांगनाओं की भूमि रही है। पर्यटन के लिए पूरे 'भारत' ही नहीं विश्व में विख्यात है हमारा 'राजस्थान'। यहां जीवंत संस्कृति, रेतीली मरुस्थली भूमि, पहाड़ नदियां, झील जैसे अनोखी भौगोलिक छटा वाला है हमारा 'राजस्थान'। गढ़, किले, ऐतिहासिक भवन, महल, मंदिर एवं तीर्थ स्थान से भरा है हमारा 'राजस्थान'। राजस्थान के निवासी 'भारत' में ही विदेशों में भी बसे हैं। हम अपने राजस्थान की धरती, संस्कृति व रीति-रिवाजों से किसी न किसी तरह जुड़े रहें, हम व्यापार के साथ-साथ धर्म सेवा के लिए भी अग्रणी हैं, ऐसी ही अनेको अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'राजस्थान' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि यह सर्वथा उचित है कि अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत', क्योंकि यही नाम ऐतिहासिक और पौराणिक है।

दामोदरजी मूलतः राजस्थान स्थित बीकानेर जिले के निवासी हैं। आपका परिवार लगभग डेढ़ सौ सालों से महाराष्ट्र के मलकापुर में बसा हुआ है, आपका जन्म बीकानेर में व संपूर्ण शिक्षा 'मलकापुर' में हुई है, यहां आप गैस एजेंसी व अन्य व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। मलकापुर माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष रहे हैं, नगर संघचालक हैं, श्री गौरक्षण संस्थान में उपाध्यक्ष एवम् नगर सेवा समीती में सचीव हैं। मारवाड़ी सम्मेलन महाराष्ट्र प्रदेश के उपाध्यक्ष भी रहे हैं। वर्तमान में भी यथासंभव सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं। जय भारत!

निरंजनलाल मित्तल
व्यवसाई व समाजसेवी
डाबड़ी निवासी-केरल प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३८८६१७७८०

निरंजनजी 'राजस्थान दिवस' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि राजस्थानी विश्व में चाहे कहीं भी बसा हो वे अपने जन्मभूमि व पैतृक भूमि से जुड़ा ही रहता है। हमें गर्व है कि हम राजस्थान के रहने वाले हैं, यह महाराणा प्रताप व कई शूरवीरों की भूमि है। राजस्थान के कण-कण में वीरता और भक्ति मौजूद है, यहां कई देश भक्त हुए हैं जिन्होंने देश रक्षा व स्वामी भक्ति के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी और आज भी राजस्थान में उनकी शौर्य गाथा गूंजती है। 'राजस्थान' की संस्कृति बहुत ही निराली है, यहां के हर क्षेत्र की बोली भाषा, खान-पान, रहन-सहन, पहनावा भी भिन्न-भिन्न है, यहां हर चीज में नयापन है जो यहां आने वाले हर किसी को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। राजस्थानी कहीं भी बसा हो वह अपनी कर्मठता, समाजिकता व धार्मिकता से अपनी एक अलग पहचान बना लेता है। राजस्थान प्रवासी हर क्षेत्र में अपनी सामाजिक संस्था बना लेता है वह अपने पैतृक और जन्मभूमि के साथ-साथ कर्मभूमि को भी समृद्ध करने का प्रयास करता है, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'राजस्थान' की...

आज के युवा वर्ग की जीवनशैली ही अलग है, उनका अपनी संस्कृति व रीति-रिवाजों से कम ही जुड़ाव रहता है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि यह बहुत ही अच्छी मुहिम है, अपने देश की पहचान तो एक ही नाम से रहनी चाहिए अंग्रेज चले गए पर अंग्रेजी छोड़ कर गए, इंडिया शब्द अंग्रेजों द्वारा थोपा गया नाम है जो सर्वथा अनुचित है।

निरंजनजी मूलतः राजस्थान स्थित हनुमानगढ़ जिले में स्थित भादरा तहसील के 'डाबड़ी' गांव के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षण यहीं संपन्न हुई है। पिछले ३५ वर्षों से आप केरल में बसे हैं और व्यवसाय के साथ-साथ सामाजिक क्षेत्रों में भी सक्रिय हैं। जनकल्याण सोसायटी अग्रवाल समाज केरल, नॉर्थ इंडियन एसोसिएशन केरल जैसे कई सामाजिक संस्थाओं में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। जय भारत!

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाना चाहिए

सजनकुमार डोकानिया

उपाध्यक्ष हिंदुस्तान चेंबर ऑफ कॉमर्स
नीमकाथाना निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३२४४८१२३९

सजनजी 'राजस्थान स्थापना दिवस' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि राजस्थान हमारे पुरखों की भूमि है इससे लगाव होना तो स्वाभाविक ही है, हमें गर्व है कि हम राजस्थानी हैं, यह शूरवीरों और कर्मवीरों की भूमि है, यहां की मिट्टी पानी की अलग ही खुशबू है, यहां के खानपान का स्वाद बड़ा ही निराला है। यहां हर पर्व बड़े ही हर्षोल्लास रीति-रिवाजों और परंपरानुसार मनाए जाते हैं। राजस्थान के निवासी जहां भी बसे हैं वहां उन्होंने अपनी संस्कृति को बनाए रखा है, व्यापारिक क्षेत्र में ही नहीं सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र में भी अपना वर्चस्व बनाए हुए हैं। अपनी पैतृक भूमि के साथ-साथ अपने कर्मभूमि से भी उतना ही लगाव रखते हैं, इसीलिए हर प्रांत में राजस्थानी समाज की सामाजिक व धार्मिक संस्थाएं कार्यरत हैं। आज की युवा पीढ़ी भी पहले की अपेक्षा अपने धर्म समाज से जुड़ रही है। राजस्थान में अनेक विशेषताएं हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि हमारे देश का नाम 'भारत' था और 'भारत' ही रहना चाहिए, यही नाम हमारे गौरवशाली इतिहास और प्राचीन संस्कृति का प्रतीक है, भाषा कोई भी हो, नाम तो एक ही रहना चाहिए 'भारत'।

सजनजी मूलतः राजस्थान के 'नीमकाथाना' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा बिहार में संपन्न हुई है। १९८९ से आप 'मुंबई' में बसे हैं और टेक्सटाइल व ज्वेलरी के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक क्षेत्रों में भी सक्रिय रहते हैं। आरविजी एजुकेशन फाउंडेशन से २० वर्षों से जुड़े हैं, साथ ही विभिन्न पदों पर रहते हुए वर्तमान में ट्रस्टी के रूप में कार्यरत हैं। हिंदुस्तान चेंबर ऑफ कॉमर्स के वर्तमान में उपाध्यक्ष के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत!

मधुसूदन बलदवा

व्यवसाई व समाजसेवी
डीडवाना निवासी-बेंगलुरु कर्नाटक प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८४४२६६१०२

मधुसूदनजी 'राजस्थान स्थापना दिवस' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि हम राजस्थानी तो पूरे विश्व में छाए हुए हैं कहते हैं क्या नहीं है हमारे 'राजस्थान' में। राजस्थान की संस्कृति, खानपान, रीति रिवाज, लोक कला, लोक गीत, लोक संगीत के बात ही निराली है। दाल-बाटी-चूरमा, घेवर की पहचान आज विदेशों में भी होने लगी है। यहां के घूमर नृत्य ने अपनी अलग ही धूम मचाई हुई है। 'राजस्थान' पर्यटन के लिए भी एक प्रमुख स्थान है। यहां के महल, गढ़, किले, देवी-देवताओं के मंदिरों ने प्राचीन काल से अपना महत्व बनाए रखा है, राजस्थानी जहां भी बसे हैं उन्होंने अपनी संस्कृति को संजो कर रखा है और युवाओं को भी जोड़ा है, जोड़ने की आवश्यकता भी है, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'राजस्थान' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश की एक नाम से ही पहचान रहनी चाहिए सिर्फ और सिर्फ 'भारत' जो प्राचीन काल से चला आ रहा है।

मधुसूदनजी मूलतः राजस्थान के नागौर जिले में स्थित डीडवाना तहसील के 'कोलिया' गांव के निवासी हैं। आपका परिवार लगभग १०० वर्षों से कर्नाटक में बसा हुआ है, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा कर्नाटक के गुलबर्गा में स्थित 'सेडम' में संपन्न हुई है। यहां आप प्रिंटिंग प्रेस के क्षेत्र में डिस्ट्रीब्यूटर के रूप में कार्यरत हैं। बेंगलुरु माहेश्वरी सभा व माहेश्वरी भवन के कार्यकारिणी सदस्य रहे हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

मुरारीलाल कमलिया

अधिवक्ता व समाजसेवी
सरदारशहर निवासी-पटना प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३३४३३४११९

मुरारीलालजी 'राजस्थान स्थापना दिवस' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'म्हारो रंग रंगीलो राजस्थान' बोलते ही हमारे सम्मुख राजस्थान की सतरंगी संस्कृति की तस्वीर उभर आती है। यहां की हर संस्कृति की अपनी पहचान है, जिसमें पूरा परिवेश, आदर्श परंपरा, लोकभाव समाहित है। राजस्थान के व्यक्ति चाहे स्वदेश में रहें या विदेश में, अपनी संस्कृति को कभी नहीं भूलता। खान-पान, शादी-ब्याह वेशभूषा, रीति-रिवाजों को किसी न किसी रूप में अपनाता है। राजस्थान की धरती वीरों और महापुरुषों की धरती है जिसके कारण आज हमारा राजस्थान एक अनोखी पहचान रखता है, इनके किस्से-कहानियां सुनने पर हमारा रोम-रोम उत्साह से भर जाता है। आज राजस्थान हर क्षेत्र में तरक्की कर चुका है, इसका कारण यहां के लोगों का पुरुषार्थ, लगन, मेहनतकश, स्वावलंबन होना। देश की आर्थिक विकास में राजस्थानियों की अहम भूमिका है इसमें कोई दो राय नहीं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'राजस्थान' व राजस्थानियों की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहे, इससे अच्छी और कोई बात नहीं हो सकती। 'भारत' नाम हमें गर्व की अनुभूति कराता है।

मुरारीलालजी मूलतः राजस्थान स्थित 'सरदारशहर' के निवासी हैं, आपका परिवार कई पीढ़ियों से बिहार के 'पटना' में बसा हुआ है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'पटना' में ही संपन्न हुई है। यहां आप अधिवक्ता के रूप में सक्रिय रहते हुए आप सामाजिक क्षेत्रों में भी सक्रिय हैं। मारवाड़ी सम्मेलन से जुड़े हैं, अन्य कई सामाजिक संस्था में भी सक्रिय हैं। जय भारत!

SINCE 2011

POORVA HOLIDAYS

THE NEW CHOICE OF TRAVEL

गुजराती, कच्छी तथा राजस्थानी जैन समाज का
लोकप्रिय और प्रतिष्ठीत पर्यटन संगठन

Avail
06N | 07D
08N | 09D
03 Packages

Gold
Diamond
Diamond Plus

06 N / 07 D
08 N / 09 D

Leh Ladakh

Travel Now .. Pay Later

SanKash A REASON TO GO!

- No Cost EMI
- Zero Interest
- Zero Down Payment

चोवियार, एकासना, बेसना, गर्म पानी की व्यवस्था तिथि के दिनों में करके मिलेगी

संपूर्ण पर्यटन मे हमारे महाराज के हाथ का 100% शाकाहारी व जैन भोजन मिलेगा

Choice of ..

Different Packages
as per Luxurious Hotels,
Departure Dates & Budget ..

1N	Sonmarg
1N	Kargil
2N	Leh
2N	Nubra Valley
1N	Pangong Lake
1N	Leh

8N | 9D

2023 Fixed
Departure Dates & Itinerary

Gold Pkg :
May : 06,08,14,20,22,28,30
Jun : 05,07,13,15,21,23,29
Jul : 01,07,09,15,17,23,25,31
Aug : 06,12,18,24

Diamond Pkg :
May : 20,28
Jun : 05,13,21,29
Jul : 07,15,23,31

Diamond Plus Pkg :
May : 22,30
Jun : 07,15,23
Jul : 01,09,17,25

MR. TEJAS SHAH FOUNDER : ✆ 99309 93825 ✆ 79776 28030

Sales Executive Team : Kekin Heniya ✆ 95942 00634 • Swati Jain ✆ 91794 95667

QUALITY HOTEL · PERSONAL ATTENTION

Shop No. 23, 29 & 36, Yudhistir Bldg, Opp. N.L.Garden, Dahisar (E),
Mumbai - 400068 ✆ 022-40031840, 7021884895

VEG JAIN · SIGHT SEEING

फतेहपुर-शेखावाटी नागरिक संघ के होली मिलन समारोह में राजस्थानी कला संस्कृति की भव्य प्रस्तुति

कोलकाता: फतेहपुर शेखावाटी नागरिक संघ की ओर से फतेहपुर निवासियों का होली मिलन समारोह का भव्य आयोजन सेफायर बैंक्वेट में किया गया। संघ के सभापति पूर्व विधायक दिनेश बजाज ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए सभी को होली की बधाई दी और कहा कि हमें इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि प्रीति सम्मेलन महज औपचारिकता बनकर न रह जाए अपितु ऐसे आयोजनों के जरिए हम समाज को सुसंगठित और समृद्धशाली बना सकें। सचिव पवन जैन ने कहा कि फतेहपुर शेखावाटी संस्था कला संस्कृति को अक्षुण रखने के उद्देश्य से होली के उपलक्ष्य में वहां के मोनिका, बबलू पार्टी के कलाकारों को

यहां बुलाकर लोकगीत, ढप, धमाल व लोक नृत्य का रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत करवाया, जिसे देखकर उपस्थित लोग झूमने पर मजबूर हो गए। समारोह में उप-सभापति रामावतार रामसिसरिया ने फतेहपुर शेखावाटी में आगामी १८ मार्च को आयोजित गोसेवा संकल्प सभा के बारे में बताते हुए सभी को शामिल होने का आह्वान किया। मंच पर उपाध्यक्ष संतोष सराफ, सचिव पवन कुमार जैन, सह-सचिव रामावतार जोशी, कोषाध्यक्ष सुरेश सराफ, सलाहकार चतुर्भुज नेवटिया, सुधांशु सिंघानिया, श्रीमती सुशीला सिंघानिया, किशन गोस्वामी सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे। रामअवतार जोशी जी ने कार्यक्रम का संचालन बाखूबी किया। कार्यक्रम में आगंतुकों का स्वागत केशरिया ठंडाई व समापन स्वरुचि भोज के साथ हुआ। कार्यक्रम की सफलता में संघ के सभी पदाधिकारी व कार्यकर्त्ता सक्रिय रहे।

सरदारशहर परिषद कोलकाता द्वारा होली महोत्सव का आयोजन

सरदारशहर परिषद कोलकाता द्वारा दिनांक ५-३-२०२३ को होली महोत्सव का आयोजन कोलकाता के सुप्रसिद्ध शहनाई गार्डन में किया गया। लग भग १६०० लोगों से भरे शहनाई गार्डन में मेहमानों का स्वागत अध्यक्ष चैनरूप चिंडलिया ने किया। विशिष्ट लोगों की उपस्थिति में बाबूलाल बोथरा, सुशील अग्रवाल, विनोद कन्दोई, शांतिलाल पिंचा, सुरेंद्र दुगड, अजीत सेठिया, प्रदीप डागा, रतन दुगड़, नरेन्द्र श्यामसुखा, कर्णेश सेठिया, शांति लुनिया, गुलाब पिंचा रवि प्रकाश गोलछा व पवन गोयनका आदि थे। बाबूलालजी बोथरा ने कार्यक्रम की अध्ययक्षता की। कार्यक्रम के संयोजक संजय दुगड व उनकी टीम ने आगंतुकों के मनोरंजन के लिए मायड भूमि के कलाकार कुलदीप ओझा एंड पार्टी व गायक अजय सिंह के साथ कोलकाता के सुप्रसिद्ध बावलिया ग्रुप को निमंत्रित किया था। कलाकारों ने ऐसा समा बांधा की ५ घंटे तक चले कार्य में सभी का मन मोह लिया। कोलकाता के प्रसिद्ध पुगलिया कैटरर्स द्वारा स्वादिष्ट हाईटी के साथ लज़ीज़ व्यंजन का सभी महमानों ने लुत्फ़ उठाया। परिषद की कर्मठ मंत्री डॉ सूरज बाई बरडीया ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर सभी
राजस्थान वासियों को
हार्दिक शुभकामनायें

LLOYDSMETALS

LLOYDS METALS & ENERGY LTD.

A2, 2nd Floor, Madhu Estate, Pandurang Budhkar Marg,
Lower Parel, Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400013,
Tel : +91-22-62918111 | Fax:+91-22-62918260

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर सभी
राजस्थान वासियों को हार्दिक शुभकामनायें

Damani Shreekant Gwaldas
Mob : 9821064779

Damani Enterprises

"A" Class Govt. Electrical Contractor

"A" Class Govt. Electrical Contractor
Shop No. 14, Pujit Plaza, Plot No. 67, Sector 11,
CBD Belapur, New Mumbai-400614

WIDE OFFERINGS WITH DEEP ROOTED VALUES

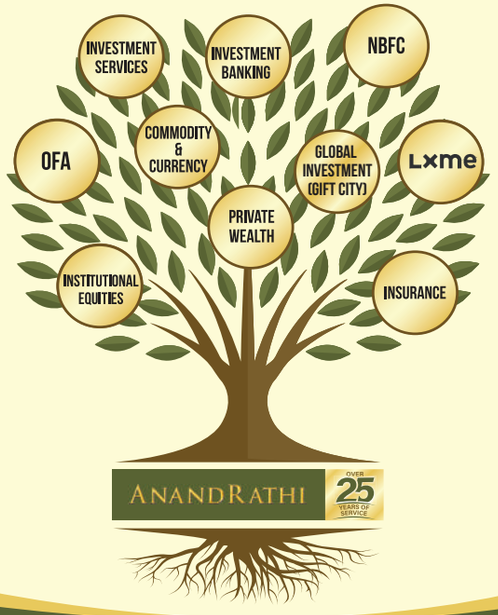

www.rathi.com

श्री माहेश्वरी भवन में बागेश्वर बाबा श्री धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री जी का प्रवचन

मुंबई: श्री माहेश्वरी भवन में आयोजित गीता पाठ पठन के कार्यक्रम में विश्वविख्यात बागेश्वर बाबा श्री धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री जी, माहेश्वरी समाज के ५ वर्ष से १८ वर्ष के बच्चों के मुख से गीता जी के नित्य पठनीय श्लोक सुनकर भावविभोर हो गए। बच्चों के साथ 'धर्म की जय हो' का नारा बुलंद करते हुए उन्होंने बच्चों को आचार्य और इस कार्य प्रणाली को गुरुकुल कह कर संबोधित किया। माहेश्वरी मंडल भायंदर द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में गीता पाठ सीखने वाले समाज के छोटे छोटे बच्चों के कारण समाज बंधुओं को महाराजश्री के दुर्लभ दर्शन और उनके श्रीमुख से प्रवचन सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। बागेश्वर बाबा ने बच्चों और अभिभावकों को संदेश देते हुए कहा कि गीता पठन-पाठन का कार्यक्रम यूं ही अनवरत करते करते संपूर्ण देश को गीतामय बनाना है। उन्होंने कहा कि गीता को सिर्फ पढ़ना नहीं है, गंगा जल के समान पीना है, उसमें लिखी बातों का अक्षरशः पालन करने की कोशिश से ही जीवन में सफलता मिल सकती है। बच्चों को नित्य-प्रतिदिन गीता पढ़ने की प्रेरणा के साथ उन्होंने हास्य विनोद करते हुए कहा, नित्य पढ़ोगे गीता, तो कटेगा उन्नति का फीता। आगे महाराज श्री ने श्री माहेश्वरी भवन में अपने अस्थाई निवास को किसी आश्रम में रहने के समान सुखद बताते हुए संपूर्ण समाज की एकता की भूरी-भूरी प्रशंसा की। समाज बंधुओं की धर्म के प्रति आस्था को देखते हुए, उन्होंने स्वतः ही भायन्दर में ३ दिवसीय गीता पर प्रवचन देने की अपनी प्रबल इच्छा प्रकट की। मंडल अध्यक्ष नटवर डागा, सचिव नारायण तोषनीवाल और कोषाध्यक्ष सुरेश दरक ने रामचरितमानस ग्रंथ की पुस्तिका, साफा और पुष्प माला से महाराजजी का स्वागत किया।

लाखों की भीड़ में दर्शन होने दुर्लभ थे पर बच्चों और मंडल कार्यकर्ताओं के कारण महाराजश्री के दर्शन और प्रवचन को सुन कर, कार्यक्रम में आए हुए सभी श्रद्धालुओं ने मंडल पदाधिकारियों की बहुत प्रशंसा की और उन्हें खूब आशीर्वाद दिया।

(फार्म नं.- 4 नियम 8)

अखबारों के पंजीकरण केंद्रीय नियम 1956 के नियम के तहत 'मेरा राजस्थान' मुंबई के स्वामित्व और अन्य विवरण के बारे में घोषणा।

1) प्रकाशन का स्थान : गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी- 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई - 400 059

2) प्रकाशन की अवधि : मासिक

3) मुद्रक का नाम : विनय ग्राफिक्स, कोंडिविटा

क्या भारतीय नागरिक हैं? : हाँ

4) सम्पादक का नाम : बिजय कुमार जैन

क्या भारतीय नागरिक है? : हाँ

पता : बी - 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई - 400 059

5) इस समाचार पत्र के स्वामी व सहभागी जिनका सहभाग एक प्रतिशत से ज्यादा हो उनका नाम व पता

1) बिजय कुमार जैन
पता : बी - 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई - 400 059

2) सुश्री संतोष जैन
पता : बी - 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल,
अंधेरी पूर्व, मुम्बई - 400 059

मैं बिजय कुमार जैन, गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि. के लिए घोषणा करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के मुताबिक ऊपर लिखित विवरण सही है।

बिजय कुमार जैन
प्रकाशक के हस्ताक्षर
तारीख 28 मार्च 2023

किरणदेवी सराफ ट्रस्ट द्वारा स्ट्रेस टेस्ट मशीन का सहयोग

महावीरप्रसाद घ. सराफ ने किरणदेवी सराफ ट्रस्ट के माध्यम से मराठा मंदिर बाबासाहेब गावड़े चेरिटेबल अस्पताल, विले पार्ले पूर्व को स्ट्रेस टेस्ट उपकरण का सहयोग दिया, इस उपकरण का उद्घाटन सराफ परिवार की पुत्रवधु श्रीमती शिल्पा प्रकाश सराफ ने अस्पताल के अध्यक्ष राजेन्द्र गावडे, डॉ. सुप्रिया माल्शे व अन्य लोगों की उपस्थिति में किया। कार्यक्रम में उन्नतिबेन हाथी का सहयोग मिला।

नारायणी दादी का गुणगान भारी संख्या के साथ हुआ

कोलकाता: भारत का एक राज्य प. बंगाल की राजधानी में स्थापित नारायणी दादी सेवा संघ के कार्यकर्ताओं ने १८ व १९ मार्च २०२३ को गंगेस गार्डन कम्युनिटी हॉल को भारी संख्या के साथ नाच-गाकर राणी सती दादी की जय के साथ गुंजायमान कर दिया। मॉ काली की नगरी कोलकात्ता में भव्यातिभव्य धार्मिक कार्यक्रम के मध्य भजन प्रवाहक आयुष त्रिपाठी, मंगल पाठ याचिका सोनाली जोशी रही। दादी की परम भक्ताणी अरूणा दीदी ने 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' की टीम को बताया कि दादी का गुणगान हम भक्तों के साथ सन् २०१३ से कर रहे हैं। दादी सभी भक्तों की व्यापारिक, घरेलु या अन्य कोई भी समस्या हो सब कुछ पल भर में दूर कर देती है। दादी के परम भक्त कमल खेरिया, पूनम खेरिया, राजेश सदावरिता, मनोज खेरिया, अर्चना खेरिया आदि ने 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' की टीम को कहा कि दादी के गुणगान के साथ नारायणी दादी सेवा संघ के कार्यकर्ता गरीबों को खाना खिलाना, शिक्षा के लिए बच्चों को कॉपी पेन्सिल वितरण करना, रक्त दान शिविर, मृत्यु उपरांत नेत्रदान, देहदान, गो सेवा, पीपल के पेड़ लगाना आदि कार्य भी प्रमुख रूप से करते हैं। कोलकाता शाखा के प्रमुख कार्यकर्ता सुनीता तुलसीयान, सुधा जालान, संगीता जैन, अमिता मूंधड़ा, रजनी सोडानी, श्वेता खेरीया, पुष्पा अग्रवाल, सुनिता गुप्ता, श्वेता लढारिया, डॉली अग्रवाल, सरिता खेतान, शिखा मित्तल, अंजु झुनझुनवाला, प्रीती शाह, अलोक शाह, पूजा खेतान, पायल बजाज, पुनीता तुलसीयान, रश्मी जिदंल, सुषमा भगत, बबीता अग्रवाल आदि का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम के मध्य सभी ने 'जय भारत' के नारे लगाने के साथ कहा कि आज से हम अपने सभी मित्रों को 'जय भारत' के साथ अभिवादन के लिए कहेंगे और भारत को केवल 'भारत' ही बोलेंगे। जय भारत!

राजस्थान जैन सोशियल ट्रस्ट द्वारा तीर्थयात्रा सम्पन्न

मुंबई: राष्ट्रसंत प.पू. आचार्य श्री चन्द्राननसागरसूरिश्वर जी म.सा. के प्रेरणा से श्री राजस्थान जैन सोशियल ट्रस्ट, नवी मुंबई में एकमात्र सामाजिक मंच है जो पूरे नवी मुंबई के जैनों को एक मंच पर लाता है और भिन्न भिन्न सामाजिक कार्यक्रम आयोजित करता है, जिसमें मुख्य रूप से फागण फेरी, तीर्थ यात्रा, क्रिकेट, जैन डांडिया, रैली, चोविहार, हाउजी संचालन आदि कई अन्य आयोजन होता है, मंच की स्थापना २००५ में की गई थी।

इस वर्ष ट्रस्ट ने ९वीं बार फागण फेरी का आयोजन किया और १०८ यात्री को ३ दिन के तीर्थ यात्रा पर लेकर गए और सभी को सुख साता से यात्रा करवा कर अपना दायित्व निभाया।

ट्रस्ट के प्रमुख पदाधिकारी चेयरमैन प्रकाश बोहरा, वाइस चेयरमैन अजय कटारिया, सचिव ललित श्रीश्रीमाल और खजांची नरेश संघवी का कहना है कि हम युवाओं को अपनी व्यस्तता में से थोड़ा समय समाज के लिए जरूर

निकालना चाहिए, अपने आस पास के जैन समाज के लोगों को एकत्रित करने और एक साथ लाने का प्रयास सतत करते रहना चाहिए।

गत दिनों पालीताणा और सम्मेद शिखरजी के बचाव में रैली का आयोजन भी नवी मुंबई में इसी ट्रस्ट द्वारा किया गया था, जिसमें करीब ५००० लोगों ने भाग लिया था।

ट्रस्ट में करीब १५ ट्रस्टी हैं जो नवी मुंबई के अलग-अलग क्षेत्र से चुने गए हैं, करीब ५०० परिवार नवी मुंबई से जुड़े हुए हैं।

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर सभी राजस्थान वासियों को हार्दिक शुभकामनायें

Ramratan Bhutra
Chairman
R R GROUP
Ramratan Bhutra Enterprise
Textiles • Laminates • Power
Corporate Office :
A/210, 2nd Floor, India Textile Market, Ring Road,
Surat, Gujarat, Bharat-395002
Ph.: +91 261 2326303, 2327929 e-mail : rrbhutra0707@gmail.com

फल योग कार्यकारिणी बैठक

रायपुर-छत्तीसगढ़: अखिल भारतवर्षीय महेश्वरी महिला संगठन की द्वादश सत्र की तृतीय कार्यकारिणी बैठक एवं अवॉर्ड सेरेमनी छत्तीसगढ़ प्रदेशिक माहेश्वरी महिला संगठन के आयोजकत्व में दिनांक २- ३ मार्च २०२३ को रायपुर में स्थित माहेश्वरी भवन में सफलतापूर्वक संपन्न हुई। २ मार्च को प्रातः भगवान महेश की वंदना अर्चना के पश्चात अखिल भारतीय महिला सेवा ट्रस्ट की बैठक रखी गई थी जिसमें गत ३ वर्ष का लेखा-जोखा तथा संपूर्ण सत्र में बने ट्रस्टी, विशिष्ट ट्रस्टी, संरक्षक ट्रस्टी बहनों का अभिनंदन किया गया तथा आगामी सत्र हेतु इंदौर वासी श्रीमती ललिता मालपानी को अध्यक्ष तथा नागपुर वासी श्रीमती मीना सांवल को सेक्रेटरी घोषित किया गया।

उद्घाटन समारोह- छत्तीसगढ़ प्रदेश द्वारा छत्तीसगढ़ी भाषा एवं संस्कृति के अनुरूप स्वागत गीत व नृत्य द्वारा सभी का अभिनंदन सत्कार किया गया। प्रदेश मंत्री भावना राठी ने सुंदर शाब्दिक संचालन के साथ पदाधिकारियों को मंचासीन करवाया गया। उद्घाटनकर्ता राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती आशा महेश्वरी, मुख्य अतिथि राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती मंजू बांगड़, कार्यक्रम अध्यक्ष राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष ज्योति राठी, विशिष्ट अतिथि संगठन मंत्री शैला कलंत्री, निवर्तमान अध्यक्ष कल्पना गगरानी अति सम्माननीय अतिथि आदरणीय रतनी मां, सम्मानीय अतिथि महासभा कार्यालय मंत्री नारायण राठी, प्रदेश अध्यक्ष सुरेश मूंदड़ा की उपस्थिति मंच को चांद चांद लगा रही थी। सभी सम्मानीय राष्ट्रीय पदाधिकारीगण, मार्गदर्शक संरक्षक मंडल की सभी पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष बहनें लता लाहोटी, गीता मूंदड़ा, विमला साबू, शोभा सादानी विभिन्न अंचलों में विभिन्न प्रदेशों की विभूतियां, कार्यकारी मंडल के सभी सदस्यगण तथा आयोजक मंडल एवं रायपुर का महेश्वरी समाज इस बैठक को भव्यता प्रदान कर रहे थे। जिला अध्यक्ष शशि कला ने शाब्दिक उद्बोधन द्वारा अतिथियों का सम्मान किया। प्रदेश अध्यक्ष अमिता मूंदड़ा ने अपने स्वागत उद्बोधन में अपनी वाकपटुता शैली का अद्भुत परिचय दिया। समस्त अतिथियों ने आशीर्वचन व शुभकामना संदेश द्वारा संगठन के कार्यों की सराहना की। निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष कल्पना गगरानी ने महिला सशक्तिकरण पर प्रेरक वक्तव्य दिया। राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माहेश्वरी ने ३ वर्षीय कार्यकाल में हुए विशेष कार्यक्रमों के साथ-साथ पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं के सहयोग समर्पण की प्रशंसा की, जिनके बिना सत्र अभूतपूर्व नहीं बन सकता था। महामंत्री मंजू बांगड़ ने अपने मंजुल भाव से सभी बहनों में उर्जा का प्रादुर्भाव किया तथा द्वादश सत्र के सभी कार्यक्रमों का विवरण पीपीटी प्रेजेंटेशन द्वारा प्रस्तुत किया। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष ज्योति राठी ने शंखनाद कोटा अधिवेशन व सत्र के संपूर्ण आय-व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया। कार्यालय मंत्री मधु बाहेती ने स्मारिका सोपान की जानकारी दी। संगठन मंत्री शैला कलंत्री ने सत्र में बने नए संगठनों की जानकारी दी, इस अवसर पर छत्तीसगढ़ प्रदेश की झांकी श्रद्धाजी की जुबानी स्लाइड शो द्वारा प्रस्तुत की जो आकर्षण का केंद्र रही। आयोजक संस्था द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया।

द्वितीय सत्र जोश जुनून चकाचौंध से भरा सम्मान समारोह अवॉर्ड सेरेमनी किसी फिल्म फेयर अवॉर्ड फंक्शन से कम नहीं रहा, जिसका सूत्रसंचालन पूर्वांचल संयुक्त मंत्री श्रीमती गिरजा सहाड़ा ने बड़े मनोरंजन से भरपूर अंदाज में किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माहेश्वरी ने सभी प्रदेशों को सिल्वर गोल्ड डायमंड कैटेगरी से अलंकृत करते हुए प्रदेश के अध्यक्ष मंत्री कार्यसमिति को उनके विशेष कार्यों का उल्लेख करते हुए सम्मानित किया। सभी समिति प्रभारी आंचलिक सह प्रभारियों को गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज कराने हेतु बधाई देते हुए सम्मानित किया गया। पूर्व अध्यक्ष व संरक्षक मंडल परामर्शदाता बहनों को भी राष्ट्रीय मंच से सम्मानित किया गया। सभी केंद्रीय पदाधिकारियों महामंत्री मंजू बांगड़, कोषाध्यक्ष ज्योति राठी, संगठन मंत्री शैला कलंत्री एवं कार्यालय मंत्री मधु बाहेती को भी उनके अभूतपूर्व सहयोग का उल्लेख करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष ने सम्मानित किया। केंद्रीय पदाधिकारियों एवं पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष बहनों ने राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा महेश्वरी को सफल कार्यकाल के लिए बधाई देते हुए विशिष्ट अंदाज में अभिनंदन किया गया।

३ मार्च २०२३ को सभी प्रदेशों के नव चयनित अध्यक्ष व मंत्रियों का राष्ट्रीय मंच पर अभिनंदन किया गया। राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने आयोजक छत्तीसगढ़ प्रदेश एवं रायपुर के सभी पदाधिकारियों, टॉप टू **शेष पृष्ठ ४९ पर...**

पृष्ठ ४८ से... बॉटम टीम एवं समस्त कार्यकर्ताओं का उनकी सहभागिता हेतु सम्मानित किया गया, आयोजन से संबंधित सभी व्यवस्थाओं, आगमन से प्रस्थान तक, आवास से भोजन तक, सुंदर आतिथ्य, मन को छूने वाली मेहमान नवाजी सभी सम्मान जनक थी। राष्ट्रीय महिला संगठन के त्रयोदश सत्र के पदाधिकारियों एवं टीम की घोषणा राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा जी माहेश्वरी द्वारा सभी राष्ट्रीय पूर्व अध्यक्षों, अग्रज बहनों के सानिध्य में की गई जो कि इस प्रकार है:

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्रीमती मंजू बांगड़ (कानपुर)
राष्ट्रीय महामंत्री - श्रीमती ज्योति राठी (रायपुर)
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष - श्रीमती किरण लड्ढा (दिल्ली)
राष्ट्रीय संगठन मंत्री- श्रीमती ममता मोदानी (भीलवाड़ा)
पूर्वांचल उपाध्यक्ष -श्रीमती गिरिजा सारडा (नेपाल)
संयुक्त मंत्री- श्रीमती निशा लड्ढा (कोलकाता)
पश्चिमांचल उपाध्यक्ष - श्रीमती मधु बाहेती (कोटा)
संयुक्त मंत्री- श्रीमती शिखा भादादा (भीलवाड़ा)
मध्यांचल उपाध्यक्ष श्रीमती उर्मिला कलंत्री (अहमदाबाद)
संयुक्त मंत्री श्रीमती अनीता जावदिया (बनखेड़ी)
उत्तरांचल उपाध्यक्ष श्रीमती मंजू मानधना (दिल्ली)
संयुक्त मंत्री- श्रीमती मंजू हरकुट (मेरठ)
दक्षिणांचल उपाध्यक्ष - श्रीमती अनुसूया मालू (कोल्हापुर)
संयुक्त मंत्री श्रीमती रेनू सारडा (हैदराबाद)

नवनिर्वाचित टीम के सभी पदाधिकारियों का बड़े हर्षोल्लास से सदन में स्वागत व अभिनंदन हुआ। नव सत्र के अध्यक्ष एवं महामंत्री के परिवारजनो की उपस्थिति ने इस अवसर पर विशेष आकर्षण का केंद्र रही। नव चयनित अध्यक्ष श्रीमती मंजू जी द्वारा बहुत ही हृदय ग्राही उद्बोधन देते हुए सभी का आभार व्यक्त किया गया तथा सभी के सहयोग की कामना करते हुए आगामी सत्र को मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के जीवन को आधार बनाते हुए राममय सत्र की परिकल्पना का विचार प्रस्तुत किया गया जो कि इस प्रकार है

प्रविसि नगर कीजे सब काजा !
हृदय राखि कोसलपुर राजा !!

रामायण की इसी चौपाई के साथ अपनी वाणी को विराम दिया गया और जय उमा महेश से सभागार कई बार गुंजायमान होता रहा।

दक्षिण कलकत्ता माहेश्वरी सभा का 'होली प्रीति सम्मेलन' का कार्यक्रम सम्पन्न

दक्षिण कलकत्ता माहेश्वरी सभा एवम दक्षिण कोलकाता युवा माहेश्वरी संगठन के तत्वाधान से 'होली प्रीति सम्मेलन' का कार्यक्रम ४ मार्च २०२३ को संपन्न हुआ।

गायिका गंगा पचिसिया ने अपने मधुर आवाज से उपस्थित लोगों को मंत्रमुग्ध किया और सदस्यों ने नृत्य करके होली के गीतों का उत्साहपूर्वक आनंद लिया।

जगदीश चंद्र मुंधड़ा, बल्लभ भूतड़ा, नंद कुमार लड्ढा, श्याम काबरा, रमेश भैया, श्याम सुंदर राठी, दिनेश कुमार, मंजू पेरीवाल, संपत मांधाना, बेनी गोपाल जाजू, मोहन लाल मोहता, मुरली मोहन तापरिया, रमेश झवर, अलकेश बजाज, केशव डागा, राजीव लखोटिया, ऋषभ माहेश्वरी, आलोक राठी, आशीष मालपानी आदि गणमान्य लोगों से सभागार भरा हुआ था।

कार्यक्रम को सफल बनाने में राजेश नागोरी, अनिल लखोटिया, दीन दयाल जाजू, मुरली मनोहर मांधना, अरुण गगड़, भगवती प्रसाद मुंधड़ा, हरीश जाजू, अभय सोमानी, सूरज नागोरी, कृष्ण गोपाल मांधना, पुनीत गगड़, देवेश नागोरी, अमृतांशु मांधना, कृष्णकांत मांधना, हर्षित धूत, युवराज काबरा, नरेंद्र मांधना, रघुनाथ बलदेवा, आनंद मुंधड़ा, रमेश चांडक, प्रवीण गगड़, दिलीप लाहोटी, कैलाशचंद दुजारी, किशन गोपाल राठी आदि समाज प्रेमियों का पूरा सहयोग रहा।

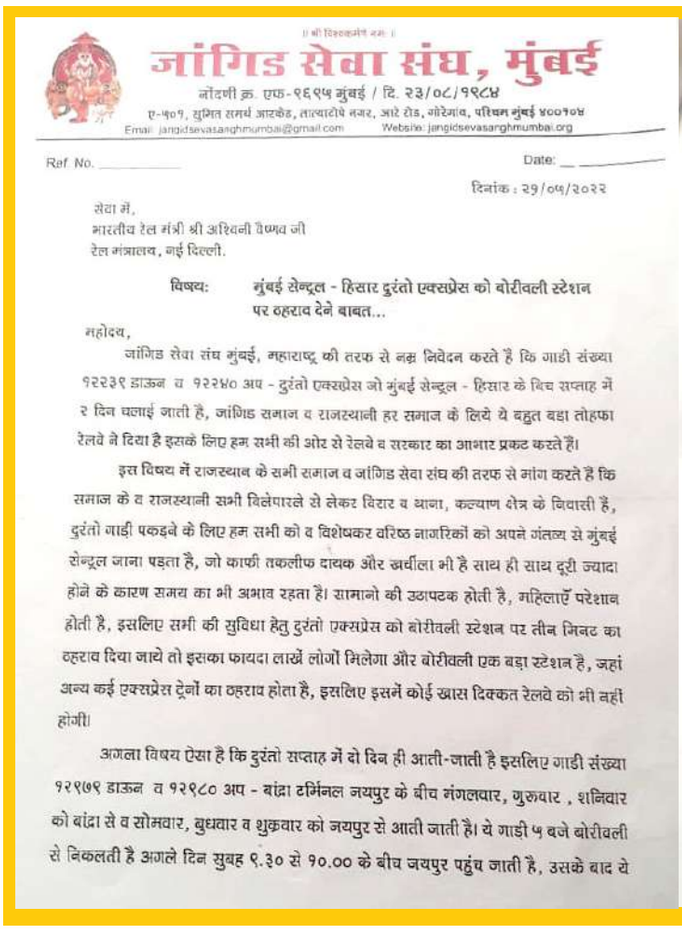

॥ श्री विश्वकर्मणे नमः ॥

जांगिड सेवा संघ, मुंबई

नोंदणी क्र. एफ-९६९५ मुंबई / दि. २३/०८/१९८४

ए-५०१, सुमित समर्थ आरकेड, तात्याटोपे नगर, आरे रोड, गोरेगांव, पश्चिम मुंबई ४००१०४

Email: jangidsevasanghmumbai@gmail.com Website: jangidsevasanghmumbai.org

Ref. No. _____ Date: _____

दिनांक : २१/०५/२०२२

सेवा में,
भारतीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव जी
रेल मंत्रालय, नई दिल्ली.

विषय: मुंबई सेन्ट्रल - हिसार दुरंतो एक्सप्रेस को बोरीवली स्टेशन पर ठहराव देने बाबत...

महोदय,

जांगिड सेवा संघ मुंबई, महाराष्ट्र की तरफ से नम्र निवेदन करते है कि गाडी संख्या १२२३९ डाऊन व १२२४० अप - दुरंतो एक्सप्रेस जो मुंबई सेन्ट्रल - हिसार के बिच सप्ताह में २ दिन चलाई जाती है, जांगिड समाज व राजस्थानी हर समाज के लिये ये बहुत बडा तोहफा रेलवे ने दिया है इसके लिए हम सभी की ओर से रेलवे व सरकार का आभार प्रकट करते हैं।

इस विषय में राजस्थान के सभी समाज व जांगिड सेवा संघ की तरफ से मांग करते है कि समाज के व राजस्थानी सभी विलेपारले से लेकर विरार व थाना, कल्याण क्षेत्र के निवासी हैं, दुरंतो गाडी पकडने के लिए हम सभी को व विशेषकर वरिष्ठ नागरिकों को अपने गंतव्य से मुंबई सेन्ट्रल जाना पड़ता है, जो काफी तकलीफ दायक और खर्चीला भी है साथ ही साथ दूरी ज्यादा होने के कारण समय का भी अभाव रहता है। सामानो की उठापटक होती है, महिलाएँ परेशान होती है, इसलिए सभी की सुविधा हेतु दुरंतो एक्सप्रेस को बोरीवली स्टेशन पर तीन मिनट का ठहराव दिया जाये तो इसका फायदा लाखें लोगों मिलेगा और बोरीवली एक बड़ा स्टेशन है, जहां अन्य कई एक्सप्रेस ट्रेनों का ठहराव होता है, इसलिए इसमें कोई खास दिक्कत रेलवे को भी नहीं होगी।

अगला विषय ऐसा है कि दुरंतो सप्ताह में दो दिन ही आती-जाती है इसलिए गाडी संख्या १२९७९ डाऊन व १२९८० अप - बांद्रा टर्मिनल जयपुर के बीच मंगलवार, गुरुवार , शनिवार को बांद्रा से व सोमवार, बुधवार व शुक्रवार को जयपुर से आती जाती है। ये गाडी ५ बजे बोरीवली से निकलती है अगले दिन सुबह ९.३० से १०.०० के बीच जयपुर पहुंच जाती है, उसके बाद ये

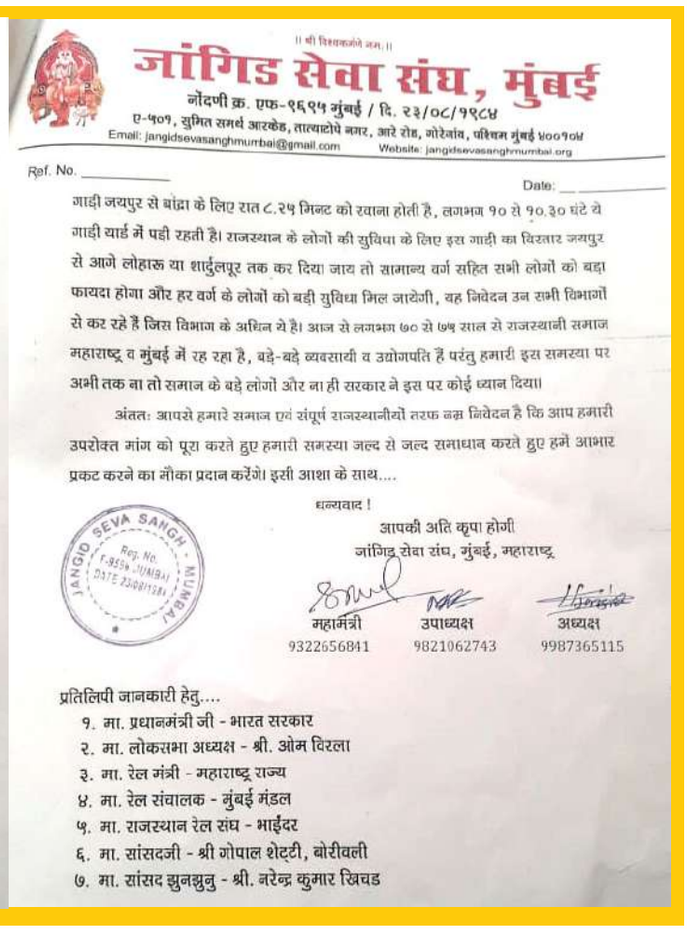

॥ श्री विश्वकर्मणे नमः ॥

जांगिड सेवा संघ, मुंबई

नोंदणी क्र. एफ-९६९५ मुंबई / दि. २३/०८/१९८४

ए-५०१, सुमित समर्थ आरकेड, तात्याटोपे नगर, आरे रोड, गोरेगांव, पश्चिम मुंबई ४००१०४

Email: jangidsevasanghmumbai@gmail.com Website: jangidsevasanghmumbai.org

Ref. No. _____ Date: _____

गाडी जयपुर से बांद्रा के लिए रात ८.२५ मिनट को रवाना होती है, लगभग १० से १०.३० घंटे ये गाडी यार्ड में पडी रहती है। राजस्थान के लोगों की सुविधा के लिए इस गाडी का विस्तार जयपुर से आगे लोहारू या शार्दुलपूर तक कर दिया जाय तो सामान्य वर्ग सहित सभी लोगों को बड़ा फायदा होगा और हर वर्ग के लोगों को बड़ी सुविधा मिल जायेगी, यह निवेदन उन सभी विभागों से कर रहे हैं जिस विभाग के अधिन ये है। आज से लगभग ७० से ७५ साल से राजस्थानी समाज महाराष्ट्र व मुंबई में रह रहा है, बड़े-बड़े व्यवसायी व उद्योगपति हैं परंतु हमारी इस समस्या पर अभी तक ना तो समाज के बड़े लोगों और ना ही सरकार ने इस पर कोई ध्यान दिया।

अंततः आपसे हमारे समाज एवं संपूर्ण राजस्थानीयों तरफ नम्र निवेदन है कि आप हमारी उपरोक्त मांग को पूरा करते हुए हमारी समस्या जल्द से जल्द समाधान करते हुए हमें आभार प्रकट करने का मौका प्रदान करेंगे। इसी आशा के साथ....

धन्यवाद !

आपकी अति कृपा होगी
जांगिड सेवा संघ, मुंबई, महाराष्ट्र

JANGID SEVA SANGH MUMBAI Reg. No. F.9695 MUMBAI DATE 23/08/1984

महामंत्री	उपाध्यक्ष	अध्यक्ष
9322656841	9821062743	9987365115

प्रतिलिपी जानकारी हेतु....

१. मा. प्रधानमंत्री जी - भारत सरकार
२. मा. लोकसभा अध्यक्ष - श्री. ओम विरला
३. मा. रेल मंत्री - महाराष्ट्र राज्य
४. मा. रेल संचालक - मुंबई मंडल
५. मा. राजस्थान रेल संघ - भाईंदर
६. मा. सांसदजी - श्री गोपाल शेट्टी, बोरीवली
७. मा. सांसद झुनझुनु - श्री. नरेन्द्र कुमार खिचड

जय भारत! आपणों राजस्थान

दीपक कुमार लखोटिया
उपाध्यक्ष माहेश्वरी सभा कोच्चि
श्री डूंगरगढ़ निवासी-दिल्ली प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८९५०१९४२०

दीपकजी 'राजस्थान स्थापना दिवस' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि राजस्थानी और राजस्थान यह नाम ही अपने आप में अलग और अद्भुत है, राजस्थान की विशेषताओं का कोई जोड़ नहीं, इसीलिए विश्व भर से पर्यटक राजस्थान पर्यटन के लिए आते हैं। यहां की संस्कृति, यहां का वातावरण, यहां के लोगों में अपनापन, यहां भौगोलिक पर्यावरण में खो जाते हैं। राजस्थानी लोगों का 'भारत' के आर्थिक विकास में कहीं ना कहीं योगदान अवश्य रहता है, व्यापार में विश्वसनीयता का नाम है राजस्थानी, हर कोई व्यापार के लिए आसानी से राजस्थानीओं पर विश्वास कर लेता है और राजस्थानी इस पर १००% खरा उतरता है, इसमें कोई दो राय नहीं। भारत ही नहीं विश्व में हर स्थान में राजस्थानी लोग बसे हैं और अपने व्यापार व्यवसाय, सामाजिक कार्य और धार्मिक प्रवृत्ति के कारण अपनी एक अलग पहचान बना लेते हैं, विशेषकर राजस्थानी समाज सेवा में हमेशा ही अग्रसर रहता है। राजस्थान की रंग-बिरंगी संस्कृति, रीति रिवाज, तीज-त्योहारों को अपनाते हुए राजस्थानी निवासी जहां भी बसते हैं वहीं के अनुरूप ढल जाते हैं, साथ ही अपनी संस्कृति को भी पूरी निष्ठा से अपनाते हैं, इसीलिए मुझे गर्व है कि मैं राजस्थानी हूं।
'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश की पहचान सिर्फ 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए, इंडिया शब्द का कोई अर्थ नहीं, इसका अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार होना चाहिए।
दीपकजी मूलतः राजस्थान के बीकानेर जिले में स्थित 'श्रीडूंगरगढ़' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'श्रीडूंगरगढ़' में ही संपन्न हुई है। २००८ से आप केरल के कोच्चि में बसे रहे और कंप्यूटर पार्ट्स के व्यवसाय से जुड़े रहे। पिछले २ वर्षों से आप दिल्ली में बसे हुए हैं। मारवाड़ी सम्मेलन केरल कोच्चि के सचिव रहे हैं, माहेश्वरी सभा कोच्चि के उपाध्यक्ष के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत!

लक्ष्मी नारायण भट्टड़
अध्यक्ष माहेश्वरी सभा कलीकट
जैसलमेर निवासी-कलीकट प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४४७१००९६७

लक्ष्मीनारायणजी 'राजस्थान स्थापना दिवस' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि राजस्थान की धरती धर्म रक्षक, मातृ सेवक व शुरवीर राजाओं का जन्म स्थान है, यह धरती दानवीर और राजपूतों से अछूती नहीं है। विभिन्न दानदाताओं, गौ रक्षकों की कथा से राजस्थान का इतिहास भरा हुआ है। राजस्थान की माटी में प्रकार के असीम गुण समाए हुए हैं। हमारे संस्कार को न केवल राजस्थान के लिए बल्कि संपूर्ण जनमानस की सेवा में समर्पित है। राजस्थान रंग-बिरंगी संस्कृति, प्राकृतिक वातावरण, बोली भाषा, इतिहास हर किसी को प्रभावित किए बिना नहीं रह सकता। राजस्थान पर्यटन के लिए विशेष रूप से जाना जाता है, विशेषकर यहां नवंबर से जनवरी तक का महीना बहुत ही उत्तम रहता है, इसलिए इस समय पर्यटकों का आना-जाना बहुत ही अधिक रहता है। जैसलमेर में लगने वाला 'मरू मेला' की बात ही निराली है। राजस्थानी जहां भी रहते हैं, एक दूसरे से जुड़े रहते हैं, साथ ही राजस्थानी कला संस्कृति, रीति-रिवाजों और तीज-त्यौहारों को बड़ी श्रद्धा से अपनाते हैं। राजस्थानी अपने कार्यों व समाज सेवा के माध्यम से अपना ही नहीं बल्कि अपनी धरती का भी नाम रोशन करते हैं। यहाँ अनेक मनमोहक, कलात्मक, आभूषण राजस्थान के प्राचीन साहित्य झरोखों में देखने को मिलते हैं। यहां के लोग बहुत ही मिलनसार व अपनत्व भाव वाले होते हैं, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'राजस्थान' की...
'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए। 'भारत' नाम चक्रवर्ती भरत राजा के नाम से पड़ा, इंडिया नाम तो अंग्रेजों ने थोपा है, जो उचित नहीं है, अपने देश का नाम 'भारत' था व 'भारत' ही रहना चाहिए।
लक्ष्मीनारायणजी मूलतः राजस्थान के जैसलमेर के निवासी हैं। आपका जन्म व शिक्षा 'जैसलमेर' में ही संपन्न हुई है। पिछले ३० वर्षों से आप कलीकट केरल में बसे हैं और कपड़ों के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। जैसलमेर व मारवाड़ी समाज की संस्थाओं से जुड़े हैं और माहेश्वरी सभा कलीकट के अध्यक्ष हैं। जय भारत!

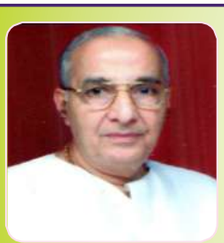

समस्त राजस्थानी समाज की एकमात्र पत्रिका 'मेरा राजस्थान' के सभी पाठकों को विश्वनाथ भरतिया परिवार की तरफ से राजस्थान स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए अब और इंडिया नहीं

ओमप्रकाश वैष्णव
व्यवसाई व समाजसेवी
पाली निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९७६९९७०९९५

ओमप्रकाशजी 'राजस्थान स्थापना दिवस' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि राजस्थान शक्ति और भक्ति के संगम का स्थान है। यहां महाराणा प्रताप की शक्ति भी है तो मीराबाई की भक्ति भी है। यहां के लोकगीत, लोकसंस्कृति, लोककला विश्व में विख्यात है, होली के उत्सव में गाया जाने वाला फाग गीत विशेष रूप से उल्लेखनीय है, इसके साथ ही 'गवरी (महादेव) पर्व' जिसे हम महादेव पर्व भी कहते हैं। आदिवासी समुदाय के लोग प्राचीन और परंपरागत वेशभूषा में इस पर्व को बड़े हर्षोल्लास से मनाते हैं। 'गणगौर' पर्व पूरे विश्व में राजस्थानी महिलाओं द्वारा मनाया जाने वाला विशेष पर्व है। 'राजस्थान' का खानपान वहां का प्राकृतिक वातावरण बहुत ही सुहावना है। राजस्थान के बारे में जितनी बात की जाए उतनी कम है। आज राजस्थान अपनी कई विशेषताओं के लिए जाना जाता है। शादी-ब्याह में लगने वाले परिवार के जमावड़े रीति-रिवाज उस समय एक अलग ही आनंद देते हैं जो शायद ही अन्यत्र कहीं होता होगा, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'राजस्थान' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए। चक्रवर्ती सम्राट भरत के नाम से इस देश का नाम 'भारत' पड़ा है।

ओमप्रकाशजी मूलतः राजस्थान के पाली जिले में स्थित 'कोट सोलकीयान' के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, पिछले ४० वर्षों से आप मुंबई में बसे हैं और हार्डवेयर के व्यवसाय से जुड़े हैं। मुंबई स्थित वैष्णव बैरागी संस्था के कार्यकारिणी सदस्य हैं और थाने जिला के अध्यक्ष भी रहे हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत!

द्वारकादास मंत्री
जिला अध्यक्ष लातूर जिला अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन
लातूर निवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२३१४२४७९

द्वारकादासजी 'राजस्थान स्थापना दिवस' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'आ तो सुरगा ने सरमावै ई पर देव रमण ने आवे'।

'राजस्थान' नाम ही अपने आप में एक पहचान है, एक ऐसी स्वर्णिम धरा जहां कई शूरवीरों और वीरांगनाओं ने जन्म लिया, यह संतों, महापुरुषों व समाजसेवियों, भामाशाहों की भूमि है। यह धरा प्रेम, त्याग की भूमि है। लोक कला, संस्कृति की अनूठी भूमि है हमारा 'राजस्थान'। राजस्थानी खानपान, रंग बिरंगी संस्कृति, बंधेज कला, घूमर नृत्य, गणगौर त्यौहार यहां की प्रमुख पहचान है। 'भारत' का एक राज्य 'राजस्थान' विश्व पटल पर अपनी एक अद्भुत पहचान लिए हुए है, इतिहास के पन्नों को अपनी माटी में संजोए हुए है। 'राजस्थान' के बारे में जितना कहा जाए उतना कम ही होगा इसकी विशेषताओं का कोई अंत नहीं। हम प्रवासी होते हुए भी आज भी राजस्थानी संस्कृति व कला से जुड़े हैं, रीति-रिवाजों से जुड़े हैं, भावी पीढ़ी को भी यही संदेश और देना चाहते हैं कि वह भी अपनी पैतृक भूमि और राजस्थान से जुड़े रहें, उसकी कला को और पहचान को जीवित रखें।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि हमारे देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत' चाहे भाषा कोई भी हो।

द्वारकादासजी मूलतः राजस्थान के निवासी हैं, आपका परिवार कई पीढ़ियों से महाराष्ट्र के लातूर जिले में स्थित 'सीताराम नगर' में बसा हुआ है। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, यहां आप रियल स्टेट व अन्य व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के लातूर जिले के अध्यक्ष के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। माहेश्वरी समाज से भी जुड़े हुए हैं अन्य कई संस्थानों में भी यथासंभव सक्रिय रहते हैं। जय भारत!

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर सभी राजस्थान वासियों को हार्दिक शुभकामनायें
Sunil C. Chandak
Mob: 9082948194
AARYA FINCORP
GENNEXT INVESTRADE
901, Lotus Trade Centre, New Link Road,
Next to Audi Showroom, Andheri West,
Mumbai, Maharashtra, Bharat-400053
e-mail:- gennextinvestrade@gmail.com

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर मेरा राजस्थान के पाठकों को हार्दिक शुभकामनायें
Laxmi Narayan Battad
Mob.:- 9447100967
Kamala Tex
Century Tower, 2Nd Floor,
Rajaji Road, Calicut,
Kozhikode, Kerala, Bharat -673004
Ph.:- 0495- 2727447/ 3042727

राजस्थानी भाषा को राजस्थान में सम्मान मिले

मुंबई: 'राजस्थानी' को संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान मिलना चाहिए और अन्य प्रांतीय भाषाओं की तरह उसका भी सम्मान होना चाहिए। यह कहना था गुजरात एवं मद्रास न्यायालय के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश डॉ. विनीत कोठारी का, आप 'राजस्थान रा हेतालू' की ओर से आयोजित एक कार्यक्रम में उपस्थित थे। राजस्थानी दिवस के मौके पर आयकर के बारे में लिखी गई पहली राजस्थानी पुस्तक का लोकार्पण किया गया था।

पुस्तक के लेखक राजेंद्र की 'आवकलाग अर लागदेणार' पुस्तक के बारे में कोठारी जी ने कहा कि यह पुस्तक राजस्थानी भाषा व बोली की क्षमता का एक प्रमाण है। आयकर-लेखन-इतिहास में यह दिन हमेशा याद रखा जाएगा। महिलाएं पीले वस्त्रों में और पुरूषों ने सिर पर साफा बांध कर अपनी उपस्थिति दी। भारतीय राजस्व सेवा के पूर्व अधिकारी और मुंबई के भूतपूर्व आयकर अपीलीय अधिकरण सदस्य राजेंद्र ने बताया कि राजस्थान कि समृद्ध भाषा की रेंज इतनी व्यापक है कि इसमें इनकम टैक्स पर २३ चैप्टर वाली यह किताब लिखी गई। यह लगभग २,००,००० शब्दों के शब्दकोष वाली राजस्थानी की क्षमता, प्रभावशीलता और सामर्थ्य का सबूत है।

कार्यक्रम में भूतपूर्व न्यायाधीश विजय एल. आंचलिया, पर्यटन मंत्री मंगल प्रभात लोढा, पूर्व विधायक राज के. पुरोहित, प्रशांत महर्षि, अभिनेता राहुल सिंह, गणपत कोठारी, आयकर, कस्टम और रेल विभाग के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

सोने री धरती जठै चांदी रो आसमान
रंगरंगीलो रस भरियो म्हारो प्यारो राजस्थान।
राजस्थान दिवस की हार्दिक बधाई
Compliments from :
Premchand Malu - Brijmohan Malu
Sunil Malu - Dr. Anand Malu - Rahul Malu - Jayesh Malu
Anupam Metal Industries
Anupam Marketing
A House of Industrial Supplies
Asian Distributors
Deals in : Kansai Nerolac & Asian Paints
Fort Road - Gulbarga-585 101 - Karnataka - Phone : 08472-278370
Fax : 08472-224071 - E-mail : ad.malupaints@gmail.com
Asian Plywoods
Deals in : All kinds of Plywood & Wood Surfaces - Hardware
LG 46-49 - Asian Business Centre - near VG Womens Hostel
Gulbarga-585 102 - Cell : 94481 90081 - E-mail : asianplyz@gmail.com
AUTHORISED STOCKISTS :
KANSAI NEROLAC PAINTS LIMITED
asianpaints
ador WELDING
ador FONTECH

'राजस्थान स्थापना दिवस' पर मेरा राजस्थान के पाठकों को हार्दिक शुभकामनायें
Ajanta PARTY HALL
MARRIAGE & PARTY HALL (FOR ALL OCCASION)

BORIVALI (WEST)
CAPACITY 25 TO 100 PERSON
GOREGAON (WEST)
CAPACITY 100 TO 500 PERSON
KITTY PARTY
BABY SHOWER
GET TOGETHER
ENGAGEMENT
CONFERENCE
MARRIAGE
BIRTHDAY
RECEPTION
NAMING CEREMONY
GOREGAON (WEST), TEL.: 28780878
BORIVALI (WEST), TEL.: 28064449
MOBILE :- 9820078319

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाना चाहिए

- बिजय कुमार जैन, वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक

सुप्रसिद्ध सामाजिक संस्था परोपकार द्वारा नानी बाई रो मायरो का मंचन

मीरा-भाईंदर: सामाजिक संस्था 'परोपकार' की ओर से भाईंदर पश्चिम में 'नानी बाई रो मायरो' नाटक का मंचन हुआ जिसका निर्देशन राजेश मंडलोई ने किया। कार्यक्रम के संयोजक ओमप्रकाश गाड़ोदिया के अनुसार यह नाटक नरसिंह मेहता की कृष्ण भक्ति और विश्वास पर आधारित है, इस दौरान संस्था अध्यक्ष शंकर केजरीवाल, समारोह के अध्यक्ष रमेश मेहता, मुख्य अतिथि विधायक गीता जैन, विशेष अतिथि पूर्व विधायक नरेंद्र मेहता, बीजेपी जिलाध्यक्ष रवि व्यास, कैलाश अग्रवाल, नरेश बंसल आदि उपस्थित थे। नटवर डागा ने आभार प्रकट किया।

५४ फीट हनुमानजी का दूध से महाकुंभाभिषेक

ठाणे-भिवंडी: वरालादेवी मंदिर परिसर के पास ५४ फीट ऊंची हनुमान जी की विशाल मूर्ति बनाई गई है, जहां हनुमान जयंती की तैयारी शुरू कर दी गई है, इसके तहत, श्रीहनुमान सेवा ट्रस्ट, विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल एवं माकण्डेय प्रखंड ने प्रतिमा का दूध से महाकुंभाभिषेक किया, जिसका आयोजन गुरू स्वामी कोडूरी मल्लेशम के नेतृत्व में पिछले ४ वर्ष से राकेश राणा कर रहे हैं।

श्रीराणा ने 'मेरा राजस्थान' को बताया कि यहां भक्त हनुमान दीक्षा पीठ है, जहां हनुमान जयंती के पहले भक्तों को हनुमान दीक्षा दी जाती है, इसके लिए नियमपूर्वक ४१ दिन यहां रहना पड़ता है। समय पूरा होने के बाद हनुमान जयंती पर माला वीरामन कराया जाता है, इस वर्ष ४० भक्त हैं, जिन्हें 'हनुमान दीक्षा' दी जाएगी।

हनुमान जयंती की तैयारियां शुरू

साल में ५ विशेष कार्यक्रम

मंदिर में साल में विशेष कार्यक्रम आयोजित होते हैं, इनमें हनुमान जयंती, महाशिवरात्रि, माताजी वर-लक्ष्मी की महारथ यात्रा, दूध से महाकुंभाभिषेक के साथ रामनवमी पर्व भी शामिल है।

सुख-शांति के लिए कुंभाभिषेक

गुरू स्वामी कोडूरी मल्लेशम ने 'मेरा राजस्थान' को कहा कि शहर के संकट को दूर करने एवं शहर के लोगों की सुख-शांति एवं मनोकामना पूर्ण होने के लिए प्रतिवर्ष चैत्र मास में प्रतिमा का दूध से महाकुंभाभिषेक किया जाता है।

जीणमाता के अलौकिक दरबार में मंगल पाठ का आयोजन

मुंबई: श्री जीणमाता प्रचार मंडल मुंबई की ओर से गोरेगांव में संस्था के चौदहवें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में राजस्थानी समाज की आराध्य देवी जीणमाता का अलौकिक दरबार सजाया गया। संस्था के अध्यक्ष नरेंद्र गुप्ता के अनुसार माता के अखंड ज्योत दर्शन, भजन, मंगल पाठ, जन्मोत्सव, चुनडी उत्सव का आयोजन किया गया। मंगलपाठ की प्रस्तुति मंगला पुरोहित ने की।

नीरज अग्रवाल ने भजन सुनाया और सहयोगियों ने नृत्य नाटिका का मंचन किया, इस अवसर पर ट्रस्टी विजय डोकानिया, नन्दू अग्रवाल, सांवल चंद अग्रवाल, सुरेश खंडेलिया, शंकर मित्तल, सीए विष्णु अग्रवाल, रमेश चंद अग्रवाल, प्रवीण मुकिम, प्रमोद सांगानेरिया, मुकेश डोकानिया, सनी अग्रवाल, समाजसेवी राजेन्द्र तुलस्यान सहित कई लोगों की उपस्थिति थी।

चित्तौड़ा युवा संघ का सामूहिक जन्मोत्सव सम्पन्न

मुंबई: दिगम्बर जैन चित्तौड़ा युवा संघ मुंबई के तत्वाधान में सामूहिक ढूंढोत्सव एवं होली स्नेह सम्मेलन २६ मार्च रविवार को आचार्य शांति सागर स्मारक ट्रस्ट त्रिमूर्ति पोदनपुर बोरीवली में आयोजित हुआ। प्रातः भगवान का महामस्तकाभिषेक, ढूंढ गोट के साथ सांस्कृतिक प्रोग्राम हुआ। मुख्य अतिथि भारत जैन महामंडल अध्यक्ष सी.सी. डांगी थे। पारितोषिक लाभार्थी गणेशलाल भगनावत, कालूलाल डुंगरियोत परिवार थे। आयोजन सफल बनाने संरक्षक राजेन्द्र गोटी, प्रमुख सलाहकार राजेश मल्लावत, अध्यक्ष अक्षय भगनावत, महामंत्री हितेश भामावत, मनोज गंगाराम जीयोत कोषाध्यक्ष निशांत गुडलिया, अंकित अदवासीया के साथ चित्तौड़ा युवा संघ मुंबई, सकल दिगम्बर जैन चित्तोड़ा मंडल एवं मुंबई समाज के पंचगण ने काफी मेहनत की।

पधारो म्हारे देश

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

मेरा राजस्थान

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए

राजस्थान का इतिहास पहुँचाए आपके हाथ

मात्र रु. १००/- में, प्रति महिना

सम्पादक
बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com

विशेष छूट

विज्ञापन देने पर पूरे साल 'मेरा राजस्थान' पत्रिका मुफ्त

वार्षिक शुल्क १,१११/-
आजीवन शुल्क ११,१११/-

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

Remove 'INDIA' Name From The Constitution

RNI No. MAHHIN/ 2003/11570
Postal Registration No. MCN/113/2022-2024
WPP License No. MR/Tech/WPP-246/North/2022-24
License to post without prepayment'
Published on 28/03/2023 & Posting on 30th of every previous Month
at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059.

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए संपादक, मुद्रक व प्रकाशक विजय कुमार जैन द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400093 से मुद्रित करवाकर बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059 से प्रकाशित किया गया, टेलीफैक्स-022-2850 9999
अणुडाक - mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना - www.merarajasthan.co.in